

जेठ - १

# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष ३०, अङ्क ३

२०७८, जेठ १-१५

पूर्णाङ्क ६९३



प्रकाशक

सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७२८, ४२००७२९, ४२००७५० Ext. २५११ (सम्पादन), २५१४ (छापाखाना), २९३१ (बिक्री)

फ्याक्स: ४२००७४९, पो.व.नं. २०४३८

Email: [info@supremecourt.gov.np](mailto:info@supremecourt.gov.np), Web: [www.supremecourt.gov.np](http://www.supremecourt.gov.np)

## सम्पादन तथा प्रकाशन समिति

|                                                                                      |              |
|--------------------------------------------------------------------------------------|--------------|
| माननीय न्यायाधीश श्री सपना प्रधान मल्ल, सर्वोच्च अदालत                               | - अध्यक्ष    |
| माननीय न्यायाधीश श्री हरिप्रसाद फुयाल, सर्वोच्च अदालत                                | - सदस्य      |
| मुख्य रजिस्ट्रार श्री लालबहादुर कुँवर, सर्वोच्च अदालत                                | - सदस्य      |
| नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पदमप्रसाद पाण्डेय, प्रतिनिधि, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय | - सदस्य      |
| रजिस्ट्रार श्री निर्मला पौडेल, सर्वोच्च अदालत                                        | - सदस्य      |
| अधिवक्ता श्री रुद्रप्रसाद पोखरेल, कोषाध्यक्ष, नेपाल बार एसोसिएसन                     | - सदस्य      |
| अधिवक्ता श्री ऋषिराम धिमिरे, सचिव, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन                       | - सदस्य      |
| प्रा.डा.विजय सिंह सिजापति, डिन, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय                  | - सदस्य      |
| सहरजिस्ट्रार श्री हरिराज कार्की, सर्वोच्च अदालत                                      | - सदस्य सचिव |

### सम्पादक : श्री ध्रुवकुमार ढकाल

#### सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू

शाखा अधिकृत श्री दिपक पोखरेल  
शाखा अधिकृत श्री चन्द्रमणि चापागाउँ  
शाखा अधिकृत श्री नरेश कार्की  
नायब सुब्बा श्री निरजकुमार ढुंगाना  
नायब सुब्बा श्री रुद्र आचार्य  
सिनियर प्रुफरिडर श्री रेशम शर्मा  
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी  
कम्प्युटर अपरेटर श्री मञ्जु खडका  
कार्यालय सहयोगी श्री अच्युत दाहाल

#### भाषाविद् : श्री रामचन्द्र फुयाल

#### बिक्री शाखा

नायब सुब्बा श्री निलदेव रिजाल

#### मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू

मुद्रण अधिकृत श्री कान्छा श्रेष्ठ  
मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल  
सिनियर हेल्पर श्री तुलसीनारायण महर्जन  
नायब सुब्बा श्री शिवहरि अधिकारी  
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल  
सिनियर बुकबाइन्डर श्री रत्नमाया महर्जन  
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी  
सहायक डिजायनर श्री रसना बज्राचार्य  
कम्पोजिटर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने  
सिनियर प्रेसम्यान श्री अर्जुन धिमिरे  
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला  
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी  
बुकबाइन्डर श्री धनमाया मानन्धर

#### विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा

#### प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू

|              |           |              |           |
|--------------|-----------|--------------|-----------|
| इजलास नं. १  | १२        | इजलास नं. १० | २         |
| इजलास नं. २  | २         | इजलास नं. ११ | ७         |
| इजलास नं. ३  | ३         | इजलास नं. १२ | ४         |
| इजलास नं. ४  | २         | इजलास नं. १४ | ५         |
| इजलास नं. ५  | ५         |              |           |
| इजलास नं. ६  | ५         |              |           |
| इजलास नं. ७  | ४         |              |           |
| इजलास नं. ८  | ६         |              |           |
| इजलास नं. ९  | ३         |              |           |
| <b>जम्मा</b> | <b>४२</b> | <b>जम्मा</b> | <b>१८</b> |

$$\text{कूल जम्मा } ४२ + १८ = ६०$$

# नेपाल कानून पत्रिका

मा प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि  
हालसम्म)

हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

**[www.nkp.gov.np](http://www.nkp.gov.np)**

मा जानुहोला ।

## खोज्ने तरिका

सर्वप्रथम **[www.nkp.gov.np](http://www.nkp.gov.np)** लगइन गरेपश्चात् गृहपृष्ठमा देखिने **शब्दबाट फैसला खोज्नुहोस्** भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गर्नुहोस् । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा वेबसाइटको दोस्रो शीर्षकमा रहेको **बृहत् खोज** खोलेर विभिन्न किसिमले फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त **नेकाप प्रत्येक वर्ष** र **हाम्रो बारेमा** समेत हेर्न सक्नुहुनेछ ।

यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्नेछः

सअ बुलेटिन, २०७८, ... - १ वा २, पृष्ठ ....

(साल) (महिना)

उदाहरणार्थः सअ बुलेटिन, २०७८, जेठ - २, पृष्ठ १

## सूचना

**"नेपाल कानून पत्रिका र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन" को "वार्षिक ग्राहक" बन्न चाहनेका लागि २०७६ वैशाख अङ्कदेखि वार्षिक ग्राहक बन्न पाउने गरी सम्पादन तथा प्रकाशन समितिले निर्णय गरेको हुँदा सम्बन्धित सबैको जानकारीका लागि यो सूचना प्रकाशन गरिएको छ ।**

समितिको निर्णयानुसार मूल्य समायोजन भई **नेपाल कानून पत्रिका रु.७५ र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन प्रति अङ्क रु.४०** कायम गरिएकोसमेत सबैलाई जानकारी गराइन्छ ।

सर्वोच्च अदालतबाट २०७५ सालमा प्रकाशित **नेपाल कानून पत्रिका अतिरिक्ताङ्क २०७१** सीमित मात्रामा रहेकाले आफ्नो प्रति सुरक्षित गर्न सम्बन्धित सबैको लागि जानकारी गराइन्छ ।

ने.का.प.को अतिरिक्ताङ्क २०७२ र २०७३ क्रमशः प्रकाशन हुँदै गरेको पनि जानकारीका लागि अनुरोध छ । साथै सर्वोच्च अदालतबाट नेपाल कानून पत्रिका संवैधानिक इजलास खण्डको छुट्टै प्रकाशन भएको जानकारी गराउन चाहन्छौं । यस वर्ष **वातावरणसँग सम्बन्धित फैसलाहरूको सङ्कालो, २०७६** पनि प्रकाशन भएकाले आफ्नो प्रति बेलैमा सुरक्षित गर्न सम्बन्धित सबैको लागि अनुरोध छ ।

मूल्य रु.४०।-

मुद्रक: सर्वोच्च अदालत, छापाखाना

विषयसूची

| क्र.सं.     | विषय                               | पक्ष / विपक्ष                                                                        | पृष्ठ   |
|-------------|------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| इजलास नं. १ |                                    |                                                                                      | १ – १९  |
| १.          | कर्तव्य ज्यान                      | नेपाल सरकार वि. पुरण माझी                                                            | १       |
| २.          | कर्तव्य ज्यान                      | नेपाल सरकार वि. श्यामबहादुर वि.क.                                                    | २       |
| ३.          | कर्तव्य ज्यान                      | नेपाल सरकार वि. पहलबहादुर वली                                                        | ४       |
| ४.          | आयकर                               | आन्तरिक राजस्व कार्यालय धरान, सुनसरी वि. ग्रामीण विकास विद्युत् सेवा केन्द्र, सुनसरी | ५       |
| ५.          | रोक्का फुकुवा दाखिल खारेज नामसारी  | शम्भुप्रसाद शर्मा वि. डा. हेमराज भण्डारीसमेत                                         | ६       |
| ६.          | अंश चलन                            | प्रेमकुमार श्रेष्ठसमेत वि. दिपक मकाजु श्रेष्ठ                                        | ६       |
| ७.          | कर्तव्य ज्यान                      | पवित्रा भण्डारीसमेत वि. नेपाल सरकार                                                  | ७       |
| ८.          | जबरजस्ती करणी                      | नेपाल सरकार वि. केशाङ्ग शेर्पा                                                       | ९       |
| ९.          | बहुविवाह                           | नेपाल सरकार वि. सुरेश खत्रीसमेत                                                      | १०      |
| १०.         | सम्पत्ति शुद्धीकरण (मनी लाउन्डरिङ) | नेपाल सरकार वि. विशाल वर्मा                                                          | १३      |
| ११.         | अपहरण, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार   | नेपाल सरकार वि. कमल प्रकाश वि.क. समेत                                                | १५      |
| १२.         | कर्तव्य ज्यान                      | नेपाल सरकार वि. भुपेन्द्रप्रसाद जोशीसमेत                                             | १८      |
| इजलास नं. २ |                                    |                                                                                      | १९ – २० |
| १३.         | निर्णय दर्ता बदर                   | प्रेमलाल कसाई वि. प्रेमबहादुर श्रेष्ठसमेत                                            | १९      |
| १४.         | गर्भपतन गराई कर्तव्य ज्यान         | नेपाल सरकार वि. गंगा अधिकारी                                                         | १९      |
| इजलास नं. ३ |                                    |                                                                                      | २० – २४ |
| १५.         | उत्प्रेषण / परमादेश                | गोविन्दप्रसाद खनाल वि. लोक सेवा आयोग, केन्द्रीय कार्यालयसमेत                         | २०      |
| १६.         | ज्यान मार्ने उद्योग                | नेपाल सरकार वि. अशोककुमार भन्ने निराजन खत्रीसमेत                                     | २१      |

|             |                                                     |                                                                                             |         |
|-------------|-----------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| १७.         | कर्तव्य ज्यान,<br>गर्भपतन                           | श्रीबेलास पोखरेलसमेत<br>वि. नेपाल सरकार                                                     | २३      |
| इजलास नं. ४ |                                                     |                                                                                             | २४ – २६ |
| १८.         | जबरजस्ती<br>करणी                                    | नेपाल सरकार वि.<br>अण्डर माइला भन्ने<br>नेबबहादुर खत्री                                     | २४      |
| १९.         | हालैदेखिको<br>बक्सपत्रको<br>लिखत दर्ता<br>बदर दर्ता | राजलाल महतो कोइरी<br>वि. गुन्जेश्वर सिंह                                                    | २५      |
| इजलास नं. ५ |                                                     |                                                                                             | २६ – ३० |
| २०.         | उत्प्रेषण                                           | राजनप्रसाद तिवारी वि.<br>प्रधानमन्त्री तथा<br>मन्त्रिपरिषद्को<br>कार्यालय,<br>सिंहदरबारसमेत | २६      |
| २१.         | लिखत दर्ता<br>बदर                                   | मोहर देवीसमेत वि.<br>विल्टु मण्डल                                                           | २७      |
| २२.         | नामसारी हक<br>कायम                                  | कृष्णबहादुर कार्की वि.<br>शिवराम कार्की                                                     | २८      |
| २३.         | दोहोरो लगत<br>कट्टासमेत                             | जगतमान शाक्य वि.<br>बुद्धरत्न शाक्यसमेत                                                     | २८      |

|             |                                         |                                                                                   |         |
|-------------|-----------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------|---------|
| इजलास नं. ६ |                                         |                                                                                   | ३० – ३५ |
| २४.         | कर्तव्य ज्यान                           | नेपाल सरकार वि.<br>कल्पना नकर्मी                                                  | ३०      |
| २५.         | जग्गा खिचोला                            | फुन्टबहादुर सार्की वि.<br>हिरे सार्की                                             | ३०      |
| २६.         | गोवध (चौपाया<br>गोरू काटी<br>मारेको)    | नेपाल सरकार वि.<br>मदनकुमार तामाङसमेत                                             | ३१      |
| २७.         | कर्तव्य ज्यान                           | प्रल्हाद खत्री वि. नेपाल<br>सरकार                                                 | ३७      |
| २८.         | सरकारी छाप<br>दस्तखत कितें              | दिपक खनाल वि.<br>नेपाल सरकार                                                      |         |
| इजलास नं. ७ |                                         |                                                                                   | ३५ – ४० |
| २९.         | उत्प्रेषण                               | डा. हरिशचन्द्र न्यौपाने<br>वि. नेपाल मेडिकल<br>काउन्सिल बाँसबारी,<br>काठमाडौँसमेत | ३५      |
| ३०.         | जबरजस्ती<br>करणी तथा<br>हाडनाता<br>करणी | बिमलकुमार राई वि.<br>नेपाल सरकार                                                  | ३६      |
| ३१.         | कर्तव्य<br>ज्यान                        | नेपाल सरकार वि.<br>लोकबहादुर कार्कीसमेत                                           | ३७      |

|             |                        |                                                                                                            |         |
|-------------|------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| ३२.         | काम कारबाही<br>बदर     | ध्रुवरुद्र कर्मचार्य वि.<br>रत्नमान श्रेष्ठसमेत                                                            | ३९      |
| इजलास नं. ८ |                        |                                                                                                            | ४० - ४६ |
| ३३.         | भ्रष्टाचार             | नेपाल सरकार वि. गीता<br>महतसमेत                                                                            | ४०      |
| ३४.         | उत्प्रेषण /<br>परमादेश | राजु चुहान वि.<br>मध्यक्षेत्रीय प्रहरी<br>कार्यालय, हेटौंडा,<br>मकवानपुरसमेत                               | ४२      |
| ३५.         | उत्प्रेषण /<br>परमादेश | विष्णुबहादुर थापा वि.<br>प्रहरी प्रधान कार्यालय<br>नक्साल काठमाडौंसमेत                                     | ४२      |
| ३६.         | उत्प्रेषण /<br>परमादेश | जैचन्द्र राय वि. नेपाल<br>सरकार सङ्घीय<br>मामिला तथा सामान्य<br>प्रशासन मन्त्रालय,<br>सिंहदरबार, काठमाडौं  | ४४      |
| ३७.         | उत्प्रेषण              | श्यामकुमार चौधरी वि.<br>नेपाल सरकार,<br>स्वास्थ्य तथा<br>जनसङ्ख्या मन्त्रालय,<br>रामशाहपथ,<br>काठमाडौंसमेत | ४५      |

|              |                                      |                                                                                           |         |
|--------------|--------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| इजलास नं. ९  |                                      |                                                                                           | ४६ - ५१ |
| ३८.          | उत्प्रेषण                            | सुबिर राई वि.<br>अख्तियार दुरुपयोग<br>अनुसन्धान आयोग<br>टंगाल, काठमाडौंसमेत               | ४६      |
| ३९.          | उत्प्रेषण /<br>परमादेश /<br>प्रतिषेध | गणेशबहादुर<br>अधिकारीसमेत वि.<br>टोखा नगरपालिका<br>कार्यालय, धापासी<br>हाइट, काठमाडौंसमेत | ४८      |
| इजलास नं. १० |                                      |                                                                                           | ५१ - ५३ |
| ४०.          | लागु औषध<br>(हेरोइन)                 | नेपाल सरकार वि.<br>मोहनकुमार<br>दर्लामीसमेत                                               | ५१      |
| ४१.          | लागु औषध<br>(ब्राउनसुगर)             | नेपाल सरकार वि.<br>चिरणजिवी शाहीसमेत                                                      | ५२      |
| इजलास नं. ११ |                                      |                                                                                           | ५३ - ६० |
| ४२.          | हक कायम<br>जग्गा खिचोला<br>चलन       | अजयकुमार साहसमेत<br>वि. मिश्री पण्डित<br>कुम्हार                                          | ५३      |
| ४३.          | ठगी                                  | नेपाल सरकार वि.<br>टेकराज श्रेष्ठसमेत                                                     | ५५      |

|              |                                    |                                                                     |         |
|--------------|------------------------------------|---------------------------------------------------------------------|---------|
| ४४.          | ठगी                                | अरुणकुमार कोइराला<br>वि. नेपाल सरकार                                | ५८      |
| इजलास नं. १२ |                                    |                                                                     | ६० - ६६ |
| ४५.          | सरकारी छाप<br>दस्तखत कित्ते        | नेपाल सरकार वि.<br>कर्णबहादुर डाँगी                                 | ६०      |
| ४६.          | ठगी                                | नेपाल सरकार वि.<br>भवानीशंकर भन्ने<br>भवानीविक्रम<br>विश्वकर्मासमेत | ६२      |
| ४७.          | जग्गा कब्जा<br>खिचोला मेटाई<br>चलन | हुलास महतो वि.<br>हेमनारायण चौधरी                                   | ६४      |

|              |                        |                                              |         |
|--------------|------------------------|----------------------------------------------|---------|
| ४८.          | हक निखनाई<br>हकसफा     | ऋषिराम रेग्मी वि.<br>किरणराज शर्मा पौडेल     | ६५      |
| इजलास नं. १४ |                        |                                              | ६६ - ६८ |
| ४९.          | वैदेशिक<br>रोजगार कसुर | नेपाल सरकार वि.<br>छत्रबहादुर श्रेष्ठ        | ६६      |
| ५०.          | दल दर्ता<br>खारेज      | प्रेमबहादुर सिंह वि.<br>निर्वाचन आयोग, नेपाल | ६८      |



इजलास नं. १

१

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे, ०७४-RC-००५२, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. पुरण माझी

पुनरावेदक / प्रतिवादी पुरण माझीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा माछा बाँड्ने क्रममा भिमबहादुरसँग मेरो कुरा नमिली वादविवाद हुने क्रममा मैले भिमबहादुर माझीलाई दुई झापड हानेको र सोपश्चात् भिमबहादुर माझीले मलाई गाली गलौज तथा हातपातसमेत गर्न खोज्दा सोही बगरमा लाठी फेला पारी लाठीबाट समेत कुटपिट गर्दा खुमबहादुर राना र करण माझीले छुट्टाउन खोजेकोले निजहरूलाई गाली गरेपछि निजहरू छुट्टाउन आएनन् । सोही झगडा हुने क्रममा भिमबहादुर माझी केही घाइते भएपछि बगरबाट अन्दाजी एक किलो जतिको ढुङ्गा टिपी भिमबहादुर माझीको कञ्चटको भागमा हिराउँदा भिमबहादुर माझी भुइँमा पल्टिइसकेपछि निजलाई लात मुक्कासमेतले हिराउँदा हिराउँदै निजको मृत्यु भएको हो । भिमबहादुर माझी मरिसकेपछि करण माझी र खुमबहादुर रानालाई तिमीहरू खाल्टो खन्नमा सहयोग गर भनी निजहरू करण माझी र खुमबहादुर रानाको सहयोगमा सोही बगरमा खाल्टो खनी हामी तीन जना मिली भिमबहादुर माझीको लास खाल्टोमा पुरेपछि करण माझी र खुमबहादुर राना मलाई सोही ठाउँमा छोडी घरमा गएका हुन् भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ भने अदालतमा निज प्रतिवादीले मौकामा अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको बयानलाई समर्थन हुने गरी बयान गरेको पाइन्छ । सहअभियुक्तमध्येका प्रतिवादीहरू करणबहादुर माझी र खुमबहादुर रानाले मौकामा अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतमा समेत यी प्रतिवादीको सोही बयान बेहोरालाई समर्थन गरी बयान गरेको देखिँदा

प्रतिवादी पुरण माझीसमेतले अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतमा गरेको स्वीकारोक्तिलाई निजका विरुद्ध प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ९ बमोजिम प्रमाणमा लिन मिल्ने नै देखिने ।

जाहेरवाला सरस्वती माझीले अदालतमा समेत उपस्थित भई प्रतिवादीमध्येका पुरण माझीले माछाको विषयमा विवाद हुँदा आवेगमा आई पहिला लाठी र ढुंगाले हानी पिट्टेपछि अन्यले पनि पिटेर मारेपछि कालीगण्डकी नदीमा खाल्डो खनी गाडेका, सबै प्रतिवादीहरूले मिलेमतो गरी मारेको भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ । त्यसैगरी मृतकको शव परीक्षण गर्ने डाक्टर झपेन्द्र जि.सी.ले मृतक लासको परीक्षण मैले गरेको हो । लास सडिगलेको हुँदा शरीरमा धेरै भाग नभएको, शरीरका विभिन्न भागमा छाला च्यातिएको र टाउकोमा चोट लागेको हुँदा कुनै कडा वस्तुले हानेको वा ठोकिएको कारण मृत्यु भएको देखिन्छ भनी अदालतमा आई बकपत्र गरेको देखिँदा प्रतिवादी पुरण माझीको कर्तव्यबाट मृतक भिमबहादुर माझीको मृत्यु भएको तथ्य स्थापित हुन आउने ।

तसर्थ, प्रतिवादी पुरण माझीले अन्य सहप्रतिवादीहरू करण माझी, खुमबहादुर रानासमेत जना ४ भई कालीगण्डकी नदीमा माछा मार्न भनी गएकोमा २ वटा माछा मारिसकेपछि माछाको विषयमा मृतक भिमबहादुर माझीसँग झगडा भई भिमबहादुर माझीले गाली गलौज गरेको भनी सोही नदीको बगरमा रहेको लाठीले निज मृतकलाई प्रहार गरी घाइते बनाई बगरमा रहेको करिब १ किलोको ढुङ्गाले भिमबहादुरको टाउकोमा प्रहार गर्दा निज भिमबहादुर माझीको मृत्यु भएको, तथ्य निजको अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतसमक्ष गरेको साबिती बयान, सहप्रतिवादीहरू करण माझी र खुमबहादुर रानाले मौकामा र अदालतसमक्ष गरेको बयान, जाहेरवाला सरस्वती माझीको जाहेरी तथा अदालतमा गरेको बकपत्र, शव परीक्षण गर्ने डाक्टरको बकपत्र, घटनास्थल लास जाँच

प्रकृति मुचुल्कासमेतका आधार प्रमाणबाट समर्थित हुन आएको देखिँदा प्रतिवादी पुरण माझीलाई अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ नं. तथा १३(३) नं. बमोजिमको कसुर अपराधमा ऐ. महलको १३(३) बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट भएको फैसला मिलेकै देखिने ।

प्रतिवादीले अनुसन्धानको क्रममा मौकामा र अदालतमा आफूउपरको अभियोग दाबीबमोजिमको आरोपित कसुरमा साबित भई मृतक भिमबहादुर माझीलाई माछाको विषयमा भएको झगडामा तत्काल उठेको रिस थाम्न नसकी कालिगण्डकी नदी किनारमा रहेको लाठी, ढुङ्गा, मुक्कासमेतले प्रहार गरी मारेको भनी साबित भई बयान गरेको देखिन्छ । सहप्रतिवादीहरु करणबहादुर माझी र खुमबहादुर रानासमेतले गरिदिएको सोही बेहोराको बयान, जाहेरी दरखास्तसमेतबाट मृतक भिमबहादुर माझीलाई मार्नुपर्नेसम्मको कुनै पूर्वरिसइवी रहेको देखिँदैन । मृतक र प्रतिवादीसमेतले सँगै रक्सी खाई माछा मार्न गएका र माछा मार्ने क्रममा माछाको विषयमा तत्काल झगडा हुँदा आवेशमा आई प्रतिवादी पुरण माझीले लाठी ढुङ्गा प्रहार गरी प्रस्तुत घटना वारदात घटित भएको देखिन्छ । कुनै संगीन हातहतियारले प्रहार गरेको देखिँदैन । निज प्रतिवादीले मौकामा र अदालतमा समेत कसुरमा साबिती रही बयान गरी अदालतको न्यायिक प्रक्रियामा सहयोगसमेत गरेको देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा प्रतिवादी पुरण माझीलाई अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ नं. तथा १३(३) बमोजिमको कसुर अपराधमा ऐ. महलको १३(३) बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्दा चर्को पर्ने देखिँदा मुलुकी ऐन अ.ब. १८८ नं. बमोजिम १० (दश) वर्ष कैदको सजाय हुन मनासिब हुने भनी पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट व्यक्त भएको राय मिलेकै देखिँदा अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

अतः माथि विवेचित आधार, कारण र प्रमाणसमेतबाट प्रतिवादी पुरण माझीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३ नं. को कसुरमा सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको १८८ नं. बमोजिम १०(दश) वर्ष कैद गर्न व्यक्त गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०७३।०४।१४ मा भएको रायसहितको फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : कोशलेश्वर ज्ञवाली

कम्प्युटर: अभिषेककुमार राय

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २५ गते रोज ३ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे, २०७४-RC-००६३, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. श्यामबहादुर वि.क.**

पुनरावेदक / प्रतिवादी श्यामबहादुर वि.क.ले अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतसमक्ष बयान गर्दासमेत मैले भारतमा मजदुरी गर्ने गरेको र घरमा आएको अवस्था मिति २०७३/१/३ गते साँझ ऋणको सम्बन्धमा श्रीमती र मेरो बिचमा विवाद भएपछि लडाइँसमेत भएकोमा छोरा लिई निज श्रीमती कान्छी बुहारीको घरमा गएको र राति २/३ बजेतिर निज श्रीमती घरमा आई मलाई सिरक ओढाइदिएको थाहा पाएपछि म निद्राबाट ब्युँझी साँझ भएको झगडाको रिसइवीको कारण हात मुक्काले श्रीमतीलाई कुटपिट गरी चुन्नी र सिरकले मुख, घाँटी च्यापी अठ्याउँ । निज अचेत भई फुर्खा आँखा बनाएपछि मृत्यु भयो होला भनी चुन्नीले निजलाई बोकी पुनाराम पोख्रेलको खेतमा लगी फाली घरमा आई सुतेको हुँ भनी आफूले श्रीमतीलाई कर्तव्य गरी मारेको कसुरमा साबित भई बयान गरेको देखिँदा निजले गरेको अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतसमक्ष गरेको स्वीकारोक्तिलाई निजका विरुद्ध प्रमाणमा लिन मिल्ने नै देखिने ।

पुनरावेदक / प्रतिवादीउपर किटानी जाहेरी परी सो जाहेरीलाई समर्थन गरी जाहेरवालाले गरिदिएको बकपत्र, प्रतिवादी मौकामा र अदालतमा समेत आफूले श्रीमतीलाई कर्तव्य गरी मारेको तथ्यमा साबित रही गरेको बयान, “Asphyxia Due to smothering” भनी “subconjunctival, haemorrhage bruises on face, nose, neck are suggestive of smothering. hand position, bruises on elbow suggestive of struggle during death” भन्नेसमेत बेहोराको शव परीक्षण प्रतिवेदन, घटनास्थल लास जाँच प्रकृति मुचुल्कासमेतबाट वारदात हुनुपूर्वसमेत मृतक र प्रतिवादी दुवैजनाका बिचमा झगडा भनाभन भएको देखिएको र मृतकले आफ्नो छोरा लिई बुहारीको घरतर्फ गएको भन्ने देखिएको, श्रीमतीले राति प्रतिवादीलाई सिरक ओढाएको थाहा पाइसकेपछि साँझ भएको झगडाको रिसइवीका कारण लात मुक्काले कुटपिट गर्नुका साथै चुन्नी र सिरकसमेतले मुख घाँटी च्यापी मारेको भनी उल्लेख गरेको देखिएको, मानिस मारिसकेपछि पनि निज प्रतिवादीले आफ्नो अपराध लुकाउन लासलाई पुनाराम पोखरेलको खेतमा लगी फ्याँकेको र आफू घरमा आई सुतेको देखिएकोबाट निजले आरोपित कसुर गरेको प्रमाण कागजातहरूबाट समर्थित हुन आउने ।

पतिपत्नीको सम्बन्ध पूर्णतः माया, विश्वास र सम्मानमा अडेको हुन्छ र यसमा एउटाले अर्काको विरुद्धमा कुनै आपराधिक घटना घटाउन सक्ने परिकल्पनासमेत गरेको हुँदैन । पत्नीसँग कुनै कारणले बेमेल हुँदा संवेदनशील अङ्ग मुख थुनी घाँटी च्यापी विभत्स तरिकाले यातना दिई कर्तव्य गरी हत्या गर्नुपर्ने अवस्था र कारण हुँदैन । समानता तथा आत्म सम्मानका साथ बाँच्न पाउने मानिसको नैसर्गिक अधिकार हो । कुनै पनि बहानाबाजी, कारण, अवस्था वा परिस्थितिले पनि सो अधिकार हनन हुनु हुँदैन । आफ्नो संरक्षकत्वमा रहेकी, आफूले सदैव रक्षा

गर्नुपर्ने पत्नीलाई कुटपिट गरी चुन्नी र सिरकले मुख र घाँटी च्यापी मारेको अवस्थामा निजलाई आवेशमा आई उक्त घटना घटेको भनी कम सजाय गरी सजाय घटाउने अवस्था र कारण हुँदैन । घर र पति जसबाट जहाँ आफू बढी सुरक्षित अनुभूति गर्दछन् सोही ठाउँमा सोही व्यक्तिबाट हत्या हुनु ज्यादै संवेदनशील र डरलाग्दो अवस्था पनि हो । यस्तोमा लोग्ने पीडक भएकै आधारमा सजाय घटाउँदा न्यायोचित नहुनुका साथै अपराध नियन्त्रण र रोकथाममा बाधकसमेत हुन सक्ने ।

वारदातमा लोग्ने स्वास्नीबिच झगडा भएको देखिएको, सो घटनाबाट सिर्जित रिसइवीलाई कार्यान्वयन गर्न राति श्रीमतीले आफूलाई लुगा ओढाउन लागेको मौका छोपी श्रीमतीको घाँटीसमेत च्यापी कर्तव्य गरी मारी लास लुकाउने प्रयाससमेत गरेको देखिएबाट मृतकलाई मार्ने मनसाय (Mens rea) राखेर सो आपराधिक कार्य (Acts rea) गरेको स्पष्ट देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा ज्यानसम्बन्धीको १४ नं. को कानूनी व्यवस्था पनि आकृष्ट हुने देखिँदैन । तसर्थ, मृतक राधिका वि.क. लाई प्रतिवादी श्यामबहादुर वि.क.ले कर्तव्य गरी मारी फालेको तथ्य स्थापित हुन आएको देखिँदा निजलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासबाट मिति २०७४।१।१२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिने ।

अतः माथि विवेचित आधार, कारण र प्रमाणसमेतबाट प्रतिवादी श्यामबहादुर वि.क.लाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. र १३ नं. को कसुरमा सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई सुरु अर्घाखाँची जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३/५/२३ मा भएको फैसला सदर गरेको उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासबाट मिति २०७४।१।१२ मा भएको फैसला

मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः कोशलेश्वर झवाली

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २५ गते रोज ३ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे, २०७४-RC-००९१, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. पहलबहादुर वली**

प्रतिवादीले अदालत तथा मौकामा अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा मिति २०६७।७।२१ गते बिहान म आफ्नो दिदी बहिनीसँग भाइ टिका लगाएर घरमा नै बसेको थिएँ । दिउँसो भएपछि म बाख्रालाई डालेघाँस काट्न आफ्नै बारीमा घाँस काटी घरमा आउँदा उक्त समयमा दिउँसोको ४ बजेको थियो, मैले डालेघाँसको भारी आँगनमा फाल्ने बित्तिकै कताबाट हो मेरो तुलो बुबाको छोरा विरजित वली मेरा सामुन्ने आइपुगे र मलाई तैले तेरो छोरा बुहारीको चप्पल किन जलाइस् भनी मसँग विवाद गर्न थालेपछि मैले जलाएको छैन, अनावश्यक विवाद नगर भनेर भन्दै थिएँ, निजले मलाई एक्कासी गालामा हानेपछि मलाई पनि रिस उठ्यो र मैले आँगनबाट निजलाई घच्ट्दै घरभित्र गाई बाख्रा बाँध्ने कोठामा लगेर कोठाभित्र बाख्रा बाँध्ने बाँसको किलो उखलेर निज विरजित वलीको टाउकोमा ४ पटकजति हानेपछि निज भुइँमा ढले, टाउकोबाट रगत बगेको थियो र निजको उक्त कोठामा मृत्यु भएपछि म त्यहाँबाट भागेर गएको हुँ भनी आरोपित कसुरमा साबित रही बयान गरेको पाइन्छ । मृत्युको कारणमा “Severe Hemorrhage Following Head Injury” भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ । मृतक लासको निधारको तालुमा २ इन्च लामो काटेको घाउलगायत मृतकको शरीरमा विभिन्न घाउ चोटहरू लागेको घटनास्थल लास जाँच प्रकृति मुचुल्काबाट देखिँदा प्रतिवादीले मृतकलाई घचेड्दै गाई बाख्रा बाँध्ने कोठामा लगी त्यहाँ भएको बाँसको किलाले मृतकको टाउकोमा प्रहार गरी सोही चोटको

कारण मृत्यु भएको तथ्य स्थापित हुन आउने ।

मृतक विरजित वलीको घरमा प्रतिवादी पहलबहादुर वली आई आफ्नो छोरा बुहारीको चप्पल किन जलाएको भनी विवाद निकाली प्रतिवादीको गालामा हानेपछि सोही रिसका कारण मृतकलाई प्रतिवादीले धकेल्दै घरभित्र लगी बाँसको किलाले टाउकोमा प्रहार गरेपछि सोही चोट पीडाबाट विरजित वलीको मृत्यु भएको भन्ने तथ्यलाई, सुरु जाहेरी दर्खास्त, Autopsy Report, घटनास्थल तथा लासजाँच प्रकृति मुचुल्का, प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतमा समेत आई गरेको तथ्ययुक्त साबिती बयानसमेतका मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट समर्थित हुन आएकोले प्रतिवादी पहलबहादुर वलीले मृतक विरजित वलीलाई बाँसको किलोले प्रहार गर्दा कर्तव्यबाट मृतकको मृत्यु भएको पुष्टि हुन आएको देखिँदा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. बमोजिम प्रतिवादीलाई सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत सुर्खेतबाट भएको फैसला मिलेकै देखिने ।

कुनै जोखिमी हातहतियारले प्रहार गरेको देखिँदैन । निज प्रतिवादीले मौकामा र अदालतमा समेत कसुरमा साबिती रही बयान गरी अदालतको न्यायिक प्रक्रियामा सहयोगसमेत गरेको देखिन्छ । मृतकलाई घातक जोखिम हातहतियारले प्रहार गरेको नभई आवेशमा सामान्य लाठा (बाँसको किलो) ले प्रहार गर्दा मृतकको मृत्यु हुन गएको परिस्थितिसमेतलाई विचार गर्दा प्रतिवादी पहलबहादुर वलीलाई अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ नं. र १३(३) नं. बमोजिमको कसुर अपराधमा ऐ. महलको १३(३) बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्दा चर्को पर्ने देखिँदा मुलुकी ऐन अ.ब. १८८ नं. बमोजिम १० (दश) वर्ष कैदको सजाय हुन मनासिब हुने भनी उच्च अदालत सुर्खेतबाट व्यक्ति भएको राय मिलेकै देखिने ।

अतः माथि विवेचित आधार, कारण र

प्रमाणसमेतबाट प्रतिवादी पहलबहादुर वलीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ नं. र १३ नं. को कसुरमा सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको १८८ नं. बमोजिम १०(दश) वर्ष कैद गर्न व्यक्त गरेको सुरु सल्यान जिल्ला अदालतबाट मिति २०६७।१२।०७ मा भएको रायसहितको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७४।०२।०४ मा भएको रायसहितको फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत : कोशलेश्वर ज्ञवाली

कम्प्युटर: अभिषेककुमार राय

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २५ गते रोज ३ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की**, ०७३-RB-००८०, आयकर (आ.व.०६४/०६५), आन्तरिक राजस्व कार्यालय धरान, सुनसरी वि. ग्रामीण विकास विद्युत् सेवा केन्द्र, सुनसरी

प्रत्यर्थी प्रतिवादीले आफू आयकर ऐन, २०५८ को दफा २ को खण्ड (घ) को कानूनी व्यवस्थाको परिधिभित्र रहेको कुन निकायअन्तर्गतको संस्था हो भनी तथ्ययुक्त जिकिर लिन सकेको नपाइएबाट उक्त सेवा केन्द्र कर छुट पाउने संस्थाको रूपमा दर्ता भएको हो भनी पुष्टि हुन सकेको देखिँदैन। यसका साथै कर छुट प्राप्त हुने संस्थाको रूपमा दर्ता भएको अवस्थामा समेत त्यस्ता संस्थाले आयआर्जन हुने व्यावसायिक कारोबार गरेमा कर छुट हुँदैन भनी सोही ऐनको दफा २ ध(७) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशमा उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाका आधारमा समेत यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी **ग्रामीण विद्युत् सेवा केन्द्र** कर छुट पाउने संस्थाको रूपमा दर्ता भएको भनी मान्न मिल्ने देखिन नआउने।

आयकर ऐन, २०५८ को दफा २१ मा "कट्टी

**गर्न नपाउने खर्च**" भनी सोही दफाको उपदफा (१) मा "यस ऐनमा अनुसूकै कुरा लेखिएको भए तापनि कुनै व्यक्तिलाई कुनै आय वर्षमा कुनै व्यवसाय, रोजगारी वा लगानीबाट भएको आय गणना गर्ने प्रयोजनको लागि देहायको खर्च वा रकम कट्टी गर्न पाइने छैन" भनी सोही उपदफाको खण्ड (ख) मा "यस ऐनबमोजिम बुझाउनुपर्ने कर र कुनै देशको सरकार तथा सोको कुनै पनि स्थानीय निकायलाई कुनै कानून वा सो कानूनअन्तर्गत बनेको कुनै नियम, विनियमको उल्लङ्घन गरेबापत बुझाइएको जरिवाना र यस्तै अन्य शुल्क" भन्ने उल्लेख भएको देखिएको हुँदा यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी ग्रामीण विद्युत् सेवा केन्द्रले विद्युत् प्राधिकरणमा बुझाउनुपर्ने शुल्कमा जरिवानाबापत तिरेको उक्त रकम रु.८,०८,४२९।०० को हकमा आ.व.०६४/६५ को लागि करयोग्य आयको रूपमा कायम गर्नुपर्ने देखिन आउने।

प्रत्यर्थी प्रतिवादी ग्रामीण विद्युत् सेवा केन्द्र कर छुट पाउने संस्थाको रूपमा दर्ता भएको नदेखिएको र उक्त केन्द्रले तिरे बुझाएको जरिवानालगायतका शुल्कमा खर्च रकम कट्टी गर्न नपाइने भनी उल्लेख भएको उक्त कानूनी व्यवस्थाकै आधारमा सो दाबीको आ.व. ०६४/६५ को आय रु.४,४४,४४६।- कायम गरी आयकर ऐन, २०५८ को दफा १०१ बमोजिम संशोधित कर निर्धारण गर्ने भनी आन्तरिक राजस्व कार्यालय, धरानको मिति २०६६।५।३१ को निर्णय मनासिब रहेको देखिएकोमा उक्त जरिवानाबापतको रकमलाई करयोग्य आयमा समावेश गर्न नपर्ने भनी राजस्व न्यायाधिकरण, विराटनगरबाट मिति २०६९।०७।२४ मा भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिएकोले सोही हदसम्मको उक्त फैसलामा सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, प्रत्यर्थी ग्रामीण विद्युत् सेवा केन्द्रले नेपाल विद्युत् प्राधिकरणलाई बुझाएको जरिवानाबापतको खर्च रकम रु.८,०८,४२९।- लाई

करयोग्य आयमा समावेश गर्ने भनी आन्तरिक राजस्व कार्यालय, धरानबाट मिति २०६६।७।१५ मा भएको निर्णय मनासिब रहेको देखिएकोमा उक्त निर्णय नमिलेको भनी उक्त रकम रु.८,०८,४२१।- करयोग्य आयमा समावेश हुन नसक्ने भनी मिन्हा दिने गरी राजस्व न्यायाधिकरण, विराटनगरबाट मिति २०६९।७।२४ मा भएको फैसला सोही हदसम्म मिलेको नदेखिँदा उक्त फैसला सोही हदसम्म उल्टी हुने।

इजलास अधिकृत: सुरथप्रसाद तिमल्सेना

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७४ साल असोज ३० गते रोज २ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की**, ०७१-CI-०८८८, रोक्का फुकुवा दाखिल खारेज नामसारी, शम्भुप्रसाद शर्मा वि. डा.हेमराज भण्डारीसमेत

राष्ट्रिय वाणिज्य बैंकको जुन पत्रको आधारमा दाखेल खारेज गर्न नमिल्ने भनी मालपोत कार्यालयको निर्णयमा निर्णयाधार बनाइएको छ त्यही पत्रमा नै उक्त कि.नं. ३०२ को जग्गा रोक्का राख्ने उल्लेख नभएको अवस्थामा मालपोत कार्यालयले उक्त जग्गा आराधना कुमारी साहको नाममा दाखेल खारेज गरिदिनुपर्नेमा सो नगरी रोक्का राखी दाखेल खारेज नगर्ने निर्णय गर्नु न्यायसङ्गत मान्न सकिँदैन। मालपोत कार्यालयबाट सो जग्गा रोक्का राख्न आवश्यक थियो भनी आधार र कारणसहित जग्गा रोक्का राखेको अवस्था पनि देखिँदैन। राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक, महाराजगन्ज शाखाको च.नं.३८८ मिति २०५७।०५।१५ को पत्रबाट कि.नं.२५७ रोक्का रहेको जग्गा, रोक्का रहेकै अवस्थामा २०६४।०१।२० गते र.नं.९८५४(क) को राजीनामाबाट रुद्रलाल बरालको नाउँमा राजीनामा पारित भएको आधारमा ऋणीको नाममा रहेका अन्य जग्गाहरू रोक्का राख्नु कानूनसङ्गत मान्न नमिल्ने।

मालपोत कार्यालय सुनसरीले कि.नं.२५७

को जग्गा रोक्का रहेकै अवस्थामा रोक्का भिडाउने कर्मचारीले रोक्का देखिँदैन भनी लेखी दिएको कारण उक्त जग्गा राजीनामा पारित भई गएको र राजीनामा पारित भइसकेपछि अर्कै प्रयोजनको लागि अर्कै संस्था (अरुण फाइनान्स) बाट धितोमा रहेको कि.नं. ३०२ को जग्गा पुन रोक्का गर्न मिल्ने देखिन आएन। कार्यालयले गरेको गल्तीले व्यक्तिको सम्पत्तिसम्बन्धी संविधान प्रदत्त मौलिक हक हनन हुन नसक्ने।

अतः उल्लिखित आधार एवं प्रमाणहरूबाट अरुण फाइनान्स लिमिटेडले कि.नं.३०२ को जग्गा धितो दृष्टि कर्जा चुक्ता नगरेबापत कानूनबमोजिम लिलाम बिक्री गरी आराधना कुमारी साहले सकार गरेको अवस्थामा उक्त जग्गा निजको नाउँमा दाखेल खारेज गर्नुपर्नेमा सो नगरी राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक शाखा कार्यालय, महाराजगन्जको मिति २०७०।०८।१७ को पत्रको आधारमा रोक्का राख्ने मालपोत कार्यालय, सुनसरीको मिति २०७०।१०।१० गतेको निर्णय कानूनसङ्गत नदेखिएको हुँदा उक्त निर्णय बदर हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट भएको मिति २०७१।०५।१५ गतेको फैसला मिलेकै हुँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: सुरथप्रसाद तिमल्सेना

कम्प्युटर: मिनु शाही

इति संवत् २०७४ साल आश्विन ३० गते रोज २ शुभम्।

६

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ**, ०७३-CI-०३८५, ०७३-CI-०४०३, अंश चलन, प्रेमकुमार श्रेष्ठसमेत वि. दिपक मकाजु श्रेष्ठ, दिपक मकाजु श्रेष्ठ वि. प्रेमकुमार श्रेष्ठसमेत

पुनरावेदक प्रतिवादी प्रेमकुमार श्रेष्ठ सगोलकै अवस्थामा विभिन्न स्थानमा गई व्यापार व्यवसाय गरेको देखिन्छ। प्रेमकुमार श्रेष्ठ बाबुको व्यापार भएको स्थान, उदयपुर कटारीबाट २०५४ सालपछि अन्यत्र

व्यापार गर्न गएको भनी निजको प्रतिउत्तर बेहोरामा उल्लेख गरिएको देखिन्छ । यसरी सगोलकै व्यापार व्यवसाय गरी आफ्ना बाबुसँग बसेका प्रेमकुमार श्रेष्ठले २०५२ सालमा काभ्रेमा आई रिझाउने र रिझबापतमा जग्गा पारित गर्ने भन्ने तथ्य मिल्दो देखिन आएन । लिखतको कैफियत बेहोरामा रिझबापत भन्ने बेहोरा उल्लेख गरेकै आधारमा मात्र उक्त लिखतलाई बकसपत्रको संज्ञा दिई अशियारहरुबिच अशबन्डा लाग्ने जग्गा होइन भनी अर्थ गर्न मिल्ने नदेखिएबाट उक्त कि.नं. २२८ को जग्गा बन्डा लाग्ने नै देखिने ।

प्रतिवादीमध्येकी उषाकुमारी श्रेष्ठको नाउँ दर्ताको कि.नं.९७६को जग्गा प्रतिवादी प्रेमकुमार श्रेष्ठले मिति २०६९।५।१५ गते राजीनामा पारित गरी शिवकुमारी श्रेष्ठलाई दिएको देखिन्छ । प्रतिवादी प्रेमकुमार श्रेष्ठबाट राजीनामा पारित गरी लिएको उक्त जग्गा शिवकुमारी श्रेष्ठले बकसपत्र दिई हाल उक्त जग्गा उषा श्रेष्ठको नाममा कायम रहेको देखिन्छ । उक्त मिति २०६९।५।१५ गते प्रेमकुमार श्रेष्ठले शिवकुमारी श्रेष्ठलाई पारित गरेको राजीनामाको लिखत बदर गरी पाउन छुट्टै लिखत बदर मुद्दा चलेको पुनरावेदन अदालतको फैसलाबाट देखिन्छ । उक्त लिखत बदर मुद्दामा सुरु उदयपुर जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला बदर भई पुनः निर्णयको लागि सुरुमा पठाउने भनी निर्णय गरेको देखिएकोले उक्त कि.नं. ९७६ को जग्गाको सम्बन्धमा सोही मुद्दामा सबुद प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी न्याय निरूपण हुने नै भएकोले सो जग्गा बन्डा लाग्ने गरी सुरु अदालतले गरेको फैसला सो हदसम्म केही उल्टी गरी प्रस्तुत मुद्दाबाट बन्डा नहुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत राजविराजको फैसला अन्यथा रहेछ भनी मान्न मिल्ने देखिएन । सो सम्बन्धमा वादीले लिएको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः माथि विवेचित आधार एवं कारणहरुबाट कि.नं. ९७६ को जग्गासमेत बन्डा लाग्ने गरी सुरु

उदयपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।१।२२ मा भएको फैसला केही उल्टी गरी उक्त कि.नं.९७६ को जग्गाबाहेक अरुमा सुरु अदालतबाट भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७२।१।११ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत :

कम्प्युटर : विनोदकुमार बनिया

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १ गते रोज ६ शुभम् ।

७

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७३-CR-०५२५, ०७३-CR-०६०१, कर्तव्य ज्यान, पवित्रा भण्डारी वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. पठे भन्ने चित्रबहादुर भण्डारीसमेत

पुनरावेदक प्रतिवादी पवित्रा भण्डारीले सुरुमा अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष मृतकसँग रातिको समयमा भेट गरेको भनी उल्लेख गरी बयान गरेको र अदालतमा समेत आफूले मृतकलाई कर्तव्य गरी मारेको भनी साबित रहेको देखिएको, निजको सो साबिती जाहेरी दरखास्त, जाहेरवाला कुम्बरनाथ योगीले अदालतसमक्ष गरेको बकपत्र, मौकामा कागज गर्ने भुवाने वि.क., दिनेश भण्डारी, नरनाथ योगी, धनमाया भण्डारीसमेतका व्यक्तिहरुले अदालतसमक्ष गरेको बकपत्रबाट समेत समर्थित भएको देखिँदा मृतक विष्णुनाथ योगीलाई कर्तव्य गरी मार्ने कार्यमा निज प्रतिवादी पवित्रा भण्डारीको प्रत्यक्ष संलग्नता रहेको देखिने ।

प्रतिवादी पवित्रा भण्डारीको मृतकसँग पहिलेदेखि चिनजान, भेटघाट भई टेलिफोनमा कुरासमेत हुने गरेको र वारदातको दिनसमेत जात्रामा भेट भएको भन्ने कुरा निज प्रतिवादीले मौकाको र अदालतसमक्षको बयानमा समेत स्वीकार गरेको देखिन्छ । निजले अदालतसमक्ष बयान गर्दा सो

वारदातको दिन जात्राबाट घर फर्किँदा बाटोमा मृतकले आफूलाई करणी गर्न खोजेकोले सतीत्व बचाउन मृतकको लिङ्ग समाती तान्दा मृत्यु भएको भने पनि निजले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा वारदातको दिन साँझ मृतकले फोन गरेपछि मृतकलाई भेट्न गएकोमा मृतकले आफ्नो गाला, जाँघ, कपालमा समेत समातेकोले सोबाट बच्न मृतकको लिङ्ग समाई तानेको भनी परस्पर विरोधाभाषयुक्त बेहोरा उल्लेख गरेको देखिन्छ । मृतकको पोष्टमार्टम रिपोर्टबाट समेत लिङ्ग समाई तानेको कारणबाट मृतकको मृत्यु भएको भन्ने निजको उक्त कथन पुष्टि हुन सकेको छैन । यसप्रकार मृतकले निज प्रतिवादीलाई जबरजस्ती करणी गर्न खोज्दा आफ्नो सतीत्व बचाउन निजले सोको प्रतिकार गर्ने क्रममा लिङ्ग समाई तानेको कारणबाट मृतकको मृत्यु भएको भन्ने कुरा विवादरहित रूपमा प्रमाणित हुन आएको नदेखिँदा जबरजस्ती करणीको महलको ८ नं. बमोजिम उन्मुक्ति पाउनुपर्दछ भनी निजले लिएको उक्त जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

जाहेरी दरखास्तमा यी प्रतिवादीहरू भरमबहादुर भण्डारी र पठे भन्ने चित्रबहादुर भण्डारीको नाम उल्लेख भएको देखिँदैन । प्रतिवादी पवित्रा भण्डारीले सुरुमा अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा यी प्रतिवादीहरूलाई पोल गरेको नदेखिई ततिम्बा बयान गर्दा मात्र निजहरूलाई पोल गरेको देखिन्छ । निज प्रतिवादीहरू अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतसमक्ष समेत मृतकलाई कर्तव्य गरी मारेको कुरामा इन्कार रहेका देखिन्छन् । प्रतिवादी पवित्रा भण्डारीले अदालतसमक्ष बयान गर्दा मृतकलाई मार्ने कार्यमा आफूबाहेक अरु कोही पनि संलग्न नरहेको भनी आफू कसुरमा साबित भई यी प्रतिवादीहरूलाई उन्मुक्ति दिई बयान गरेको देखिन्छ । वादी नेपाल सरकारले अन्य स्वतन्त्र प्रमाण पेस गरी यी प्रतिवादीको कसुर शंकारहित तवरबाट पुष्टि गर्न सकेको नदेखिँदासमेत

निज प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाई दिने गरी पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट भएको फैसला अन्यथा नदेखिँदा वादी नेपाल सरकारले निज प्रतिवादीहरूको हकमा लिएको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः माथि विवेचित आधार कारणबाट प्रतिवादी पवित्रा भण्डारीलाई अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने र प्रतिवादीहरू भरमबहादुर भण्डारी र पठे भन्ने चित्रबहादुर भण्डारीले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहर्‍याई सुरु दैलेख जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।११।३० मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत सुर्खेतको मिति २०७३।३।२९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । प्रतिवादी पवित्रा भण्डारी र वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

प्रतिवादी पवित्रा भण्डारीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहरे पनि निज प्रतिवादी र मृतक विष्णुनाथ योगीबिच पहिलेदेखि चिनजान, भेटघाट हुने तथा टेलिफोनमा कुरासमेत हुने गरेको र निजहरूबिच कुनै विवाद, झै-झगडा तथा पूर्वरिसइवी रहेको अवस्थासमेत देखिँदैन । निज प्रतिवादीले षड्यन्त्र तथा पूर्वयोजना बनाई, घातक हतियार प्रयोग गरी मृतकलाई मारेको भन्ने पनि देखिएको छैन । मृतकले आफूलाई जबरजस्ती करणी गर्न खोजेकोले आफ्नो सतीत्व रक्षा गर्न लिङ्ग समाई तान्दा मृतकको मृत्यु भएको भन्ने निज प्रतिवादीको कथन रहेको र प्रतिवादीले घटनाका बारेमा बताई न्यायिक प्रक्रियामा सहयोग गरेको देखिएकोसमेतका समग्र परिस्थितिलाई विचार गर्दा यी प्रतिवादीलाई ठहरेबमोजिम सजाय गर्दा चर्को पर्ने देखिएको र निजलाई न्यायको रोहमा १०(दश) वर्ष कैद सजाय गरेमा पनि दण्डको मकसद पूरा हुने



देखिँदा निज प्रतिवादी पवित्रा भण्डारीलाई मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको महलको १८८ नं. बमोजिम १०(दश) वर्ष कैद सजाय हुने।

इजलास अधिकृत: महेश खनाल

कम्प्युटर: मिनु शाही

इति संवत् २०७४ साल फागुन ३ गते रोज ५ शुभम्।

८

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७५-CR-०९९१, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. केशाङ्ग शेर्पा**

पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन हेर्दा, कन्याजाली नच्यालिएको, योनि सुन्निएको, निजको शारीरिक तथा मानसिक अवस्था सामान्य रहेको भन्ने देखिन्छ। पीडितको vaginal swab परीक्षण गर्दा वीर्य नपाइएको भन्ने देखिएको छ। पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण गर्ने डाक्टर रक्षा उप्रेतीले अदालतमा आई बकपत्र गर्दा, पीडितको गुप्ताङ्ग चेक गर्दा गुप्ताङ्गको वरिपरि सुन्निएको भन्ने लेखाई दिएको पाइन्छ। प्रतिवादीको under cloth परीक्षण गर्दा sperm cells not found भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ। यसरी यी प्रतिवादीले पीडितलाई आफ्नो गाडीभित्र लगी सिटमा राखी पीडितको सुरुवाल खोली निजले आफ्नोसमेत पाइन्ट खोली पीडितलाई काखमा राखी चुम्बन गरी पीडितको संवेदनशील अङ्गहरू समाई जबरजस्ती करणी गर्ने प्रयास गरेको तर जबरजस्ती करणी हुनुभन्दा अगावै पीडित उठे गएको अर्थात् अन्य तेस्रो व्यक्ति आई हेरी गएको कारण जबरजस्ती करणी हुन नपाएको भन्ने तथ्य पीडित स्वयंले मौकामा दिएको जाहेरी, प्रतिवादीको बयान र पीडित तथा पीडकको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनसमेतबाट देखिन आएको हुँदा यी प्रतिवादी केशाङ्ग शेर्पाले पीडित परिवर्तित नाम मेलम्ची (ज) लाई जबरजस्ती करणीको उद्योगसम्म गरेको कसुर स्थापित भएको देखिने।

प्रतिवादी केशाङ्ग शेर्पालाई मुलुकी ऐन,

जबरजस्ती करणी महलको १ नं. को कसुरमा सोही महलको ३(२) नं.बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने अभियोग दाबी लिएको देखिन्छ। ऐ. जबरजस्ती करणीको महलको १ र ३(२) नं.को कानूनी व्यवस्था हेर्दा, ऐ. १ नं.मा कसैले कुनै महिलालाई निजको मन्जुरी नलिई करणी गरेमा वा सोह वर्षभन्दा कम उमेरकी बालिकालाई निजको मन्जुरी लिई वा नलिई करणी गरेमा निजले जबरजस्ती करणी गरेको ठहर्छ र ऐ.३(२) नं.मा दश वर्ष वा सोभन्दा बढी चौध वर्षभन्दा कम उमेरकी बालिकालाई जबरजस्ती करणी गर्नेलाई आठ वर्षदेखि बाह्र वर्षसम्म कैद सजाय हुने छ भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ। सोअनुसार प्रस्तुत मुद्दाका प्रतिवादी केशाङ्ग शेर्पाले वर्ष ११ की पीडित परिवर्तित नाम मेलम्ची (ज) लाई जबरजस्ती करणीको उद्योगसम्मको कसुर गरेको देखिरहेको अवस्थामा यी प्रतिवादीको हकमा उक्त कानूनी व्यवस्था आकर्षित नहुने।

अब मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ५ नं.को कानूनी व्यवस्था हेर्दा, जबरजस्ती करणीको उद्योग गरेको करणी गर्न भने पाएको रहेनछ भने जबरजस्ती करणी गर्नेलाई हुने सजायको आधा सजाय गर्नुपर्छ भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ। सोअनुसार यी प्रतिवादी केशाङ्ग शेर्पाले पीडित परिवर्तित नाम मेलम्ची (ज) लाई आफ्नो गाडीभित्र लगी सिटमा राखी पीडितको सुरुवाल खोली निजले आफ्नोसमेत पाइन्ट खोली पीडितलाई काखमा राखी चुम्बन गरी पीडितको संवेदनशील अङ्गहरू समाई जबरजस्ती करणीको उद्योगसम्म गरेको देखिँदा निज प्रतिवादीको हकमा उक्त कानूनी व्यवस्था आकर्षित हुने।

प्रतिवादीले पीडितलाई निजको सुरुवाल खोली आफ्नोसमेत पाइन्ट खोली काखमा राखी चुम्बन गरी पीडितको संवेदनशील अङ्गहरू समाती जबरजस्ती करणी गर्ने प्रयास गरेको तर जबरजस्ती करणी भई नसकेको भन्ने तथ्य जाहेरी दरखास्त, प्रतिवादीले मौका र अदालतमा गरेको बयान, पीडितको

शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदन र पीडितको vaginal swab परीक्षण प्रतिवेदन र प्रतिवादीको under cloth परीक्षण प्रतिवेदनसमेतबाट स्थापित भएको देखिँदा प्रतिवादीलाई जबरजस्ती करणीको उद्योगसम्म गरेको कसुर कायम गरी मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ५ नं. बमोजिम छ वर्ष कैद सजाय हुने गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।८।३ मा भएको फैसला मनासिब देखिँदा निज प्रतिवादीलाई सुरु अभियोग दाबीबमोजिम कसुर कायम गरी सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर र मुद्दा दोहोर्‍याई हेर्न निस्सा प्रदान गर्ने गरी यस अदालतबाट मिति २०७५।७।२५ मा भएको आदेशमा उल्लिखित आधारहरू तथा विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताले गर्नुभएको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः माथि विवेचित आधार, कारणसमेतबाट प्रतिवादी केशाङ्ग शेर्पाले वर्ष ११ की पीडित परिवर्तित नाम मेलम्ची (ज) लाई आफ्नो जिपको पछाडिको सिटमा राखी पीडितको सुरुवाल खोली प्रतिवादीले आफ्नो पाइन्टसमेत खोली काखमा राखी चुम्बन गरी पीडितको संवेदनशील अङ्गहरू समाती जबरजस्ती करणी गर्ने प्रयास गरी निज प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणीको उद्योगसम्म गरेको कसुर कायम गरी प्रतिवादी केशाङ्ग शेर्पालाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ५ नं. बमोजिम छ वर्ष कैद सजाय हुने गरी सुरु सिन्धुपाल्चोक जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।१२।१९ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।८।३ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : रामचन्द्र खड्का

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७७ साल असार ३ गते रोज ४ शुभम्।

९

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७५-CR-०४९६, बहुविवाह,

नेपाल सरकार वि. सुरेश खत्रीसमेत

मुलुकी ऐन, बिहाबारीको महलको ११ नं. अनुसार थाहा पाएको मितिबाट हदम्यादभित्र परेको जाहेरीउपर अनुसन्धान भई दायर भएको अभियोगलाई हदम्याद नाघी पर्न आएको भनी अभियोगपत्र खारेज गरेको मिलेन भन्ने पुनरावेदन जिकिरतर्फ हेर्दा, प्रतिवादी सुरेश खत्रीले मिति २०७२।१२।१० मा प्रतिवादी देवकी कार्कीलाई दोस्रो विवाह गरी बहुविवाह गरेको हुँदा दुवैजनालाई कारबाही गरिपाउँ भनी मिति २०७३।१।२३ मा जाहेरी परेपछि अनुसन्धान गर्ने निकायले थाहा पाई कानूनबमोजिम अनुसन्धान गरी अभियोगपत्र दायर गरेको देखिन्छ। उक्त बिहाबारीको महलको ११ नं. को कानूनी व्यवस्था हेर्दा, यस महलमा लेखिएको कुरामा सो कुरा थाहा पाएको मितिले तीन महिनाभित्र नालेस नदिए लाग्न सक्दैन भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ। सोअनुसार जाहेरी परेको तीन महिनाभित्र नै प्रस्तुत मुद्दाको अभियोगपत्र दायर भएको देखिन्छ। बहुविवाहको मुद्दा सरकारवादी हुने फौजदारी मुद्दाको रूपमा रहेको हुँदा त्यस्तो मुद्दा स्वभाविक रूपमा दुनियाँवादी हुने अन्य मुद्दाभन्दा फरक प्रकृतिको हुन्छ। खासगरी सरकारवादी हुने फौजदारी मुद्दामा संलग्न कसुरदारले दुई प्रकृतिको फौजदारी दायित्व बेहोर्नुपर्ने हुन्छ। उसको पहिलो दायित्व वारदातबाट पीडित व्यक्तिप्रति हुन्छ भने दोस्रो र महत्त्वपूर्ण दायित्व समाज वा राज्यप्रति रहेको हुन्छ। सरकारवादी फौजदारी मुद्दामा मुद्दाका पक्षहरूबिच मिलापत्र हुन नसक्ने भएकोले फौजदारी मुद्दासँग सम्बन्धित वारदातका वारेमा पक्षहरूले सम्बन्धित निकायलाई जानकारी नगराएकै कारणबाट मात्र त्यस्ता मुद्दाहरूमा कानूनबमोजिम अनुसन्धान तहकिकात गरी मुद्दा चलन नसक्ने अवस्था कानूनले परिकल्पना गरेको देखिँदैन। कानूनले फौजदारी मुद्दाको रूपमा लिएको बहुविवाहसम्बन्धी कसुरको अनुसन्धान गरी मुद्दा चलाउन सक्ने गरी कानूनबमोजिम अधिकारप्राप्त

अधिकारीले वारदातको बारेमा जानकारी पाएपछि कानूनबमोजिम अनुसन्धान तहकिकात गरी मुद्दा चलाउन नसक्ने भन्न मिल्दैन । प्रस्तुत मुद्दामा जाहेरवाली दुर्गा सोपकोटाले आफ्नो पतिले मिति २०७२।१२।१० मा प्रतिवादी देवकी कार्कीसँग दोस्रो विवाह गरी बहुविवाह गरेको भनी साधिकार निकायमा दिएको जाहेरी बेहोरालाई निजले पहिले नै थाहा भएको भन्ने मात्र आधारले प्रस्तुत मुद्दामा मुलुकी ऐन, बिहाबारीको महलको ११ नं. मा व्यवस्थित हदम्याद नघाई अभियोगपत्र दायर भएको मान्न मिल्ने नदेखिने ।

यसै सन्दर्भमा ने.का.प.२०६०, अङ्क ३, नि.नं.७१९७ मा रत्ना गुरुङसमेत विरुद्ध निर्मला आलेको जाहेरीले श्री ५ को सरकार भएको बहुविवाह मुद्दामा मुलुकी ऐन, बिहाबारीको महलको ११ नं. मा भएको व्यवस्थाबाट थाहा पाएको मितिबाट हदम्याद सुरु हुने र मुद्दा चलाउने सम्बन्धित निकायले थाहा पाएको मिति नै थाहा पाएको मिति कायम हुने देखिन आउने भनी सिद्धान्त प्रतिपादन भएको पाइन्छ । सोअनुसार मुद्दा चलाउनु पर्ने निकायले थाहा पाएको मितिलाई थाहा पाएको मान्नुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा आफ्नो श्रीमान् सुरेश खत्रीले घरमा जेठी श्रीमती जाहेरवाली दुर्गा सापकोटा हुँदाहुँदै कान्छी श्रीमती देवकी कार्कीलाई दोस्रो विवाह गरेपछि जाहेरवालीले मिति २०७२।१२।१० मा जाहेरी दिएपछि अनुसन्धान गर्ने निकायले घटनाको बारेमा थाहा पाई अनुसन्धान गरी मुलुकी ऐन, बिहाबारीको ११ नं.बमोजिको हदम्यादभित्र मिति २०७३।२।१३ मा अभियोगपत्र दर्ता गरेको देखिरहेको अवस्थामा प्रस्तुत मुद्दाको अभियोगपत्र हदम्याद नाघी दर्ता भएको मान्नु उक्त प्रतिपादित सिद्धान्तविपरीत हुन जाने ।

अब प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुर गरेका हुन् होइनन् भन्नेतर्फ हेर्दा, प्रतिवादी सुरेश खत्रीले म घरमा जेठी श्रीमती हुँदाहुँदै मिति २०७२।१२।१० मा प्रतिवादी देवकी कार्कीसँग दोस्रो विवाह गरी बहुविवाहको

कसुर गरेको हुँदा कारबाही गरिपाउँ भनी जाहेरवाली दुर्गा सापकोटाले जाहेरी दिएको देखिन्छ । प्रतिवादी सुरेश खत्रीले अदालतमा बयान गर्दा जाहेरवाली जेठी श्रीमतीको सहमतिमा कान्छी श्रीमती बनाई मिति २०७२।४।३१ मा देवकी कार्कीलाई भित्र्याएको हो भनी मिति २०७२।१२।१० मा विवाह गरेको भन्ने कुरामा इन्कार रहेको पाइन्छ । निजले मौकामा बयान गर्दा घरमा जेठी श्रीमती हुँदा हुँदै आजभन्दा ८/९ महिना पहिला देवकी कार्कीसँग दोस्रो विवाह गरेको हो मिति यकिन भएन भन्ने बेहोरा लेखाएको देखिन्छ । जाहेरवालीले अदालतमा आई बकपत्र गर्दा सुरेश खत्रीले देवकी कार्कीलाई मिति २०७२।१२।१० भन्दा अगावै घरमा लिएर आउनु भएको थियो र सँगै बस्दा झगडा भएको कारण प्रहरीमा आई सोध्दा अहिले उजुरी दिए पनि लाग्छ भनेकोले जाहेरी दिएको हुँ, २०७२ साल साउन महिनातिर सुरेश खत्रीले विवाह गरेका हुन् भन्ने बेहोरा उल्लेख गरेको देखिन्छ । घटना विवरण कागज गर्ने धर्मराज सापकोटाले अदालतमा आई बकपत्र गर्दा प्रतिवादी सुरेश खत्रीले देवकी कार्कीलाई दोस्रो विवाह गरी कान्छी श्रीमती बनाई ल्याएका हुन् भन्ने बेहोरा लेखाई दिएको पाइन्छ । प्रतिवादी सुरेश खत्रीले देवकी कार्कीलाई मिति २०७२।४।३१ मा विवाह गरी ल्याएको भनी प्रतिवादी सुरेश खत्रीको साक्षी राजेन्द्र थापाले अदालतमा आई बकपत्र गरेको देखिन्छ । यसरी प्रतिवादीको बयान, जाहेरी र घटना विवरण कागज एवम् बकपत्रसमेतबाट यी प्रतिवादी सुरेश खत्रीले घरमा जेठी श्रीमती जाहेरवाली दुर्गा सापकोटा हुँदाहुँदै कान्छी श्रीमतीको रूपमा देवकी कार्कीलाई दोस्रो विवाह गरी बहुविवाहको कसुर गरेको तथ्य स्थापित भएको देखिन आउने ।

प्रतिवादी सुरेश खत्रीलाई मुलुकी ऐन, बिहाबारीको महलको ९ नं. को कसुरमा सोही महलको १० नं. बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने अभियोग माग दाबी लिएको देखिन्छ । मुलुकी ऐन, बिहाबारीको

महलको ९ र १० नं.को कानूनी व्यवस्था हेर्दा ऐ. ९ नं.मा कुनै लोग्ने मानिसले आफ्नो स्वास्नी जीवित छँदै वा कानूनबमोजिम लोग्ने स्वास्नीको सम्बन्ध विच्छेद नहुँदै अर्को स्वास्नी मानिससँग विवाह गर्न वा अर्को स्वास्नी राख्न हुँदैन र ऐ. १० नं.मा कसैले ९ नं.मा लेखिएको कुराको विपरीत अर्को विवाह गरेमा वा स्वास्नी राखेमा निजलाई एक वर्षदेखि तीन वर्षसम्म कैद र पाँच हजार रुपैयाँदेखि पच्चिस हजार रुपैयाँसम्म जरिवानासमेत हुने छ... भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ । सोअनुसार कुनै पनि लोग्ने मानिसले आफ्नो स्वास्नी जीवित छँदै वा कानूनबमोजिम लोग्ने स्वास्नीको सम्बन्ध विच्छेद नहुँदै अर्को स्वास्नी मानिससँग विवाह गरेमा उक्त ९ नं. विपरीत हुन जान्छ । प्रस्तुत मुद्दामा यी प्रतिवादी सुरेश खत्रीले घरमा जेठी श्रीमती जाहेरवाली दुर्गा सापकोटा हुँदाहुँदै कान्छी श्रीमतीको रूपमा प्रतिवादी देवकी कार्कीलाई दोस्रो विवाह गरेको देखिँदा निज प्रतिवादी सुरेश खत्रीको हकमा उक्त कानूनी व्यवस्था आकर्षित हुने । अर्का प्रतिवादी देवकी कार्कीउपर समेत मौकामा परेको जाहेरीमा यी प्रतिवादी देवकी कार्कीले प्रतिवादी सुरेश खत्रीको घरमा जेठी श्रीमती भएको जानकारी हुँदाहुँदै कान्छी श्रीमती बनी सुरेश खत्रीसँग विवाह गरी आएको भन्ने आधारमा निजउपर समेत बहुविवाहको कसुरमा सजाय हुन अभियोग मागदाबी लिएको देखिन्छ । निज प्रतिवादी देवकी कार्कीले अदालतमा बयान गर्दा, आफूलाई सुरेश खत्रीको जाहेरवाली जेठी श्रीमती छन् भन्ने थाहा पाई विवाह गरेको होइन भन्नेसमेत बेहोरा उल्लेख गरेको देखिन्छ । प्रतिवादी सुरेश खत्रीले मौकामा बयान गर्दा, प्रतिवादी देवकी कार्कीलाई मेरो जेठी श्रीमती र छोराछोरी थियो भन्ने कुरा थाहा थियो भनेको भए पनि निजले अदालतमा बयान गर्दा त्यस्तो जानकारी थियो भन्ने बेहोरा लेखाएको देखिँदैन । त्यसै गरी जाहेरवालीले अदालतमा बकपत्र गर्दा देवकी कार्कीलाई सुरेश खत्रीको जेठी श्रीमती तथा छोराछोरी हुँदाहुँदै कान्छी श्रीमती भई जानी जानी सुरेश खत्रीसँग

विवाह गरी आएको हुन् भनी स्पष्ट रूपमा भन्न सकेको नदेखिँदा यी प्रतिवादी देवकी कार्कीले प्रतिवादी सुरेश खत्रीको जेठी श्रीमती भएको भन्ने कुरा थाहा पाई जानी जानी कान्छी श्रीमती भई विवाह गरेकी होलिन् भनी अनुमान गर्नु न्यायोचित हुने देखिन नआउने ।

यसरी प्रस्तुत मुद्दामा आफ्नो श्रीमान् सुरेश खत्रीले घरमा जेठी श्रीमती जाहेरवाली दुर्गा सापकोटा हुँदाहुँदै कान्छी श्रीमती देवकी कार्कीलाई दोस्रो विवाह गरेपछि जाहेरवालीले मिति २०७२।१२।१० मा जाहेरी दिएपछि अनुसन्धान गर्ने निकायले घटनाको बारेमा थाहा पाई गरेको अनुसन्धानबाट प्रतिवादी सुरेश खत्रीले घरमा जेठी श्रीमती र छोराछोरी हुँदाहुँदै कान्छी श्रीमतीको रूपमा देवकी कार्कीलाई दोस्रो विवाह गरी बहुविवाहको कसुर गरेको देखिन आएकोले मुलुकी ऐन, बिहाबारीको ११ नं.को हदम्यादभित्र अभियोगपत्र दर्ता गरेको देखिरहेको अवस्थामा हदम्याद नघाई पर्न आएको भनी अभियोगपत्र खारेज हुने गरी उच्च अदालत पाटन, हेटौँडा इजलासबाट मिति २०७४।८।२७ मा भएको फैसला मिलेको देखिन नआउने ।

अतः विवेचित आधार कारणबाट प्रतिवादी सुरेश खत्रीले घरमा जाहेरवाली दुर्गा सापकोटा जेठी श्रीमतीको रूपमा हुँदाहुँदै प्रतिवादी देवकी कार्कीलाई कान्छी श्रीमतीको रूपमा विवाह गरी बहुविवाहको गरेको देखिरहेको अवस्थामा मुलुकी ऐन, बिहाबारीको ११ नं.को हदम्याद नघाई पर्न आएको अभियोगपत्र खारेज गर्नुपर्नेमा प्रतिवादी सुरेश खत्रीलाई कसुरदार र अर्का प्रतिवादी देवकी कार्कीलाई सफाइ दिने गरी मकवानपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३।८।१२ मा भएको फैसला उल्टी गरी अभियोगपत्र खारेज हुने गरी उच्च अदालत पाटन, हेटौँडा इजलासबाट मिति २०७४।८।२७ मा भएको फैसला केही उल्टी भई प्रतिवादी सुरेश खत्रीलाई मुलुकी ऐन, बिहाबारीको महलको ९ नं.को कसुरमा सोही महलको १० नं.बमोजिम एक वर्ष कैद र पाँच हजार रुपैयाँ जरिवाना

हुने र अर्का प्रतिवादी देवकी कार्कीले सुरेश खत्रीको घरमा जेठी श्रीमती भएको भन्ने कुरा थाहा पाई जानी जानी कान्छी श्रीमती भई विवाह गरेको नदेखिँदा निज प्रतिवादी देवकी कार्कीले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ।

इजलास अधिकृत : रामचन्द्र खड्का

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७७ साल असार ३ गते रोज ४ शुभम् ।

१०

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०७६-CR-००३२, सम्पत्ति शुद्धीकरण (मनी लाउन्डरिङ) नेपाल सरकार वि. विशाल वर्मा**

प्रस्तुत मुद्दामा विशेष अदालत काठमाडौँबाट मिति २०७५।०९।०१ मा भएको फैसला मिलेको छ, छैन ? वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्ने हो, होइन ? भन्ने विषयमा निर्णय दिनु पर्ने देखिएकोमा सोतर्फ मुद्दाको तथ्य, पुनरावेदन जिकिर र विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरलाई दृष्टिगत गरी मिसिल अध्ययन गरी हेर्दा देहायको अवस्था रहे भएको देखिएकाले देहायबमोजिम हुने देखिने ।

१. प्रतिवादी विशाल बर्माको साथबाट रु.५०,००,०००।- (पचास लाख) बरामद भएको कुरामा विवाद देखिएन । उक्त रकम कसुरबाट आर्जन भएको भन्ने कुरा वादी पक्षले स्थापित गर्न नसकेकोले उक्त रकम सम्पत्ति शुद्धीकरण (मनी लाउन्डरिङ) निवारण ऐन, २०६४ को दफा २८ (२) को कानूनी व्यवस्था (सम्पत्तिको स्रोत प्रमाणित गर्न नसकेमा स्रोत प्रमाणित गर्न नसकेको जति त्यस्तो सम्पत्ति जफत हुने छ) बमोजिम जफत हुने भनी सुरु अदालतबाट फैसला भएको देखिन्छ । उक्त हदसम्मको फैसलामा कुनै पुनरावेदन परेको नदेखिँदा

सोतर्फ विवेचना गरिरहनु नपर्ने ।

२. प्रतिवादी विशाल बर्माका विरुद्ध सम्पत्ति शुद्धीकरण (मनी लाउन्डरिङ) निवारण ऐन, २०६४ को दफा ३ को उपदफा (१) को खण्ड (क), (ख) र (ग) बमोजिमको निषेधित कार्य गरी सोही ऐनको दफा ३(१) र दफा ३(३) अन्तर्गतको कसुरजन्य कार्य गरेको भन्दै सोही ऐनको दफा ३०(१) बमोजिमको सजाय हुन र बरामद भएको बिगो र मोटरसाइकल सोही ऐनको दफा ३४(१) बमोजिम जफत गरिपाउँ भन्ने र अर्का प्रतिवादी कुटुस खाँको हकमा सम्पत्ति शुद्धीकरणको कसुर गर्न अर्का प्रतिवादी विशाल बर्मालाई आफ्नो मोटरसाइकल उपलब्ध गराएर सघाउ पुर्‍याएकोमा सोही ऐनको दफा ३(२) को कसुरमा सोही ऐनको दफा ३०(२) बमोजिम सजायको माग दाबी लिएको देखिन्छ । उल्लिखित दफाहरू हेर्दा:-

दफा ३ (१) मा कुनै व्यक्तिले देहायको कुनै कार्य गर्न वा गराउन हुँदैन:-

(क) सम्पत्तिको गैरकानूनी स्रोत (इलिसिट अरिजिन) लुकाउने वा छल्ने वा कसुरमा संलग्न व्यक्तिलाई कानूनी कारबाहीबाट बचाउन सहयोग गर्ने उद्देश्यले कसुरबाट प्राप्त सम्पत्ति हो भन्ने थाहा पाउँदा पाउँदै वा विश्वास गर्नुपर्ने मनासिब आधार हुँदाहुँदै त्यस्तो सम्पत्ति कुनै पनि प्रकारले रूपान्तरण वा हस्तान्तरण गर्ने, (ख) कसुरबाट प्राप्त सम्पत्ति हो भन्ने थाहा पाउँदापाउँदै वा विश्वास गर्नुपर्ने मनासिब आधार हुँदाहुँदै त्यस्तो सम्पत्तिको सही प्रकृति, स्रोत, स्थान, निःसर्ग (डिस्पोजिसन), कारोबार (मुभमेन्ट), स्वामित्व वा सो सम्पत्तिउपरको

- अधिकार लुकाउने, छल्ने वा बदल्ने, वा
- (ग) कसुरबाट प्राप्त सम्पत्ति हो भन्ने जानी जानी वा विश्वास गर्नुपर्ने मनासिब आधार हुँदाहुँदै त्यस्तो सम्पत्ति प्राप्त गर्ने, प्रयोग गर्ने वा धारण गर्ने ।
- (२) कुनै व्यक्तिले उपदफा (१) बमोजिमको कुनै कार्यको षड्यन्त्र, मद्दत, दुरुत्साहन, सहजीकरण, मतसल्लाह वा उद्योग गर्न वा सम्बद्धता वा सहभागिता जनाउन वा मतियार हुनु हुँदैन ।
- (३) कसैले उपदफा (१) वा (२) मा उल्लिखित कुनै कार्य गरेमा त्यस्तो कार्य सम्पत्ति शुद्धीकरणसम्बन्धी कसुर हुने छ ।
- दफा ३०(१): दफा ३ को उपदफा (१) मा उल्लिखित सम्पत्ति शुद्धीकरणसम्बन्धी कसुर गर्ने व्यक्तिलाई बिगोको दोब्बर जरिवाना र कसुरको गाम्भीर्य हेरी दुई वर्षदेखि दश वर्षसम्म कैद हुने छ ।
- दफा ३०(२): दफा ३ को उपदफा (१) मा उल्लिखित सम्पत्ति शुद्धीकरणसम्बन्धी कसुरमध्ये षड्यन्त्र गर्ने व्यक्तिलाई उपदफा (१) बमोजिम र अन्य कसुर गर्ने व्यक्तिलाई उपदफा (१) मा उल्लिखित सजायको आधा सजाय हुने छ ।
- दफा ३४(१): सम्पत्ति शुद्धीकरण तथा आतङ्कवादी क्रियाकलापमा वित्तीय लगानीसम्बन्धी कसुर प्रमाणित भएमा कसुरसँग सम्बन्धित जोसुकैको नाम, भोग, स्वामित्व वा कुनै पनि प्रकारको स्वार्थ रहे भएको सम्पत्ति वा साधन जफत हुने छ । भन्ने व्यवस्था रहेको पाइन्छ । उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाको अध्ययनबाट सम्पत्ति शुद्धीकरणको कसुर हुनको लागि विवादित सम्पत्ति कसुरबाट आर्जन भएको हुनुपर्ने ।
३. प्रतिवादी विशाल बर्माको साथबाट बरामद भएको रकम जुन व्यक्तिले पठाएको भनी निज प्रतिवादीले जिकिर लिएका छन्, ती व्यक्ति भारतीय भएको र स्पष्ट पहिचान खुलाउन सकेको देखिँदैन भने जुन व्यक्तिलाई बुझाउन ल्याएको भनी भनेको व्यक्तिको समेत कुनै स्पष्ट पहिचान र वतनसमेत खुलाउन सकेको पाइँदैन । बरामद भएको रकम साथमा बोकी हिँड्नेको लागि ठुलो मात्राको रकम देखिँदै त्यत्रो रकम बैंकिङ प्रणालीमार्फत कारोबार गर्नुपर्नेमा नगद नै साथमा बोकी हिँडेको, उक्त रकम के कुन स्रोतबाट आर्जन गरेको हो र के प्रयोजनका लागि कसलाई दिन लगेको हो स्पष्ट तथ्यगत आधार प्रमाण प्रतिवादी विशाल बर्माले खुलाउन सकेको देखिँदैन । तथापि यी प्रतिवादीको साथबाट बरामद भएको रकम के कस्तो कसुरबाट प्राप्त भएको भन्ने स्पष्ट विश्वसनीय प्रमाण वादी पक्षले समेत खुलाउन सकेको अवस्था नदेखिँदा यी प्रतिवादी विशाल बर्माको साथबाट बरामद भएको रकम कसुरबाट आर्जन भएको नभई वैधानिक स्रोत नखुलेको सम्पत्तिको रूपमा रहेको मान्नुपर्ने नै देखियो । प्रतिवादीले रूपैयाँ बोकी हिँड्नु मात्र आफैँमा कसुरजन्य कार्य हुन सक्दैन । यस अवस्थामा निज प्रतिवादी विशाल बर्माले आरोप दाबीबमोजिम सम्पत्ति शुद्धीकरण (मनी लाउन्डरिङ) निवारण ऐन, २०६४ को दफा ३(१) को खण्ड (क), (ख) र (ग) अन्तर्गतको कसुर गरेको भनी निक्कै गर्नु न्यायसङ्गत देखिँदैन ।
४. प्रतिवादी कुट्टुस खाँले आफ्नो मोटरसाइकल प्रतिवादी विशाल बर्मालाई दिई अभियोग दाबीबमोजिम मतियारको भूमिका निर्वाह गरेर

भनी लिएको पुनरावेदन जिकिरतर्फ विचार गर्दा, बरामदित मोटरसाइकल प्रतिवादी कुट्टुस खाँको नाममा दर्ता रहेको भन्ने कुरा यातायात व्यवस्था कार्यालय, लुम्बिनीको च.नं.६६२९ मिति २०७५।२।१६ को पत्रबाट देखिएको छ। मुख्य अभियुक्त बनाइएका विशाल बर्माको साथबाट बरामद भएको रकम अभियोग मागदाबीमा उल्लेख गरिए जस्तो कसुरबाट प्राप्त भएको नदेखिई वैधानिक स्रोत नखुलेको सम्पत्ति देखिएको अवस्थामा सम्पत्ति शुद्धीकरण (मनी लाउन्डरिङ) को कसुर गर्न सघाउ पुऱ्याएको भन्ने कुरा स्थापित हुन सकेन। अर्कातर्फ प्रतिवादी कुट्टुस खाँले ओमप्रकाश सोनीमार्फत मौखिक सहमतिमा मोटरसाइकल बिक्री गरिसकेको भन्ने बेहोरा आफ्नो बयानमा लेखाएको स्थिति छ। प्रतिवादी कुट्टुस खाँले अनुसन्धान अधिकारी र अदालतसमक्ष बयान गर्दा प्रतिवादी विशाल बर्मालाई आफूले नचिनेको भन्ने बेहोरा लेखाएका र अर्का प्रतिवादी विशाल बर्मासमेत यी कुट्टुस खाँलाई चिन्दिन भनी बयान गरेको अवस्था देखिन्छ। यस अवस्थामा उक्त मोटरसाइकल कसुर गर्ने प्रयोजनका लागि प्रयोग गरेको भन्ने नदेखिँदा विशेष अदालत काठमाडौँको फैसला नमिलेको भनी वादी नेपाल सरकारले लिएको पुनरावेदन जिकिर तथा विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिएकोले प्रत्यर्थी झिकाइरहनु नपर्ने।

५. तसर्थ, उल्लिखित आधार, कारण र कानूनी व्यवस्थाबाट यी प्रतिवादी विशाल बर्माबाट बरामद भएको रु.५०,००,०००।- (पचास लाख रुपैयाँ) सोही ऐनको दफा २८ को उपदफा (२) बमोजिम जफत

हुने, अरूमा अभियोग दाबी पुग्न नसक्ने र दुवैजना प्रतिवादीहरू विशाल बर्मा र कुट्टुस खाँले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने भनी विशेष अदालत काठमाडौँबाट मिति २०७५।०९।०९ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत:- नबिन आचार्य

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७६ साल पौष २२ गते रोज ३ शुभम्।

११

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०७५-CR-१०९४, अपहरण, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, नेपाल सरकार वि. कमल प्रकाश वि.क. समेत**

प्रत्यर्थी प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क.ले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष आरोपित कसुर गरेको भनी बयान गरेको देखिए तापनि अदालतमा आई बयान गर्दा पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको होइन, विवाह गर्ने सहमति भई सहमतिमा करणी गरेको हो। दाङ जान लागेका हौं, बेचबिखन गर्नका लागि लगेको होइन भनी बेचबिखन गर्न लगेकोमा इन्कारी बयान गरेको देखिन्छ। यसरी निजले अदालतसमक्षको बयानमा पीडितलाई विवाह गर्छु भनी लिएर गएको र पीडितलाई आफूले करणी गरेको तथ्यसम्म स्वीकार गरेको देखिन्छ। मिसिल संलग्न प्रमाणबाट निज प्रतिवादीले पीडितलाई विवाह गर्न लगेको भन्ने खुल्न आएको अवस्था छैन। यसबाट निज प्रतिवादीले पीडितलाई करणी गरी शोषण गर्ने मनसायले विवाह गर्ने भनी प्रलोभनमा पारी झुक्याई ललाई फर्काई नेपाल सरहदभित्र एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा ओसार पसार गरेको भन्ने कुरा पुष्टि हुन आउँछ। पीडितलाई बेचबिखन गर्ने उद्देश्यले जबरजस्ती लगेको भन्ने जाहेरी दरखास्त र सोही बेहोराको पीडितको मौकाको बयान र घटना विवरणका मानिसहरूले कागज गरिदिएको भए

तापनि पीडित परिवर्तित रूकुम ५४८ ले अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गर्दा मलाई प्रतिवादीले बेचबिखन गर्न लागेको होइन भनी बकपत्र गरेको, जाहेरवाला रूकुम ५४८१ ले प्रतिवादीले पीडितलाई बेचबिखन गर्नका लागि नै लागेको भनी यकिनसाथ बकपत्र गर्न नसकेको, घटना विवरणका मानिसहरूले अदालतमा उपस्थित भई मौकाको कागजको बेहोरा सनाखत हुने गरी बकपत्र गरेको नदेखिएबाट यी प्रतिवादीले विवाह गर्ने प्रलोभनमा पारी झुक्याई यौन शोषण गर्ने उद्देश्यले नै पीडितलाई नेपालभित्रै एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा लगेको भन्ने देखिने । त्यसैगरी यी प्रत्यर्थी प्रतिवादीले पीडितलाई अपहरण गरी लगेको भन्ने जिकिरतर्फ हेर्दा, मुलुकी ऐन, अपहरण गर्ने तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १ नं. मा कसैले कुनै व्यक्तिलाई बल प्रयोग गरी वा प्रयोग गर्ने धम्की दिई डर त्रास देखाई छलकपट गरी झुक्यानमा पारी वा नशालु वा मादक पदार्थ सेवन गराई वा कुनै यातायातको साधन कुनै किसिमले कब्जा वा नियन्त्रणमा लिई कुनै ठाउँमा जान बाध्य गराउन वा कुनै व्यक्तिलाई निजको हितको निमित्त निजको बाबु आमा वा संरक्षकको मन्जुरीबाहेक कुनै ठाउँमा लैजान हुँदैन । सो गरे अपहरण गरेको मानिने छ भन्ने कानूनी व्यवस्था गरिएको पाइन्छ । यी प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क. ले पीडितलाई उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाबमोजिम अपहरण गरी लगेको भन्ने मिसिल संलग्न प्रमाणबाट पुष्टि हुन आएको देखिँदैन । अभियोग दाबीमा प्रतिवादीले पीडितलाई केही सुँघाई बेहोस बनाई ट्रक चढाई लगेको भने तापनि उक्त आरोपमा प्रतिवादीले अदालतमा बयान गर्दा इन्कार रहेको, पीडितले प्रतिवादीले आफूलाई केही सुँघाएको होइन भनी बकपत्र गरेकी एवं प्रत्यक्षदर्शी ट्रक ड्राइभर देवीलाल बोहराले मौकामा घटना विवरण कागज गर्दा दुवैजना पालैपालो ट्रक चढेको भन्ने उल्लेख गरेको देखिएबाट पीडितलाई बेहोस बनाई ट्रकमा चढाई लगेको भन्ने अभियोग दाबी समर्थित हुन सकेको

देखिएन । यी प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती धाक धम्की दिई गाडीमा राखी लगेको भए पीडितले प्रतिवादीबाट भाग्न उम्कन प्रयास गरेको हुनुपर्नेमा त्यस्तो प्रयास गरेको देखिँदैन । तसर्थ, यी प्रतिवादीले पीडितलाई अपहरण गरी बेचबिखन गर्न लगेको भन्ने अभियोग दाबी ठोस प्रमाणबाट समर्थित हुन सकेको देखिएन । यी प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क.ले पीडितलाई विवाह गर्ने भनी ललाई फकाई रूकुमबाट ट्रकमा चढाई सल्यानसम्म ल्याएको र एक रात होटलमा राखी करणी गरेको र अर्को दिन पुनः ट्रकमा राखी दाडतर्फ आउँदै गर्दा सल्यानको कपुरकोटमा प्रहरीले पक्राउ गरेको देखिएबाट यी प्रतिवादीले पीडितउपर यौन शोषण गरेको देखिँदा निजले मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १५ को उपदफा (१) को खण्ड (च) बमोजिम पीडितको शोषण गर्ने उद्देश्यले पीडितलाई नेपालभित्र एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा ओसार पसार गरेकोसम्म पुष्टि हुन आएको देखिने ।

अर्का प्रत्यर्थी प्रतिवादी गोपालजंग विष्टको हकमा विचार गर्दा, मिति २०७३।०३।२८ गते मेरी छोरी परिवर्तित रूकुम ५४८ घरबाट दही बेच्न र एस.एल.सी.को नतिजा बुझ्नको लागि खलंगा रूकुममा गएको अवस्थामा गोपाल विष्टको निर्देशनमा प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क.ले विवाह गर्छु भनी ललाईफकाई पिपलनेटाबाट सोलबाङ्गतिर झारी खलंगाबाट आएको ट्रक चढाई लिई गएको भनी जाहेरवालाले यी प्रतिवादीउपर समेत किटानी जाहेरी दिएको देखिन्छ । पीडितको प्रमाणित बयानमा उक्त जाहेरी बेहोरा समर्थन हुने गरी गोपालजंग विष्टले तिमीलाई ललाई फकाई लिएर जानु भनेका छन् भनी कमल प्रकाश वि.क. ले मलाई जबरजस्ती ट्रकमा लिई गएका हुन् भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ । निज प्रतिवादी गोपालजंग विष्टले अदालतमा बयान गर्दा मिति २०७३।०३।२४ गते कमल प्रकाश वि.क. समेत भई पीडितको घरमा



गएको र पीडितको आमाले प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क. सँग पीडितको विवाह गराइदिने कुरा गरेका हुन् । वारदातको दिन पीडितले आमाबाबुसँग सल्लाह गरेर नै कमल प्रकाश वि.क.सँग विवाह गर्न खलङ्गातर्फ गएको भनी लेखाएको र अर्का प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क.को मौकाको बयानबाट समेत निज कमल प्रकाश वि.क. प्रतिवादी गोपालजंग विष्टका साथ पीडित परिवर्तित नाम रूकुम ५४८ को घर गएको भन्ने देखिन्छ । त्यसैगरी पीडितले अदालतमा बयान गर्दा प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क.सँग चिनजान नै थिएन । गोपालजंग विष्टले मेरो तुली आमाको छोरा हो भनी घरमा लगी चिनाएको हो । मलाई जबरजस्ती लैजान सहयोग गर्ने गोपालजंग विष्ट नै हो भनी लेखाइदिएको देखिन्छ । यी प्रतिवादी गोपालजंग विष्टकै साक्षी भिमबहादुर विष्टको बकपत्र बेहोरासमेतबाट यिनै प्रतिवादीले अर्का प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क.लाई पीडितको घर लगी बिहे गर्ने भन्ने कुराकानी गराएको देखिन्छ । यसप्रकार प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क. लाई पीडितको घर लगी पीडितसँग चिनजान गराइदिने र निजले पीडितलाई सल्यानतर्फ लैजानेसम्मको कार्यमा वातावरण तयार गर्ने कार्य यी प्रतिवादी गोपालजंग विष्टबाट भएको देखिँदा प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क. ले पीडितलाई रूकुमबाट जबरजस्ती ट्रक चढाई सल्यानतर्फ लैजाने कार्यमा यी प्रतिवादी गोपालजंग विष्टले दुरुत्साहन गर्ने एवं सहयोगी मतियारको भूमिका निर्वाह गरेको भन्ने कुरा पुष्टि हुन आउने ।

यस स्थितिमा सुरु रूकुम जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी प्रत्यर्थी प्रतिवादीमध्येका कमल प्रकाश वि.क. ले पीडितको शोषण गर्ने उद्देश्यले पीडितलाई नेपालभित्र एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा ओसार पसार गरेको कसुरसम्म पुष्टि हुन आएकोले निजलाई मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४ को उपदफा (२) को खण्ड (ख) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १५ को उपदफा (१)

को खण्ड (च) बमोजिम २ (दुई) वर्ष कैद सजाय हुने र प्रत्यर्थी प्रतिवादी गोपालजंग विष्टले प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क. ले पीडितलाई रूकुमबाट जबरजस्ती ट्रक चढाई सल्यानतर्फ लैजाने कार्यमा दुरुत्साहन गर्ने एवं सहयोगी मतियारको भूमिका निर्वाह गरेको देखिँदा निजलाई सोही ऐनको दफा १५ को उपदफा (१) को खण्ड (ज) बमोजिम १ (एक) वर्ष कैद हुने र पीडितलाई पुगेको भौतिक, शारीरिक, मानसिक र भावनात्मक क्षति एवं निजको सामाजिक मर्यादामा परेको असरसमेतलाई मध्यनजर गरी मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १७ र फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ४१ बमोजिम प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क. बाट रु.४०,०००/- र प्रतिवादी गोपालजंग विष्टबाट रु.२०,०००/- पीडितले क्षतिपूर्तिसमेत भराई लिन पाउने ठहराएको उच्च अदालत तुलसीपुरको फैसला मिसिल प्रमाणको मूल्याङ्कनको रोहबाट मनासिब नै देखिएकोले अन्यथा भन्न मिल्ने देखिएन । निज प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबमोजिम नै सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर तथा विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः विवेचित तथ्य, आधार र कारणहरूबाट सुरु रूकुम जिल्ला अदालतको मिति २०७३।११।११ को फैसला केही उल्टी गरी प्रत्यर्थी प्रतिवादीमध्येका कमल प्रकाश वि.क. लाई मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४ को उपदफा (२) को खण्ड (ख) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १५ को उपदफा (१) को खण्ड (च) बमोजिम २ (दुई) वर्ष कैद हुने र प्रत्यर्थी प्रतिवादी गोपालजंग विष्टलाई सोही ऐनको दफा १५ को उपदफा (१) को खण्ड (ज) बमोजिम १ (एक) वर्ष कैद हुने तथा मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १७ र फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण

तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ४१ बमोजिम प्रतिवादी कमल प्रकाश वि.क.बाट रु.४०,०००।- र प्रतिवादी गोपालजंग विष्टबाट रु.२०,०००।- पीडितले क्षतिपूर्तिसमेत भराई लिन पाउने ठहराएको उच्च अदालत तुलसीपुरको मिति २०७५।५।०४ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : तारादत्त बडु

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)

इति संवत् २०७७ साल जेष्ठ २१ गते रोज ४ शुभम्।

१२

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०७४-CR-०६४६, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. भुपेन्द्रप्रसाद जोशीसमेत**

प्रस्तुत मुद्दामा यी प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरू भूपेन्द्र प्रसाद जोशी, दिपेन्द्र ओझा, थानेश्वर गौतम र मृतक रमेश विष्टबिच ज्यानै मार्नुपर्नेसम्मको पूर्वसिद्धि रहे भएको नदेखिएको र होली पर्वका दिन होली मनाई विभिन्न स्थानमा खानपिनसमेत गरी बेलुका मोहना नदीमा चारैजना दुईवटा मोटरसाइकलमा चढी नुहाउन गएकोबाट निजहरूबिच मित्रता नै रहेको देखिन्छ। मृतक रमेश विष्टको लासजाँच प्रकृति मुचुल्का तथा शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतबाट निजको शरीरमा कुनै घाउ चोट लागेको पनि देखिँदैन। मृतकको शव परीक्षण प्रतिवेदनमा मृत्युको कारण पानीमा डुबेको (Drowning) भनी उल्लेख भएको देखिन्छ। निज प्रतिवादीहरू सँगै मृतकको उद्धार कार्यमा समेत संलग्न रहेका जियाराम चौधरी र टिकाराम चौधरीसमेतले मृतक रमेश विष्टलाई यी प्रतिवादीहरूले बचाउन प्रयत्न गर्दै हारगुहार मागेका र उद्धारको प्रयास गरेको भनी लेखाएको देखिन्छ। मृतकलाई प्रतिवादी भूपेन्द्रप्रसाद जोशीसमेतले मार्नु पर्नेसम्मको रिसइवी तथा अन्य कुनै कारण रहे भएको भनी जाहेरवालालगायत मृतककी पत्नी जयन्ती विष्टसमेतका कसैले पनि मौकामा गरेको कागज तथा अदालतमा गरेको बकपत्रसमेतमा खुलाउन

सकेको नपाइने।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा फौजदारी मुद्दामा कसुर प्रमाणित गर्नुपर्ने भार वादी पक्षको हुने छ भन्ने कानूनी व्यवस्था गरिएको पाइन्छ। फौजदारी अभियोग प्रमाणित हुनको लागि आपराधिक कार्य गर्ने मनसाय, तयारी र क्रिया भएको हुनुपर्छ र त्यस्तो क्रिया आपराधिक थियो भन्ने कुरा शङ्कारहित तवरबाट पुष्टि भएको हुनु पर्दछ। केवल ज्यान मरेको भन्ने आधारले मात्र कसैका उपर शङ्का गरी विनाप्रमाण कसैलाई दोषारोपण गर्नु न्यायोचित हुन सक्दैन। यसैका लागि फौजदारी कानूनमा शङ्काको सुविधा अभियुक्तले पाउँछ (Benefit of doubt goes to accused) भन्ने फौजदारी न्यायको मान्य सिद्धान्तसमेत रहेको पाइन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा यी प्रतिवादीहरूकै कर्तव्यबाट मृतकको मृत्यु भएको भन्ने कुरा शङ्कारहित तवरबाट पुष्टि भएको देखिँदैन। मृतकको शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट मृतक रमेश विष्टको मृत्यु पानीमा डुबेर भएको भन्ने देखिएको छ। यी प्रत्यर्थी प्रतिवादीमध्येका भूपेन्द्रप्रसाद जोशीले नै मृतकलाई धकेली नदीमा फालेका हुन् भन्ने कुरा मिसिल संलग्न कुनै पनि प्रमाण कागजातबाट समर्थित हुन आएको देखिँदैन। निज प्रतिवादी भूपेन्द्रप्रसाद जोशीले अनुसन्धानको क्रममा गरेको साबिती बयान मिसिल संलग्न अन्य स्वतन्त्र तथ्यपरक प्रमाणबाट शङ्कारहित तवरले पुष्टि हुन नआएको स्थितिमा सुरुको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहराएको उच्च अदालत दिपायलको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिल्ने देखिएन। तसर्थ उच्च अदालतको फैसला त्रुटिपूर्ण हुँदा बदर गरी प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर एवं विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः मिसिल संलग्न तथ्य एवं आधार

प्रमाणहरूको विवेचना गरी सुरु कैलाली जिल्ला अदालतको मिति २०७२।१।५ को फैसला उल्टी गरी प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरू भूपेन्द्रप्रसाद जोशी, दिपेन्द्र ओझा र थानेश्वर गौतमले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहराएको उच्च अदालत दिपायलको मिति २०७४।२।७ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : तारादत्त बडु

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)

इति संवत् २०७७ साल जेष्ठ २१ गते रोज ४ शुभम्।

### इजलास नं.२

१

मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७१-सी-१२७७, निर्णय दर्ता बदर, प्रेमलाल कसाई वि. प्रेमबहादुर श्रेष्ठसमेत

जग्गाको हक बेहक सम्बन्धमा प्रमाण बुझी दर्ता हक कायम गर्ने क्षेत्राधिकार मालपोत कार्यालयलाई कानूनद्वारा प्रदान गरेको देखिँदैन। जिल्ला अदालतबाट वादी प्रतिवादीबाट पेस भएको प्रमाणहरूको मूल्याङ्कन गरी हक बेहकमा निर्णय गर्नको लागि दुवै पक्षलाई सम्बन्धित जिल्ला अदालतबाट हक कायम गराई ल्याउन सुनाइदिनुपर्नेमा मालपोत कार्यालयले वादीको नाउँमा दर्ता गर्ने भनी गरेको निर्णय कानूनसम्मत नभएको हुँदा पुनरावेदन अदालत पाटनले दुवै पक्षलाई हक कायम गरी ल्याउन सुनाइदिन मालपोत कार्यालय चाबहिलमा तारिख तोकी मिसिल पठाइदिने भनी गरेको फैसला अन्यथा देखिन नआउने।

तसर्थ, उल्लिखित विवादित कि.नं.५० को ०-६-०-० को जग्गामा दुवै पक्षले आ-आफ्नो नाउँमा दर्ता गरिपाउँ भनी दाबी गरी हकबेहकको प्रश्न खडा भएकोमा सक्षम अदालतबाट हक कायम गराई ल्याउनु

भनी मालपोत कार्यालयले सुनाउनु पर्नेमा प्रेमलाल कसाईको नाउँमा दर्ता गरिदिने गरी मालपोत कार्यालय, चाबहिलबाट मिति २०७०।१०।२२ मा भएको निर्णय बदर गरी दुवै पक्षलाई अदालतबाट आफ्नो हक कायम गराई ल्याउनु भनी मालपोत कार्यालयले सुनाउनुपर्ने भएकोले दुवै पक्षलाई तारिख तोकी मालपोत कार्यालय चाबहिल, काठमाडौँमा पठाइदिने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: सरिता रिजाल

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल भाद्र १ गते रोज ६ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७२-सी-०७५७, गर्भपतन गराई कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. गंगा अधिकारी

प्रतिवादी गंगा अधिकारी गर्भपतन गराउन पाउने अनुमति वा इजाजत प्राप्त चिकित्सक / स्वास्थ्यकर्मी भएको भन्ने मिसिल संलग्न कागजातबाट देखिँदैन। यसरी अनुमति प्राप्त नगरेको व्यक्तिले गर्भ पतन गराउने कार्य गर्दा मानिस मर्न सक्छ भन्ने पूर्वअनुमान थिएन भनी भन्न मिल्ने देखिँदैन। होस नपुर्‍याई वा हेलचेक्र्याई गरी गर्भपतन गराएको देखिन आयो। तोकेको योग्यता भएको व्यक्तिले मात्र गर्भपतन गराउन सक्ने देखिन्छ। गर्भपतन गराउन पाउने योग्यता र क्षमता नभएको प्रतिवादीले गर्भपतन गराउँदा गर्भवती महिलाको ज्यान जोखिम पर्न सक्ने नै हुन्छ। कानूनले अनुमति दिएको सीमा नाघी गराइएको गर्भपतनले अपराधिक दायित्व सिर्जना गर्दछ। कानूनले निषेध गरेकी यी प्रतिवादीले गर्भपतन गराउन सल्लाह दिएको र गर्भपतन गराएको देखिन आयो। निजले गर्भपतन गर्ने सल्लाह दिँदा नजिकैको स्वास्थ्य केन्द्रमा जाने सल्लाह दिएकोसमेत देखिँदैन। आफूसँग ज्ञान सीप नभएको व्यक्तिले कानूनले निषेध गरेको कार्य गर्दा

मानिस मर्न सक्छ भन्ने सामान्य समझको कुरा विचार नगरी गरेको कार्यलाई मुनासिब माफिकको कार्य भनी मान्न मिल्ने नदेखिने ।

मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. को कानूनी व्यवस्था आकर्षित हुनका लागि मृतकलाई मार्नुपर्ने रिसइवीको कारण योजनाबद्ध रूपमा कार्य गरी कर्तव्य गरेको हुनुपर्ने देखिन्छ । प्रस्तुत घटनामा मृतकलाई मार्ने नै उद्देश्यबाट ज्यानसम्बन्धीको १३(३) नं. अन्तर्गतको कार्य यी प्रतिवादीले गरेको भन्ने नभई मृतक र निजको लग्नेको आग्रहमा यी प्रतिवादीले गर्भ तुहाउने कार्यमा संलग्न रहेको र सोही क्रममा मृतकको मृत्यु हुन गएको देखिन्छ । यसरी मृतकसमेतकै मन्जुरीबाट भएको क्रियाको परिणामबाट भएको मृत्युलाई ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. को कसुर कायम गर्न मिल्ने अवस्था नदेखिएकोले पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, प्रतिवादी गंगा अधिकारीले मृतक रसिका मल्लको गर्भमा रहेको २१ हप्ताभन्दा माथिको गर्भपतन गराएको देखिएकोले निजलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको २८ नं. बमोजिम १० महिना कैद र सोही महलको ५ नं. र ६(२) नं. विपरीतको कसुरमा सोही ६(२) नं. बमोजिम १ वर्ष कैद सजाय हुने ठहरी भएको सुरु जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादी गंगा अधिकारीलाई सोही महलको २८(क) नं. बमोजिम ३ वर्ष कैद र सोही महलको ६(२) नं. बमोजिम १ वर्ष कैद गरी जम्मा ४ वर्ष कैद सजाय हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत सुर्खेतको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्दैन । सो ठहरी फैसला भएकोले प्रतिवादी गंगा अधिकारी सुरु म्यादै गुजारी बसेकोले निजलाई लागेको कैदको लगत कसी असुल गर्नु भनी सुरु जिल्ला अदालतमा लगत दिनुपर्नेमा सो गरेको नदेखिँदा प्रतिवादी गंगा अधिकारीलाई लागेको कैद वर्ष ४ को लगत कसी असुल गर्नु भनी भनी सुरु

सुर्खेत जिल्ला अदालतमा लगत दिने ।

इजलास अधिकृत : जगतबहादुर पौडेल

कम्प्युटर : प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल साउन २३ गते रोज ४ शुभम् ।

### इजलास नं.३

१

मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७१-WO-००२४, उत्प्रेषण / परमादेश, गोविन्दप्रसाद खनाल वि. लोक सेवा आयोग, केन्द्रीय कार्यालयसमेत

नेपाल इन्जिनियरिङ सेवा, सिभिल समूह, हाईवे उपसमूह रा.प.द्वितीय श्रेणीको कार्यक्षमताको मूल्याङ्कनको आधारमा हुने बढुवाका लागि प्रकाशित सूचनाअनुसार यी निवेदक र विपक्षी सुरेश पौडेल दुवै प्रतिस्पर्धी उम्मेदवार रहेका देखिन्छन् । विपक्षी सुरेश पौडेलले बढुवाको लागि फाराम भर्दा त्रिभुवन विश्वविद्यालय, इन्जिनियरिङ अध्ययन संस्थानले निजले Master's Degree in Transportation Engineering २०७०।७।२८ गते उत्तीर्ण गरेको बेहोरासहितको त्रिभुवन विश्वविद्यालयको पत्रसाथ बढुवाको दरखास्त फाराम बुझाएको, दरखास्त साथै चारै सेमेष्टरको लब्धाङ्क पत्रसमेत पेस गरेको मिसिलबाट देखिन्छ । विपक्षी सुरेश पौडेलले पेस गरेको स्नातकोत्तर तहको लब्धाङ्कपत्रहरू अन्यथा हुन् भन्ने सम्बन्धमा निवेदकको जिकिरसमेत नदेखिँदा विपक्षी सुरेश पौडेलले स्नातकोत्तर तह उत्तीर्ण गरेकोमा विवाद नदेखिने ।

लोक सेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालय अनामनगर, काठमाडौँबाट नेपाल इन्जिनियरिङ सेवा, सिभिल समूह, हाईवे उपसमूह रा.प.द्वितीय श्रेणीको रिक्त पद संस्था ६ को लागि कार्यक्षमता मूल्याङ्कनको आधारमा बढुवा गर्न विज्ञापन नं.७६-७०/७१ को मिति

२०७०।६।२३ गते प्रकाशित विज्ञापनमा दरखास्त दिने अन्तिम मिति २०७०।८।१४ गतेसम्म रहेको र विपक्षी सुरेश पौडेलले मिति २०७०।७।२९ मा स्नातकोत्तर तह उत्तीर्ण गरेका लब्धाङ्कपत्रहरूसहित दरखास्त फाराम बुझाएको देखिन्छ। मिति २०७०।७।२६ सम्म मात्र फाराम बुझाउने मिति रहेकोमा थप गरेको मितिमा बुझाएको शैक्षिक योग्यताको प्रमाणपत्रको आधारमा अङ्क प्रदान गर्न नमिल्ने भन्ने निवेदन जिकिर रहे पनि दरखास्त फाराम बुझाउन मिल्ने तर सो अवधिमा हासिल गरेको शैक्षिक योग्यताको अङ्क भने गणना गर्न नमिल्ने भनी अर्थ गर्न मिल्ने देखिँदैन। फाराम भर्ने म्याद थप गर्नुको अर्थ सो अवधिमा हासिल गरेको शैक्षिक योग्यताको गणनासमेत स्वतः हुन्छ भन्ने नै हो। बढुवाको दरखास्त फारामसाथ पेस नगरी पछि पेस गरेको ट्रान्सक्रिप्टको आधारमा माथिल्लो शैक्षिक योग्यताको अङ्क प्रदान गर्न मिल्ने होइन भनी लिइएको निवेदन जिकिर त्रिभुवन विश्वविद्यालय अन्तर्गतका क्याम्पसहरूको परीक्षासम्बन्धी केन्द्रीय निकायको रूपमा रहेको परीक्षा नियन्त्रण कार्यालय बल्खुले समेत Transcript जारी मितिमा डिग्री हासिल गरेको मिति नमानिने बरु अन्तिम सेमेस्टर उत्तीर्ण गरेको मिति नै डिग्री हासिल गरेको मिति हुने प्रावधान रहेको भनी २०७०।७।२८ गते डिग्री हासिल गरेको बेहोरालाई समर्थन गर्दै जो जससँग सम्बन्धित छ भनी मिति २०७०।११।११ मा सिफारिस गरेको मिसिल संलग्न रहेको पत्रबाट खण्डित भएको देखिने।

लोक सेवा आयोगको निर्णय, लोक सेवा आयोग कार्य सञ्चालन निर्देशिका, २०६७ को दफा १३ को उपदफा (२) र सोही उपदफाको खण्ड (ग) को आधारमा नमिलेको भन्ने जिकिरतर्फ हेर्दा उक्त दफा १३ (२) मा आन्तरिक प्रतियोगितात्मक परीक्षा र कार्यक्षमताका आधारमा हुने बढुवाको लागि प्रकाशित विज्ञापनअनुसार पर्न आएका दरखास्त फारामहरूउपर देहायबमोजिम छानबिन गर्नुपर्ने छ भनी सोही

उपदफाको खण्ड (ग) मा सम्बन्धित सेवासम्बन्धी प्रचलित कानूनबमोजिमको न्यूनतम शैक्षिक योग्यताको प्रमाणपत्र वा लब्धाङ्कपत्रको प्रतिलिपि दरखास्तसाथ संलग्न छ, छैन ? भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ। यसरी दरखास्त छानबिन गर्दा शैक्षिक योग्यताको लब्धाङ्कपत्रको प्रतिलिपिसाथ रहेको अवस्थामा उक्त दरखास्त रीतपूर्वककै मानिने हुन्छ। मिति २०७०।७।२८ गते स्नातकोत्तर तहको परीक्षा उत्तीर्ण गरेको बेहोरा उल्लेख गरी इन्जिनियरिङ अध्ययन संस्थान, पुल्चोक क्याम्पसले तथा अन्तिम सेमेष्टर उत्तीर्ण मिति नै डिग्री हासिल गरेको मिति मानिने प्रावधान रहेको भनी परीक्षासम्बन्धी आधिकारिक निकाय प.नि.का.बाट लेखी आइसकेको र स्नातकोत्तर तहको लब्धाङ्कपत्रहरूसमेत पेस भइरहेको स्थितिमा केवल दरखास्त फारामसाथ ट्रान्सक्रिप्ट पेस नगरेकै कारण शैक्षिक योग्यताबापतको अङ्क दिन नमिल्ने भनी अर्थ गर्न मिल्ने नदेखिने।

यस अतिरिक्त यी रिट निवेदकको हाल माथिल्लो तहमा बढुवा भइसकेको भनी निवेदकतर्फका विद्वान् अधिवक्ता श्री भक्तिराम घिमिरेले बहसका क्रममा इजलासमा जानकारी गराउनु भएकोले प्रस्तुत रिट निवेदनको आचित्यसमेत समाप्त भइसकेको देखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: जगदीशप्रसाद भट्ट

कम्प्युटर: चन्द्रा तिमल्सेना

इति संवत् २०७५ साल असार २० गते रोज ४ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०६८-CR-०७९५, ०६९-CR-०३२२, ज्यान मार्ने उद्योग, नेपाल सरकार वि. अशोककुमार भन्ने निराजन खत्रीसमेत, श्यामकुमार खत्रीसमेत वि. नेपाल सरकार

यसमा आरोपित कसुरमा प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूले अनुसन्धानको क्रममा र अदालतमा

समेत पूर्णरूपमा इन्कार भई बयान गरेको देखिन्छ । जाहेरवालीले अदालतमा बकपत्र गर्दा मिति २०६६।९।२९ गते राति २:३० बजे श्याम खत्रीसमेतका १५/१६ जना मानिसहरूले घरको ढोका फोरी श्रीमानलाई झपाझप हानी कुटपिट गर्दै बाहिर लान खोज्दा मैले हारगुहार गर्दा प्रतिवादीहरूको हातबाट श्रीमान फुत्कनु भई ज्यान बच्न गएको हो भनी लेखाई दिएको देखियो । त्यस्तै पीडित टेकबहादुर बुढाले मिति २०६६।९।२९ गते राति २:३० बजेको समयमा म र मेरो घर परिवार सुती निदाएको अवस्थामा घरको ढोका फोरी प्रतिवादीहरू श्याम खत्री, योगेश खत्रीसमेतका मानिसहरूले मलाई ज्यान मार्ने मनसायका साथ धारिलो खुकुरीले हान्न लाग्दा जाहेरवाली श्रीमतीले मलाई बचाउन लाग्दा श्रीमतीसमेतलाई धकेली मलाई खुकुरी प्रहार गर्दा हातको औंलामा लाग्यो । निज प्रतिवादीहरूले लात्ती मुक्का र लाठीसमेतले मलाई कुटपिट गर्दै भिरबाट खोल्सामा फाली अब मर्छ जाउँ भनी त्यहाँबाट गएका हुन् भनी घटना विवरण कागजमा लेखाई दिएको अवस्था देखिने ।

आफूहरू घटना वारदातमा संलग्न नरहेको भनी प्रतिवादीहरूले इन्कारी बयान गरेको भए पनि निजहरूउपर जाहेरवालीले दिएको किटानी जाहेरी, पीडितको शरीरमा घाउचोट रहेको भन्ने शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदन, जाहेरवालीले घटनामा संलग्न रहेका भनी गरेको सनाखत कागज, जाहेरी समर्थन गरी भएको जाहेरवालीको बकपत्रसमेतका मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीहरूको घटना वारदातमा उपस्थिति रहेको भन्ने पुष्टि भएको देखिन्छ । पीडित र काकाका बिच सार्वजनिक अपराध मुद्दा चलेको कारण रिसइवीले झुठ्ठा मुद्दा चलाएको भनी प्रतिवादीहरूले बयानमा लेखाएको भए तापनि सोको पुष्टि मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट हुन सकेको छैन । केवल रिसइवी थियो भनी बयानमा लेखाएकै आधारमा उक्त कुरा प्रमाणमा लिन मिल्ने नदेखिने ।

अब प्रतिवादीहरूबाट भएको प्रहार ज्यान मार्ने उद्योगको कसुरभित्र पर्ने हुँदा निजहरूलाई अभियोग दाबीबमोजिम ज्यान मार्ने कसुरमा सजाय हुनुपर्ने भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरका सम्बन्धमा विचार गर्दा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १५ नं. मा “ज्यान मार्ने मनसायले गोली चलाउने वा बम हान्ने वा घातक हतियारले काट्ने वा मार्नका लागि अरु जुनसुकै कुराको उद्योग गरी मर्नेसम्मको काम गरेकोमा कुनै कारणले ज्यान मर्न पाएको रहेनछ भने त्यस्तो काम गर्ने र गर्न लगाउने तथा सो ठाउँमा गई वचन दिने वा मद्दत गर्नेलाई पाँच वर्षदेखि बाह्र वर्षसम्म कैद गर्नुपर्छ” । भन्ने उल्लेख भएको देखिने ।

घटनास्थलमा धारिलो हतियार प्रयोग भएको भने पनि कुनै धारिलो हतियार बरामद हुन सकेको देखिँदैन । ज्यान मार्ने मनसायले नै पीडितउपर प्रतिवादीहरूले प्रहार गरेको भन्ने पनि मिसिलबाट देखिएको अवस्था छैन । पीडित टेकबहादुरको घा जाँच केस फारामबाट निजलाई लागेको घा चोटबाट निजको ज्यानै मर्नसक्ने भन्ने नदेखिई stable भनी उल्लेख भएको देखिने ।

ज्यान मार्ने उद्योगको कसुर स्थापित हुनका लागि तेस्रो पक्षको उपस्थितिको कारणबाट पीडितको ज्यान मर्न नपाएको भन्ने स्थिति मिसिल प्रमाणबाट निःसन्देह रूपमा पुष्टि हुनु पर्दछ । सो अवस्थाको पुष्टि हुन सकेको देखिँदैन । मार्ने नै मनसाय रहेको भए धेरै संख्यामा रहेका प्रतिवादीहरूले रातको समयमा पीडितलाई कुटपिट गरी खोल्सामा फाली हिँड्नुपर्ने कुनै कारण नदेखिँदा प्रतिवादीहरूउपरको ज्यान मार्ने उद्योगको कसुर खम्बिर हुन सकेको देखिएन । यस अवस्थामा प्रतिवादीहरूलाई अभियोग माग दाबीबमोजिम सजाय हुनुपर्ने भन्ने वादी पक्षको पुनरावेदन जिकिर तथा बहससँग सहमत हुन सकिएन । तर पीडितको शरीरमा घा चोट रहेको भन्ने घा जाँच केस फारामबाट देखिएको र वारदातमा

प्रतिवादीहरूको संलग्नता देखिइरहेको अवस्थामा उक्त घटना कुटपिटको वारदातभित्र पर्ने अवस्थाको देखिन आयो । यसरी मिसिल प्रमाणबाट कुटपिटको वारदात पुष्टि भइरहेको अवस्थामा उक्त वारदातलाई सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम कुटपिटमा परिणत गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालतको फैसला नमिलेकोले बदर गरी अभियोग दाबीबाट सफाई पाउनुपर्ने भन्ने प्रतिवादीहरूको पुनरावेदन जिकिर न्यायोचित नदेखिने ।

अतः विवेचित आधार कारणसमेतबाट प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १५ नं. को कसुरमा सोही महलको १५ नं. बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने अभियोग मागदाबीबाट प्रतिवादीहरूले सफाई पाउने तथा सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ अनुसार पीडित टेकबहादुरले सकार गरेमा कुटपिटतर्फ कारबाही हुने ठहर्छ भनी पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट मिति २०६८।२।२२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : जगदिशप्रसाद भट्ट

कम्प्युटर: चन्द्राबती तिमल्सेना

इति संवत् २०७४ साल चैत्र २१ गते रोज ४ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी, ०६९-CR-०९६६, कर्तव्य ज्यान, गर्भपतन, श्रीबेलास पोखरेलसमेत वि. नेपाल सरकार**

सुरू मोरङ जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलामा गर्भपतन सम्बन्धमा समेत सजाय गरिपाउँ भन्ने अभियोग दाबी भएकोमा सोतर्फ विवेचना नै नगरी कर्तव्य ज्यानतर्फ मात्र विवेचना गरी प्रतिवादीहरूलाई सफाई दिने गरी भएको फैसलामा मुलुकी ऐन, अ.बं. १९२ नं. को त्रुटि देखिँदा बदर गरी, जो जे बुझ्नुपर्छ बुझी मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको २८क. तर्फको अभियोग दाबीसमेत पुग्ने, नपुग्ने के हो ? भन्ने

सम्बन्धमा फैसला गर्नु भनी भएको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको फैसलामा चित्त नबुझी प्रतिवादीहरूको यस अदालतमा पुनरावेदन परेपछि गर्भपतन सम्बन्धमा प्रस्तुत मुद्दा मोरङ जिल्ला अदालतमा पुनः दायर भएको देखिने ।

सुरू मोरङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।१।१० मा पुनः फैसला हुँदा मिसिल संलग्न मृतक बालिका पोखरेलको योनिबाट रगत बगेको कुरा घटनास्थल लास प्रकृति मुचुल्काबाट देखिएको र मृतक को Autopsy Report बाट Phere in evidence of recently eypulsion of fetus from uterus भनी उल्लेख भएको देखिए पनि उक्त रायका विषयमा सम्बन्धित विशेषज्ञले अदालतमा आई बकपत्र गर्न सकेको अवस्था देखिन आएन । अदालतमा बकपत्र गर्ने कसैले पनि यी प्रतिवादीहरूकै संलग्नतामा मृतकको गर्भपतन गराएको विश्वासलायक किसिमले प्रतीत हुन सक्ने गरी लेखाउन नसकेको तथा मृतकले आफ्नी सासूलाई रजस्वला भएको भनेको अवस्थामा मृतकको योनिमा देखिएको रगत रजश्वला भएको कारणले वा गर्भपतन भएको कारणले हो ? सो खुल्न नसकेको एवं मृतकको विवादित गर्भ मृतक आफैँले पतन गराएकी हुन् वा प्रतिवादीहरूसमेतको संलग्नतामा भएको हो सोको यकिनरूपमा वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट प्रमाणित हुन नसकी शंकाको अवस्था देखिएको स्थितिमा शंकाको सुविधा अभियुक्तले पाउने भन्ने फौजदारी कानूनको सर्वमान्य सिद्धान्तसमेतका आधारमा यी प्रतिवादीहरूले नै मृतकको गर्भपतन गराएको भनी ठहर गरी सजाय गर्नु न्यायसम्मत नदेखिँदा प्रतिवादीहरूउपर लिएको मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको २८(क) अनुरूपको अभियोग दाबी पुग्ने नसक्ने भई सबै प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरबाट सफाई पाउने ठहर्छ" भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ । सुरू मोरङ जिल्ला अदालतबाट भएको उक्त फैसलाउपर चित्त नबुझे पुनरावेदन गर्न जाने भनी जिल्ला सरकारी वकिल कार्यालय

मोरङलाई पुनरावेदनको म्याद दिएकोसमेत देखिन्छ । तर उक्त फैसलाउपर वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन अदालत विराटनगरमा पुनरावेदन परेको देखिँदैन । यी प्रतिवादीहरूलाई गर्भपतनतर्फको अभियोगबाट समेत सफाई दिने गरी मोरङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।११।०४ मा भएको फैसलाउपर पुनरावेदन गर्ने म्यादभित्र वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन परेको मिसिलबाट नदेखिँदा फैसलाको ठहर खण्डमा गर्भपतनको समेत विवेचना गर्दै अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहर्छ भनी फैसला भएपछि कर्तव्य ज्यानमा मात्र सफाई दिई गर्भपतनमा केही नबोली आंशिक फैसला भएको भनी सुरु जिल्ला अदालतमा पुनः इन्साफमा पठाउने गरी पुनरावेदन अदालत विराटनगरको २०६९।०८।१९ गतेको फैसलाउपर यस अदालतमा पर्न आएको पुनरावेदनको जिकिरतर्फ प्रवेश गर्नुपर्ने अवस्थासमेत नदेखिने ।

अतः उल्लिखित आधार, कारणबाट सुरु मोरङ जिल्ला अदालतको मिति २०७०।११।०४ गतेको फैसलाउपर वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन अदालत विराटनगरमा पुनरावेदन परेको नदेखिँदा पुनरावेदन अदालत विराटनगरको मिति २०६९।०८।१९ गतेको फैसलाउपर यस अदालतमा प्रतिवादीहरूबाट परेको पुनरावेदनको औचित्य नै समाप्त भएको देखिँदा प्रस्तुत पुनरावेदन खारेज हुने ।  
इजलास अधिकृतः जगदीशप्रसाद भट्ट  
फैसला लेखनमा सहयोग गर्ने इजलास अधिकृतः  
धनसिंह गिरी  
इति संवत् २०७४ साल चैत्र २१ गते रोज ४ शुभम् ।

इजलास नं.४

१

मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री सपना प्रधान  
मल्ल, ०७३-CR-१२८१, जबरजस्ती करणी, नेपाल

सरकार वि. अण्डर माइला भन्ने नेबबहादुर खत्री

पीडित अवोध ६ वर्षीया बालिका नाम परिवर्तित संकेत M-१ ले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष र पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जमा गरेको बयान, जाहेरवालाले पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जमा गरेको बयान, पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण गर्ने डा. गौरव शाहको बकपत्र, घटना विवरण गरिदिने मानिसहरूको घटना विवरण कागजको बेहोरालगायत मिसिल संलग्न प्रमाण कागजातहरूको आधारमा यी प्रतिवादीले पीडित नाम परिवर्तित संकेत M-१ लाई बारीमा अम्बा खान जाउँ भनी फकाई लगी करणी गर्ने उद्देश्यले पीडित नाबालिकाको कट्टु खोलिदिँदा नाबालिका पीडित नाम परिवर्तित संकेत M-१ दिसा पिसाब लाग्यो भनी वारदातस्थलबाट भागी गएको अवस्था देखिएको हुँदा यी प्रतिवादी अण्डर माइला भन्ने नेबबहादुर खत्रीले पीडित बालिकालाई जबरजस्ती करणीको उद्योगसम्म गरेको देखिन आएकोले पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जबाट सुरु जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी मुलुकी ऐन, जबरजस्ती महलको ५ नं. बमोजिम जबरजस्ती करणीको उद्योग ठहर गरी प्रतिवादीलाई सोही महलको ३(१) अनुसार हुने सजायको आधी सजाय कैद वर्ष ५ (पाँच) हुने ठहर्‍याई भएको फैसलालाई अन्यथा मान्न मिल्ने नदेखिने ।

अतः उल्लिखित गरिएको तथ्य, आधार, कारण र प्रमाणहरूको आधारमा यी प्रतिवादीले नाबालिका नाम परिवर्तित संकेत M-१ लाई जबरजस्ती करणी गर्ने प्रयास गरेको देखिएको हुँदा सुरु बाँके जिल्ला अदालतले प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम जबरजस्ती करणीको कसुर ठहर गरी गरेको फैसलालाई केही उल्टी गरी यी प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ५ नं. को कसुरमा सोही ऐनको सोही महलको ३(१) अनुसार हुने सजायको आधी सजाय कैद वर्ष ५ (पाँच) हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जबाट मिति



२०७३।५।२६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: उदवीर नेपाली

इति संवत् २०७४ साल फाल्गुन ३ गते रोज ५ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,**  
०७१- CI-०१४३, हालैदेखिको बकसपत्रको लिखत  
दर्ता बदर दर्ता, राजलाल महतो कोइरी वि. गुन्जेश्वर  
सिंह

मूल पुरुष स्वर्गीय नथुनी महत्तोका दुई पत्नी जेठी भुलुर देवी र कान्छी प्रतिवादी दाना कुमारी भएकोमा जेठी भुलुर देवीतर्फ एक छोरा साधु महतो भएकोमा निजको एक मात्र छोरा वादी राजलाल महतो भएको देखिन्छ। कान्छी दानादेवीतर्फ एक छोरा लखन, निजको पत्नी सावित्री र एक मात्र छोरा प्रतिवादी गुन्जेश्वर सिंह भएकोमा वादी प्रतिवादीहरुबिच मुख मिलेको नै देखिन्छ। यी वादी राजलाल महतो र प्रतिवादी दाना कुमारी र सावित्री कोइरिनबिच मिति २०५७।१२।२७ मा अंशबन्डा भएको देखिन्छ। सो बन्डा लिखतबमोजिम वादी राजलाल महतोका नाउँमा दर्ता रहेको सिराहा असनपुर ७ख को कि.नं. १६ क्षेत्रफल ०-१६-१० मध्ये किताकाट गरी क्षेत्रफल ०-१४-० को जग्गा दानाकुमारीको अंश हक कायम गरी अन्य जग्गाहरु वादी राजलाल र सावित्रीका बिचमा अंशबन्डा गरेको देखिन्छ। सो लिखतबमोजिम कि.नं. १६ किताकाट भई वादी दाबीको कि.नं. १५७ क्षेत्रफल ०-१४-० दानाकुमारीको नाउँमा अंश हक कायम हुन आएको देखिन्छ। सोही कि.नं. १५७ को जग्गा प्रतिवादी दाना कुमारीले प्रतिवादी गुन्जेश्वरलाई मिति २०६४।०५।०२ मा र.नं. ६६९ बाट मा.पो. का. लाहानबाट हालैको बकसपत्र पारित गरिदिएको देखिन्छ। यसप्रकार अंशियारहरुबिच अंशबन्डाको लिखत खडा गरी कानूनबमोजिम सम्बन्धित निकायमा गई पारित गरेको अवस्थामा लिखतबमोजिमको दाबीको

कि.नं. १५७ प्रतिवादी दानाकुमारीको एकलौटी अंश हकको सम्पत्तिको रूपमा रहेको देखिने।

मिति २०५७।१२।२७ को र.नं. ६७८४ को अंशबन्डा लिखतमा प्रतिवादी दानाकुमारीको शेषपछि निजको नाउँमा दर्ता रहेको जग्गा यी वादी राजलाल र सावित्रीले आधा आधा गरी नामसारी दा.खा गरी लिन पाउने भन्ने बेहोरा उल्लेख भएको देखिन्छ। प्रतिवादी दानाकुमारीले आफ्नो जीवनकालमा उक्त जग्गा भोगचलन बिक्री वितरण, हक हस्तान्तरण गर्न नपाउने भनी कुनै सर्त बन्देज लगाएको अवस्था पनि देखिँदैन। आफ्नो अंशभागमा परेको सम्पत्ति आफूखुसी भोग बिक्री वितरण तथा अन्य कुनै पनि प्रकारले हक हस्तान्तरण गर्न पाउने कानूनी हक दानाकुमारीमा रहेकोले प्रतिवादी दानाकुमारीलाई आफू जीवित रहेसम्म आफ्नो अंश हकको सम्पत्ति भोगचलन, बिक्री व्यवहार लेनदेन गर्न नमिल्ने भनी अर्थ लगाउन मिल्ने देखिएन। प्रतिवादी दानाकुमारीको परलोक भइसकेपश्चात् उक्त जग्गा निजकै नाउँमा कायम रहेको अवस्थामा मात्र लिखतको बेहोराबमोजिम हुने हो। निज प्रतिवादी दानाकुमारी जीवित रहुन्जेलसम्म आफ्नो जीवनकालभरी आफ्नो अंश हकको सम्पत्ति आफूखुस गर्न पाउने नै देखियो। कानूनबमोजिम रितपूर्वक अंशबन्डा लिखत पारित गरी छुट्टी भिन्न भई बसेका अंशियारहरुले आफ्नो अंश हकको सम्पत्ति भोगचलन गर्न बिक्री व्यवहार गरी हक हस्तान्तरण गर्न मुलुकी ऐन, दान बकसको १ नं. ले बन्देज गरेको पाइँदैन। प्रतिवादी दानाकुमारीले आफ्नो अंश हकको जग्गा अर्का प्रतिवादी गुन्जेश्वर सिंहलाई हालैको बकसपत्र गरी दिँदा वादीको मन्जुरी लिनुपर्ने अवस्थासमेत नदेखिने।

यसप्रकार प्रतिवादी दानाकुमारीले कानूनबमोजिम रीतपूर्वक अंशबन्डा गरी लिएको सम्पत्ति आफू बाचुन्जेलसम्म आफूखुस गर्न पाउने देखिएको हुँदा निज प्रतिवादीले आफूलाई सेवा स्याहार, हेरविचार गरेबापत अर्का प्रतिवादी गुन्जेश्वर सिंहलाई

उक्त कि.नं. १५७ को जग्गा मिति २०६४।५।२ मा हालैदेखिको बकसपत्र पारित गरिदिएको लिखत कानूनसम्मत लिखत देखिँदा उक्त लिखत वादी दाबीबमोजिम बदर हुन सक्ने देखिँदैन।

अतः विवेचित आधार र कारणबाट सुरु सिराहा जिल्ला अदालतबाट वादी दाबी पुग्ने गरी मिति २०६९।२।२४ मा भएको फैसला उल्टी गरी वादी दाबी नपुग्ने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत राजविराजबाट मिति २०७०।१२।११ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: उदविर नेपाली

इति संवत् २०७४ साल पुस २४ गते रोज २ शुभम्।

इजलास नं. ५

१

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७४-WO-०६८१, उत्प्रेषण, राजनप्रसाद तिवारी वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबारसमेत**

कर्मचारी समायोजन ऐन, २०७४ को दफा ११ को उपदफा (१) मा प्रचलित कानून र यस ऐनमा अन्यत्र जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि प्रदेश र स्थानीय तहमा सेवा प्रवाहको व्यवस्था मिलाउन दफा ६ बमोजिम कर्मचारी समायोजन नभएसम्म नेपाल सरकारले सम्बन्धित सेवा समूह वा उपसमूहको कर्मचारीलाई सङ्घ प्रदेश वा स्थानीय तहमा कामकाज गर्न खटाउन सक्ने र उपदफा (२) मा उपदफा १ बमोजिम कर्मचारी खटाउँदा राजपत्राङ्कित प्रथम श्रेणी वा सोभन्दा माथिका कर्मचारीहरूलाई नेपाल सरकारले र अन्य कर्मचारीलाई सेवा सञ्चालन गर्ने निकायले खटाउने छ भन्ने व्यवस्था रहेको देखिने।

उक्त कानूनी व्यवस्थाबमोजिम राजपत्र अनङ्कित द्वितीय श्रेणीको खरिदार पदमा कार्यरत रिट

निवेदक राजनप्रसाद तिवारीलाई मालपोत कार्यालय, ललितपुरबाट सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको मिति २०७४।११।१८ गतेको निर्णयबमोजिम प्रदेश नं. २ को भूमि व्यवस्था कृषि तथा सहकारी मन्त्रालयमा कामकाज गर्न खटाएको कार्यलाई अन्यथा भन्न मिल्ने नदेखिने।

जहाँसम्म रिट निवेदकले आफ्नो श्रेणी र पद नै नभएको कार्यालयमा कामकाज गर्न खटाइएको भन्ने प्रश्न छ सोतर्फ विचार गर्दा सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयले आफ्नो लिखित जवाफमा रिट निवेदकलाई कामकाज गर्न प्रदेश नं. २ अन्तर्गतको भूमि व्यवस्था कृषि तथा सहकारी मन्त्रालयमा खटाउँदा प्रक्रियागत त्रुटि हुन गई भुलवश यस्तो पर्न गएको भनी रिट निवेदन दाबीलाई स्वीकार गर्दै तर प्रस्तुत रिट निवेदनमा यस अदालतबाट जारी भएको लिखित जवाफ पेस गर्ने सूचना तामेल भएपछि मात्र जानकारी भएको भन्ने बेहोरा उल्लेख गरेको देखिने।

रिट निवेदकलाई कामकाज गर्न प्रदेश नं. २ अन्तर्गतको भूमि व्यवस्था कृषि तथा सहकारी मन्त्रालयमा खटाउने निर्णय मिति २०७४।११।१८ मा भएको र सोसम्बन्धी पत्र रिट निवेदक स्वयंले बुझिलिएको भन्ने लिखित जवाफ बेहोरालाई निवेदकले अन्यथा भन्न सकेको देखिँदैन। सो पत्र प्राप्त भएपछि सोको भोलिपल्ट अर्थात् मिति २०७४।१२।१९ मा रिट निवेदकले त्रुटि सच्याइपाउँ भनी प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयमा निवेदन दर्ता गराएको तर उक्त निवेदनमा सुनुवाइ हुने मौका नै नदिई ऐ. २० गते यस अदालतमा प्रस्तुत रिट निवेदनसाथ उपस्थित भएको देखिन्छ। २०७४।११।१९ मा दिएको निवेदनमा सोही दिन सुनुवाइ हुनुपर्दछ भन्ने निवेदन दाबी युक्तियुक्त देखिँदैन। कुनै पनि निवेदनको सुनुवाइमा मुनासिब माफिकको समय नै नदिई यस अदालतमा प्रवेश गरेको अवस्था देखिँदा निवेदक सफाहात अदालत प्रवेश

गरेको देखिँदैन । यसबाट रिट निवेदकले प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयमा आफूलाई सरुवा गर्ने गरी गरिएको निर्णय र सोसम्बन्धी पत्रमा रहेको त्रुटि सच्याई पाउँ भनी दिएको निवेदनमा सुनुवाइ हुने मुनासिब माफिकको अवधि बाँकी नै रहेको अवस्थामा सो वैकल्पिक उपचार विद्यमान रहिरहेको अवस्थामा प्रस्तुत रिट निवेदनबाट निवेदक मागबमोजिमको उपचार प्रदान गर्न नमिल्ने ।

यसका अतिरिक्त सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको लिखित जवाफमा रिट निवेदकलाई मालपोत कार्यालय, ललितपुरबाट कर्मचारी समायोजन ऐन, २०७४ को दफा ११ बमोजिम २ नं. प्रदेशअन्तर्गतको भूमि व्यवस्था कृषि तथा सहकारी मन्त्रालयमा सरुवा समायोजन गर्ने क्रममा निजको पद प्रक्रियागत त्रुटि हुन गई भुलवश निजको पद राजपत्र अनङ्कित प्रथम श्रेणी हुन गएकोले सो त्रुटिलाई सच्याई जिल्ला समन्वय समिति धनुषामा खरिदार पदमा कामकाज गर्न खटाई सकिएको भन्ने देखिने ।

अतः रिट निवेदकको निवेदन दाबीका सम्बन्धमा निजले त्रुटि सच्याई पाउँ भनी सम्बन्धित मन्त्रालयमा निवेदन दिई वैकल्पिक उपचारको व्यवस्था रहिरहेको अवस्थामा प्रस्तुत रिट निवेदन दायर गरेको देखिएको र निजलाई कामकाज गर्न खटाउँदा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयबाट हुन गएको त्रुटि सच्याई हाल निजको पद र श्रेणी रहेको जिल्ला समन्वय समिति, धनुषामा कामकाज गर्न खटाई सकेको देखिँदा रिट निवेदनको औचित्यसमेत समाप्त भइसकेको स्थितिमा निवेदन दाबीबमोजिम उत्प्रेषणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः तीर्थराज भट्टराई

इति संवत् २०७५ साल फाल्गुण ५ गते रोज १ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७०-८१-०८७२, लिखत दर्ता

बदर, मोहर देवीसमेत वि. विल्टु मण्डल

प्रस्तुत मुद्दाको सन्दर्भमा प्रतिवादी मोहरदेवीको नाउँमा रहेको कि.नं.२४० को जग्गा निजले कसैबाट दान वा बकस वा अपुताली वा निजी आर्जनबाट वा दाइजो पेवा स्वरूप पाएको नभई राजीनामा गरिएको देखिन्छ । दाइजो पेवाबाट पाएको भन्ने कुराको वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय प्रमाण पेस गर्न सकेको देखिँदैन । दाइजो पेवाको रकमबाट खरिद गरेको भन्ने बेहोरा राजीनामाको लिखतमा उल्लेख हुँदैमा स्वतः दाइजो पेवा भन्न मिल्दैन । दाइजो पेवाको रकम को-कसबाट, कति रकम, कुन मितिमा प्राप्त गरेको हो भन्ने निश्चित बेहोरासहित सो तथ्यलाई प्रमाणित गर्न प्रमाणहरू भएमा मात्र लिखतमा लेखिएको सो बेहोरालाई प्रमाणमा लिन सकिने हुन्छ । यस सन्दर्भमा यस अदालतबाट “**लिखतमा दाइजो पेवाको रकमबाट खरिद गरिएको भन्ने बेहोरा उल्लेख हुनु मात्रले पनि दाइजो पेवाबाट प्राप्त भएको भन्ने मानिँदैन । को, कसबाट, कहिले र कति दाइजो वा पेवा प्राप्त भएको हो भन्ने स्रोत खुलाउन सक्नुपर्ने हुन्छ । त्यस्तो प्रमाण पेस गर्ने भार त्यसको जिकिर लिने पक्ष स्वयंले नै वहन गर्नुपर्दछ**” भनी ने.का.प. २०६७, नि.नं. ८२९६, पृ. ८२ मा सिद्धान्त प्रतिपादन भएको पाइन्छ । यसमा मोहरदेवीले दाइजो पेवा प्राप्त गरेको कार्यको वस्तुनिष्ठ प्रमाण पेस गर्न सकेको देखिँदैन । यसरी दाइजो प्रमाणको जिकिर लिने पक्षले त्यसको स्रोत र आधार प्रस्तुत गर्न नसकेको अवस्थामा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६क बमोजिम दाबीको जग्गा सगोलको सम्पत्ति भनी अनुमान गर्नुपर्ने ।

अतः अंश मुद्दा विचाराधीन रहेको अवस्थामा एकासगोलमा रहेको सम्पत्ति हक हस्तान्तरण भएको देखिएको, दाइजो पेवाबाट खरिद गरिएको दाबी प्रमाणित हुन नसकेको र निजी आर्जनबाट खरिद गरेको नदेखिएको अवस्थामा वादी दाबीबमोजिम २ खण्डको १ खण्ड लिखत बदर हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत

जनकपुरबाट मिति २०६९।३।११ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: तीर्थराज भट्टराई

इति संवत् २०७६ साल जेठ २८ गते रोज ३ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०६९-CI-०२२८, नामसारी हक कायम, कृष्णबहादुर कार्की वि. शिवराम कार्की**

मैयाँ कार्कीका नाउँमा दर्ता भएका जग्गाहरू पवित्रा कार्कीका नाउँमा दर्ता गर्न वादी कृष्णबहादुर कार्कीका पिता खड्गबहादुर कार्कीले मिति २०५२।७।३० मा मालपोत कार्यालयमा दिएको निवेदन बेहोराबाट देखिएको छ। उक्त निवेदनमा आफ्नो अंश भाग नापी हुनुभन्दा अगाडि नै आफूले लिइसकेको र आमा मैया कार्कीका नाउँमा दर्ता भएका जग्गाहरू आफ्नो दाजु पूर्णबहादुर कार्कीको अंश भागका जग्गाहरू हुन्। निजको मृत्यु भएकोले उक्त जग्गाहरू आमाका नाउँमा राखिएका हुन्। यी जग्गाहरू आफ्नो छोरा कृष्णबहादुरसमेतको हक लाने होइन भनी बेहोरा लेखाएको देखिन्छ। मिति २०५१।११।१ मा पारित अंश भरपाईको लिखतको बेहोराबाट पनि मैयाँ कार्कीका नाउँमा दर्ता भएका जग्गाहरू पवित्रा कार्कीको नाममा दर्ता गर्दा अर्को पक्षले दाबी नगर्ने गरी पुनरावेदकका पिता खड्गबहादुर कार्कीले अंश छोडपत्र गरिदिएको मिसिल संलग्न अंश भरपाईको प्रतिलिपिबाट देखिने।

यसबाट पुनरावेदक कृष्णबहादुर कार्कीका पिता खड्गबहादुरले नापी हुनुभन्दा अगाडि नै आफ्नो अंश लिइसकेको र विवादित जिल्ला ललितपुर सुनाकोठी गा.वि.स.अन्तर्गतका विवादित कित्ता नं.१३०, १३१ र कि.नं. ८४ समेतका जग्गाहरूको आफ्नो हकदाबी छाडी मालपोत कार्यालय ललितपुरमा निवेदन दिएको तथा विवादित जग्गामा आफ्नो हक छाडी दिएको भन्ने बेहोराको अंश भरपाईको लिखतसमेतका

मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट पुनरावेदकका पिता मूल अंशियार देखियो। निजले अंश छोडपत्र गर्दा पुनरावेदक कृष्णबहादुर कार्की अंशहकबाट वञ्चित भएको भन्ने जिकिर लिन सकेको पनि देखिँदैन। पुनरावेदक कृष्णबहादुरका पिता खड्गबहादुरले नापी हुनुअघि नै आफ्नो अंशहकका जग्गा आफ्ना नाउँमा दर्ता गराएको भन्ने निजको निवेदन बेहोराबाट पनि देखिएको छ। यसरी बाबुले अंश छोडपत्रको कागज गरिसकेको अवस्थामा निजबाट अंश पाउने यी पुनरावेदक कृष्णबहादुर कार्कीले सो अंश भरपाईको सम्बन्धमा अन्यथा दाबी लिन नसकिरहेको अवस्थामा विवादित जग्गामा निजको हक कायम हुन सक्ने अवस्था नदेखिने।

अतः ललितपुर जिल्ला अदालतले विवादित जग्गाहरूमध्ये आधा जग्गामा पुनरावेदक कृष्णबहादुर कार्कीसमेतको हक कायम हुने ठहर गरेको फैसला उल्टी गरी वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०६८।१२।२१ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: तीर्थराज भट्टराई

इति संवत् २०७६ जेठ महिना २७ गते रोज २ शुभम्।

- यसै लगाउको ०६९-CI-०२२९, नामसारी हक कायम, कृष्णबहादुर कार्की वि. शिवराम कार्कीसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

४

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०६७-CI-१४००, दोहोरो लगत कट्टासमेत, जगतमान शाक्य वि. बुद्धरत्न शाक्यसमेत**

यसमा दुई वा सोभन्दा बढी व्यक्तिहरूका नाउँमा दोहोरो दर्ता खेस्ता कायम भएका जग्गाहरूका हकमा मालपोत कार्यालयले एकाको नाउँमा दर्ता कायम गर्न सक्ने हो, होइन ? भन्ने प्रश्नको नै निरूपण हुनुपर्ने देखिन्छ। मालपोत कार्यालय आफ्नो

क्षेत्राधिकारभित्रका जग्गाको तथ्याङ्क राख्ने, जग्गा दर्ता गर्ने, जग्गा वा घरको खरिद बिक्रीको लगत राख्ने, लिखतहरू रजिस्ट्रेसन गर्ने तथा तोकिएका अन्य कार्य गर्न मुख्य जिम्मेवार निकायको रूपमा रहेको हुन्छ । यसरी जग्गाको तथ्याङ्क राख्ने क्रममा तथ्यको भुलबाट, टाइपको गल्ती वा मानवीय भुलका साथै झुट्टा विवरण एवं लापरवाही तथा कहिलेकाहीँ गलत नियतबाट समेत जग्गाको दोहोरो दर्ता हुन सक्दछ । यसरी दोहोरो दर्ता हुँदा एउटै समयमा एउटै जग्गाको दुई वा सोभन्दा बढी दर्ता खरेस्ता कायम रहन जाने हुन्छ, जो हाम्रो कानूनले परिकल्पना गरेको छैन । यस्तो अवस्थामा मालपोत कार्यालय र यसका काम कारबाहीलाई उत्तरदायीपूर्ण बनाई गल्ती कमजोरीलाई सच्याउन मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ७(३) को व्यवस्था गरेको देखिन्छ । उक्त व्यवस्थालाई हेर्दा **“जग्गावालाको नाम, थर, वतन, उमेर वा निजको बाबु, बाजे, पति वा ससुराको नाम थर वा जग्गाको कित्ता नं., क्षेत्रफल वा किसिम फरक परेकोमा वा दोहोरो दर्ता हुन गएकोमा मालपोत कार्यालयले आवश्यक जाँचबुझ गरी सो कुरा सच्याई दर्ता कायम गर्न सक्दछ”** भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिने ।

यहाँ दोहोरो दर्ता भन्नाले एउटै जग्गा दुई वा दुईभन्दा धेरै व्यक्तिका नाउँमा दर्ता हुन गएको भन्ने बुझिन्छ भने जाँचबुझ भन्नाले दोहोरो दर्ता हुन गएका व्यक्तिहरूलाई बुझ्ने तथा सम्बद्ध प्रमाणहरू बुझ्ने भन्ने नै अर्थ गर्नुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दाको सन्दर्भमा वादी बुद्धरत्न शाक्यसमेतले २०४१ सालबाट कारबाही चलाई दर्ता गराएको विवादित कित्ता नं. ६२ को जग्गा हालसाबिक गरिपाउँ भनी मालपोत कार्यालयमा दिएको निवेदनमा विवादित जग्गा हा.सा. मि.नं. ५९९ ग मिति २०६३।९।१२ को निर्णयले हालको काठमाडौँ महानगरपालिका वडा नं. १३ सिट नं. ११०३-१६ कित्ता नं. ३२ को क्षेत्रफल ०.०७६६ वर्ग मिटर हालसाबिक भई जगतमान शाक्यको नाउँमा दर्ता

भएको बुझिन आएकोले उक्त हालसाबिक दर्ता बदर गरी आफ्ना नाउँमा हालसाबिक गरिपाउँ भनी निवेदन दिएपश्चात् उक्त जग्गा दोहोरो दर्ता भएको कुरा मालपोत कार्यालयले जानकारी पाएको देखिने ।

तत्पश्चात् मालपोत कार्यालयले पहिले हालसाबिक दर्ता गरिएका पुनरावेदक प्रतिवादी जगतमान शाक्यलाई ७ दिने म्याद जारी गरी मिति २०६४।११।२० मा तामेल भएकोमा ऐ. २४ गते निजले आफ्नो बेहोरा खुलाई प्रमाणहरूसहित प्रतिउत्तर दिएको देखियो । थप जाँचबुझ गर्ने क्रममा मालपोत कार्यालयले दाबीकर्ता दुवै पक्षको रोहवरमा हकभोग सम्बन्धमा मिति २०६५।३।२० मा स्थलगत सर्जमिन गरी पेस गर्ने भएका आदेशानुसार स्थलगत सर्जमिन मुचुल्का भई मिसिल सामेल रहेको देखिन्छ । यसरी विवादित जग्गाको सम्बन्धमा दाबीकर्ताको रोहवरमा विपक्षीसमेतलाई सूचना दिई झिकाई निजका समेत कुरा सुनी दुवै पक्षको रोहवरमा स्थलगत सर्जमिन गरी अन्य थप प्रमाण कागजातहरूको अध्ययन विश्लेषण गरी ठहर फैसला गरेको मालपोत कार्यालय कलंकीको निर्णयसमेतबाट देखिन आउने ।

यसरी कुन पक्षको नाउँमा रहेको विवादित जग्गाको दर्ता कायम गर्ने हो भन्ने सम्बन्धमा पर्याप्त जाँचबुझ र प्रेषित प्रमाणहरूको मूल्याङ्कन गरी मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ७(३) बमोजिम दोहोरो दर्ता सच्याई दर्ता कायम गर्न सक्ने नै देखिन्छ । यस सम्बन्धमा पुनरावेदक प्रतिभादेवी पोखरेलसमेत विपक्षी श्री ५ को सरकार, वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयसमेत भएको ने.का.प. २०४५, अङ्क ३, निर्णय नं. ३४११ मा **“मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ७(३) मा दोहोरो दर्ता हुन गएकोमा मालपोत कार्यालयबाट नै आवश्यक जाँचबुझ गरी सो विषयमा निर्णय गर्ने अधिकार प्रदान गरेको देखिँदा कानूनबमोजिम एक व्यक्तिका नाउँमा दर्ता कायम राखी अरु कानूनबमोजिम गर्नु भनी मालपोत**

**कार्यालयका नाउँमा परमादेशको आदेश जारी हुने”**  
भन्ने सिद्धान्तसमेत प्रतिपादन भएको देखिने ।

तसर्थ मालपोत कार्यालयले प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी गरेको फैसला मिलेको छ वा छैन भनी प्रमाणको विवेचना गरी फैसला गर्नुपर्नेमा मालपोत कार्यालयको अधिकार नभएको हुँदा हक बेहकमा सुनाउनेतर्फ कारबाही चलाउन मालपोत कार्यालय पठाउने गरी भएको पुनरावेदन अदालतको फैसला मुनासिब मान्न नमिल्ने ।

अतः विवादित किता नं. ६२ को जग्गा दोहोरो दर्ता भएको देखिएको, यस्तो दोहोरो दर्ता रहिरहन सक्ने हाम्रो कानूनी व्यवस्था रहेको नदेखिएको, कुनै जग्गा दोहोरो दर्ता हुन गएको देखिएमा मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ७(३) ले त्यस्तो त्रुटि सच्याई एकाको नाउँमा मात्र दर्ता कायम गराउन मालपोत कार्यालय सक्षम नै देखिँदा सोही ऐनले दिएको अधिकार प्रयोग गरी गरेको मालपोत कार्यालयको मिति २०६५।५।११ को निर्णय बदर गरी हकबेहकमा अदालत जान सुनाउनुपर्नेमा निर्णय गरेको मिलेन भनी उक्त मालपोत कार्यालयको निर्णय उल्टी गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०६७।५।८ को फैसला मिलेको नदेखिँदा बदर गरिदिएको छ । अब जे जो बुझ्नुपर्छ बुझी ठहरेबमोजिम फैसला गर्नु भनी पुनः निर्णयको लागि प्रस्तुत मुद्दाका पक्षहरूलाई पुनरावेदन अदालत पाटनमा हाजिर हुन जानु भनी तारेख तोकी प्राप्त मिसिलहरूसमेत नियमानुसार पुनरावेदन अदालत पाटनमा पठाइदिने ।  
इजलास अधिकृत : तीर्थराज भट्टराई  
इति संवत् २०७६ साल जेठ २७ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. ६

१

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०७२-RC-०१४१, ०७३-**

**CR-०३०७, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. कल्पना नकर्मी, कल्पना नकर्मी वि. नेपाल सरकार**

प्रतिवादी कल्पना नकर्मीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको साबिती बयान भौतिक सबुद प्रमाणबाट समेत पुष्टि भइरहेको पाइन्छ । किटानी जाहेरी, लासजाँच मुचुल्का, पोस्टमार्टम रिपोर्ट, मौकामा बुझिएका व्यक्तिहरूको अदालतमा समेत भएको बकपत्रबाट प्रतिवादीले मृतकलाई विकास तथा सन्तोष भन्ने व्यक्तिको सहयोगमा कर्तव्य गरी मारेको पुष्टि भएको देखिने ।

अतः उपर्युक्त आधार, प्रमाण र कारणबाट किटानी जाहेरी, प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको साबिती बयानलाई मिसिल संलग्न भौतिक सबुद प्रमाणबाट समेत पुष्टि भएको, लासजाँच मुचुल्का, पोस्टमार्टम रिपोर्ट, मौकामा बुझिएका व्यक्तिहरूको अदालतमा भएको बकपत्रबाट प्रतिवादी कल्पना नकर्मीले मृतकलाई कर्तव्य गरी मारेको पुष्टि भएकाले निजलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं.बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याई गरेको सुरु कास्की जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत पोखराबाट मिति २०७२।३।८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद भट्टराई

कम्प्युटर: विनोदकुमार बनिया

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ६ गते रोज ६ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०६७-CI-०६१३, जग्गा खिचोला, फुन्टबहादुर साकी वि. हिरे साकी**

अब वादी फुन्टबहादुर साकीको फिराद पत्रको बेहोरा हेर्दा मेरो नाममा दर्ताको प्युठान चुँजा गा.वि.स. वडा नं.१ कि.नं.२८७ ज.वि.२६-१३-०-२ को अं.२ मिटर जग्गा आफ्नो कि.नं.२८८ मा मिसाएका, मेरो

उक्त कि.नं.२८७ को उत्तरतर्फ अन्दाजी ४ मिटर विपक्षीको कि.नं.२८६ मा, ऐ.को मेरो कि.नं.९१३ को ज.वि.२५-३-०-३ मध्ये पूर्व दक्षिणतर्फ अं.५ मिटर जग्गा विपक्षीको कि.नं.२९० ज.वि.७-१३-१-२ मा, मेरो श्रीमतीको नाउँको ऐ.कि.नं.४०८ को क्षे.फ.५-१२-१-३ को जग्गा विपक्षीको कि.नं.४०७ को पूर्व दक्षिणतर्फ अं.३ मिटर, उत्तरतर्फ अं.३ मिटर र ऐ.४०८ को पश्चिम दक्षिणतर्फ अं.४ मिटर जग्गा विपक्षीको कि.नं.४०९ मा र ऐ.४०८ को पश्चिमतर्फ अं.२ मिटर विपक्षीको कि.नं.४११ मा मिसाई घर गोठसमेत बनाई खिचोला गरेकाले खिचोला मेटाई चलन चलाई पाउँ भन्ने नै वादी फुटबहादुर सार्कीको मुख्य फिराद दाबी रहेको देखिन्छ । मैले वादीको कुनै जग्गा खिचोला गरेको छैन, आफ्नै जग्गामा घर गोठ बनाएको हुँदा फिराद बेहोरा काल्पनिक एवं मनगढन्ते भएकोले खारेज गरिपाउँ भन्ने प्रतिवादी हिरे सार्कीको प्रतिउत्तर जिकिर रहेको देखिने ।

पुनरावेदक वादी फुटबहादुर सार्कीले यसै मुद्दामा दाबी गरेको कि.नं.२८७ र ४०८ को जग्गामा यिनै प्रत्यर्थी प्रतिवादीउपर प्युठान जिल्ला अदालतमा २०५३ सालमा दायर गरेको जग्गा खिचोला मुद्दामा मिति २०५४/२/१५ मा वादी दाबी छाडी मुद्दा मिलापत्र गरेको कुरा फिराद पत्रको प्रकरण ४ बाट स्पष्टरूपमा देखिन आएको अवस्थामा सोही कित्ताहरूको जग्गामा सोहीतर्फबाट खिचोला गरेको भनी प्रस्तुत फिराद दायर गरेको भन्ने देखिने ।

पुनरावेदक वादी फुटबहादुर सार्कीले एक पटक मुद्दा दायर गरी कानूनी तवरबाट मिलापत्र गरिसकेको विषयमा पुनः सोही तथ्यमा सोही पक्षसँग मुद्दा गर्न मिल्ने हुँदैन । स्वयं पक्षहरूले आफ्नो मुद्दामा आफैँले सहमतिबाट अदालतमा मिलापत्र गरेको स्थितिमा अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म सो मिलापत्रको परिणाममा पक्षहरू बन्धनकारी हुने हुन्छ । सो मिलापत्रलाई कानूनी प्रक्रियाबाट बदर गराउन सकेको भन्ने पनि मिसिलबाट देखिएन । एकपटक वादीले

मिलापत्रबाट टुङ्गो लगाइसकेको विषयमा पुनः सोही पक्षसँग मुद्दा गर्दै जाने हो भने मुद्दाको अन्तिम कहिले हुँदैन । वस्तुतः मुद्दाको अन्तिमताको सिद्धान्तबाट पनि वादीले मिलापत्रबाट भएको विषयको हदसम्म लिएको दाबी तथा पुनरावेदन जिकिर सो हदसम्म कानूनसङ्गत देखिन आएन । मिलापत्रबाट टुङ्गो लागिसकेको जग्गाको हदसम्मको फिराद दाबी खारेज हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरको फैसला मिलेकै देखिँदा वादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार र कारणबाट सुरु प्युठान जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरबाट मिति २०६६।१०।६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः महेन्द्रप्रसाद भट्टराई

कम्प्युटरः अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७४ साल वैशाख २५ गते रोज २ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७३-CR-०५८९, गोवध (चौपाया गोरु काटी मारेको), नेपाल सरकार वि. मदनकुमार तामाङसमेत**

प्रतिवादीहरू मदनकुमार तामाङ र परिवर्तित नाम "शेखर" लाई समेत अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी पक्षको पुनरावेदन जिकिर रहेकोतर्फ विचार गर्दा, यस मुद्दाका प्रतिवेदक प्र.स.नि. मुन्ना सिंहले धनकुटा जिल्ला अदालतसमक्ष वारदात घटना आफूले देखेको होइन भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ । प्रतिवादी मदनकुमार तामाङको घरको खानतलासी मुचुल्का हेर्दा अपराधसँग प्रमाण लाग्ने चिजवस्तु केही पनि फेला नपरेको भन्नेसमेतको बेहोरा उल्लेख भएको देखिन्छ । प्रतिवादी मदनकुमार तामाङले धनकुटा जिल्ला अदालतसमक्ष बयान गर्दा म ससुराली घरमा पुग्दाखेरि ससुरा बुबाले गोरु (बाच्छो) काटिवरी मासु

टुक्र्याउँदै हुनुहुन्थ्यो। उक्त मासु मैले भाग मात्र लगाएको हो भन्नेसमेतको बेहोरा उल्लेख गरेको देखिन्छ। त्यस्तै सहअभियुक्त परिवर्तित नाम "शेखर" ले सुरु अदालतसमक्ष बयान गर्दा बाच्छो काट्ने काम भिनाजु मदनबहादुर तामाङले नगरी मेरो बुबाले मात्र गरेको हो भन्नेसमेतको बेहोरा उल्लेख गरेको देखिने।

सहअभियुक्त दालकपा भन्ने मानबहादुर तामाङले धनकुटा जिल्ला अदालतसमक्ष गरेको बयानमा बाच्छो मैले एकलै काटेको हो। बाच्छोको मासु टुक्र्याई सकिवरी भाग लगाउन आँट्दा मेरो ज्वाइँ मदनकुमार आए। तर निजले केही पनि गरेनन् भन्नेसमेतको बेहोरा उल्लेख भएको देखिन्छ। परिवर्तित नाम "शेखर" वारदातको दिनमा ४ बजेतिर विद्यालयबाट घर फर्की, त्यसपश्चात् दिदीको घरमा गई बेलुका मात्र घर फर्केको भनी खुलाएको पाइन्छ। मुख्य प्रतिवादी दालकपा भन्ने मानबहादुर तामाङले अदालतमा समेत एकलैले बाच्छो काटी मारेको हुँ भनी कसुरमा साबित भई बयान गरेका छन्। तसर्थ, प्रतिवादीहरू पछि वारदातस्थलमा आइपुगेका हुन् भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ। गोरु (बाच्छो) मार्ने क्रियामा प्रतिवादीहरू मदनकुमार तामाङ र परिवर्तित नाम "शेखर" समेतको प्रत्यक्ष संलग्नता रहेको भन्ने नदेखिने।

तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन, चौपायाको महलमा भएको कानूनी व्यवस्थाअनुसारका अभियोग दाबीका कसुर प्रतिवादीहरूले गरेको भन्ने तथ्य प्रमाणबाट पुष्टि हुन आएको छैन। दाबीको कसुरमा इन्कारी भई अदालतमा बयान गरेको पाइन्छ। प्रतिवादीहरूसमेतको संलग्नतामा बाच्छो काटी मारेको भन्ने प्रत्यक्षदर्शी गवाह छैन। अनुमान र शंकाको भरमा कसुरदार ठहर्‍याउन फौजदारी न्यायको सिद्धान्तले मिल्ने देखिँदैन। तसर्थ, प्रतिवादीहरू मदनकुमार तामाङ र परिवर्तित नाम "शेखर" लाई अभियोग दाबीबाट सफाई दिने गरी पुनरावेदन अदालत धनकुटाबाट भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिल्ने

नदेखिने।

अतः माथि विवेचित तथ्य, आधार, कारणसमेतका पृष्ठभूमिमा धनकुटा जिल्ला अदालतले प्रतिवादीहरू मदनकुमार तामाङ र परिवर्तित नाम "शेखर" लाई अभियोग दाबीबाट सफाई दिने गरी गरेको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत धनकुटाबाट मिति २०७३।०२।३१ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: कृति थापा

कम्प्युटर: देबिना खतिवडा

इति संवत् २०७५ साल साउन २२ गते रोज ३ शुभम्।

४

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७३-CR-१४३६, कर्तव्य ज्यान, प्रल्हाद खत्री वि. नेपाल सरकार

वारदात मिति २०७३/१/१४ गतेका दिन प्रतिवादी र निजका बाबु गणेशबहादुर खत्री (मृतक) छिमेकीको विवाह भोजमा गई मादक पदार्थ सेवन गरेको, पहिले मृतक घरमा आएको र त्यसपछि मात्र प्रतिवादी घरमा आई गई वस्तुलाई घाँसपात नदिएको विषयमा बाबु छोराबिच विवाद हुँदा घटना घटेको देखिन्छ। प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतमा समेत बयान गर्दा विवाह भोजबाट आफू फर्केर आउँदा बुबा अगाडि नै आइसकेको र गई वस्तुलाई किन घाँस पानी हालिनस् भन्दै गाली गर्न थालेकाले आफूलाई खपिनसक्नु रिस उठी बुबालाई एक्कासी ठेल्ल पुगेछ। त्यसरी ठेल्दा बुबा दलानबाट लडी आँगनमा पुग्दा ढुङ्गामा टाउको ठोक्किएको हुँदा चोट लागेको र सोही चोटको उपचार गराउन बोया स्वास्थ्य चौकी लगेको अवस्थामा मृत्यु भएको हो। बुबालाई मार्नुपर्नेसम्मको मेरो कुनै रिसइवी थिएन। बुबाले गाली गर्दाको अवस्थामा आफूलाई रिस उठी एक्कासी आवेशमा आई घटना घट्न पुगेको हो भनी आफ्नो कर्तव्यबाट मृतकको मृत्यु भएको तथ्यमा साबित भई बयान गरेको देखिन्छ। मृतकको शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट मृतकको



मृत्यु Head Injury का कारण भएको हो भन्ने उल्लेख भएको पाइने।

वारदातको बखत प्रतिवादीले जोखिमी हतियारसमेत प्रयोग गरेको देखिँदैन। जाहेरवाली तेजकुमारी खत्री, वस्तुस्थिति मुचुल्काका विनोद दाहाल र कर्णबहादुर थापा मगरसमेतले बकपत्र गर्दा प्रतिवादीकै कुटपिटका कारण मृतकको मृत्यु भएको हो भन्ने देखिन्छ। प्रतिवादी र मृतकको बिचमा मृतक गणेशबहादुर खत्रीको ज्यानै लिनुपर्नेसम्मको पूर्वझुकी केही देखिँदैन। गाई वस्तुलाई घाँस पानी नदिएको भनी मृतकले प्रतिवादीलाई गाली गरेको र सोही गाली सहन नसकी प्रतिवादीले मृतकलाई कुटपिट गर्दा मृतक दलानबाट आँगनमा झरेको र सोही कुटपिटको जरियाबाट गणेशबहादुर खत्रीको मृत्यु भएको स्पष्ट रूपमा पुष्टि भएको देखिने।

प्रस्तुत मुद्दामा ज्यान मार्नको मनसाय, ज्यान लिनुपर्नेसम्मको झुकी र लुकी चोरीकन हानेको पनि मिसिल संलग्न प्रमाणबाट देखिँदैन। प्रस्तुत वारदात पूर्वनियोजित हत्याको वारदात होइन। मृतक गणेशबहादुर खत्रीले गाई वस्तुलाई घाँस पानी नदिएको भनी प्रतिवादीलाई गाली गरेको र सोही गाली सहन नसकी तत्काल आवेशमा आई मृतकलाई कुटपिट गर्दा सोही कुटपिटको जरियाबाट गणेशबहादुर खत्रीको मृत्यु भएको देखिँदा प्रस्तुत वारदात ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. अन्तर्गतको कसुर देखिन आयो। प्रस्तुत वारदात न त पूर्वनियोजित न त भवितव्य नै परेको अवस्था छ। पूर्वरिसझुकीले मार्नुपर्ने नियत नभए पनि तत्काल उठेको रिसबाट आवेशमा आई मुक्का प्रहार गरेको देखिँदा प्रस्तुत वारदात आवेश प्रेरित हत्या (Prevocational Homicide) को श्रेणीभित्र पर्ने नै देखियो। प्रतिवादी प्रल्हाद खत्रीले मृतक गणेशबहादुर खत्रीलाई मार्ने मनसाय (Mens Rea) रहने गरी पूर्वरिसझुकी रहेको मिसिल संलग्न प्रमाणबाट नदेखिने।

अतः माथि विवेचित आधार प्रमाणबाट प्रतिवादी प्रल्हाद खत्रीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको

१४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय हुने ठहर्‍याएको सुरुको फैसलालाई सदर गरेको उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासको मिति २०७३/९/२६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: विद्याराज पौडेल

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १३ गते रोज ५ शुभम्।

५

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०६८-CR-०४८३, सरकारी छाप दस्तखत कित्ते, दिपक खनाल वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी दिपक खनालले न्यू लाइफ उच्च माध्यमिक विद्यालयमा भर्ना भई पढी १२ कक्षाको परीक्षा दिएकोमा विजनेस म्याथमा फेल भएको र पूरक परीक्षामा समेत फेल भएपछि मनोज गिरीसँग भेट हुँदा निजले चिनेको शंकर देवकोटामार्फत पुनर्योग गरे सजिलै पास भइन्छ भनी भनेकाले निज मनोज गिरीलाई रु.२५,०००/- दिई निजले नै मेरा नाउँका प्रमाण पत्रहरू कलंकीमा ल्याइदिएको थियो, उक्त प्रोभिजनल सर्टिफिकेटमा मेरो जन्ममिति नमिलेकोले सच्याउन जाँदा मेरो नामका उक्त प्रमाणपत्रहरू नक्कली हुन् भनी पक्राउ परेको हुँ भनी मौकामा बयान गरेको तर अदालतमा बयान गर्दा भने मनोज गिरीलाई रु.२५,०००/- दिएको भन्नेमा इन्कार रही निज मनोज गिरीमार्फत रिटोटलिङ गराएको र निजले नै प्रमाणपत्रहरू ल्याइदिएको हो भनी बयान गरेको देखिने।

उक्त विवादित लिखतहरू जाँच भई आएको प्रहरी विधिविज्ञान प्रयोगशालाको परीक्षण प्रतिवेदनबाट मौकामा प्रतिवादीबाट बरामद भएको दिपक खनालको नाउँको Migration Certificate, Provisional Certificate र Academic Transcript हरूको सम्बन्धित निकायबाट जाँचन पठाइएको नमुना प्रमाणपत्रसँग तुलना गरी परीक्षण गर्दा आकार बमोजिमसमेतका आधारमा फरक देखिएको

(do not tally) भन्ने बेहोरा देखिन आएको छ । विवादित प्रमाणपत्रहरूमा प्रयोग भएको Hologram Sticker र rubberstamp समेत आकार, बनौट र अक्षरहरूबिचको दुरी (being difference in shape size design and spacing of letters) का आधारमा फरक देखिएको भनी उक्त परीक्षण प्रतिवेदनमा उल्लेख गरिएको छ । साथै विवादित प्रमाणपत्रहरूमा रहेको हस्ताक्षर र नमुना हस्ताक्षरबिच rhythm, movement and line quality का आधारमा भिन्नता रहेको भन्नेसमेत उक्त प्रतिवेदनबाट देखिएकोले विवादित उक्त प्रमाणपत्रहरू झुठ्ठा र नक्कली हो भन्ने देखिने ।

उक्त परीक्षण प्रतिवेदनसमेतबाट प्रतिवादी दीपक खनालले १२ कक्षाको Business math मा फेल भएपछि सो फेल भएको विषयमा समेत पास भएको बेहोराको झुठ्ठा प्रमाणपत्रहरू बनाउने कार्य गरेको देखियो । विवादित प्रमाणपत्रहरू प्रतिवादी आफूले लिएको नभई मनोज गिरी भन्ने व्यक्तिले ल्याइदिएको भनी प्रतिवादीले बयान गरे तापनि त्यस्तो विवादित प्रमाणपत्रबाट निज प्रतिवादीलाई बाहेक अरु कसैलाई फाइदा हुने नदेखिने ।

प्रतिवादीलाई मात्र फाइदा हुने र निजसँगै रहने प्रमाणपत्रहरू अरु कसैले कित्ते गरी दिएको भन्न मिल्ने अवस्था नहुँदा प्रतिवादी दीपक खनालले मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महलको १ नं. विपरीतको कसुर गरेको देखिने ।

मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महलको ९ नं. मा बिगो नखुलेको मुद्दामा ५०।- रूपैयाँसम्म जरिवाना गर्नुपर्छ भन्ने उल्लेख भई ऐजन महलको १२ नं. मा सरकारी अड्डाको छाप वा सरकारी काममा सरकारी कर्मचारीको छाप दस्तखत वा सो छाप दस्तखत भएको सरकारी कागज कित्ते गर्नेलाई थप १ वर्ष कैद गर्नुपर्छ भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ । तसर्थ प्रस्तुत मुद्दामा यी प्रतिवादीले पेस गरेको प्रमाणपत्रहरूबाट बिगो खुल्ने अवस्था नदेखिएकोले निज प्रतिवादीलाई उल्लिखित

कानूनी व्यवस्थाबमोजिम कित्ते कागजको महलको ९ नं. बमोजिम रु.५०।- जरिवाना गरी सरकारी छाप दस्तखत कित्ते गरेकोमा ऐजन महलको १२ नं. बमोजिम थप थप १(एक) वर्ष कैदसमेत हुने ठहर गरेको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला मिलेकै देखिने ।

प्रतिवादी दीपक खनाललाई कित्ते कागजको महलको १२ नं. बमोजिम थप १(एक) वर्ष कैद हुने ठहर भए तापनि निज प्रतिवादीले कसुर गर्दाको समयमा १८ वर्षको कलिलो उमेरको रहेको देखिन्छ । मनोज गिरीले शंकर देवकोटामार्फत पुनर्योग गराएमा सजिलै पास भइन्छ भनेको हुँदा निजको भनाइको प्रभावमा परी यी प्रतिवादीबाट पहिलो पटक अन्जानवश कसुर हुन गएको देखिन्छ । निज प्रतिवादीले अध्ययन कार्यलाई निरन्तरता दिई NAGARJUNA COLLEGE, पुल्चोक ललितपुरबाट Bachelor in Information Management (BIM) उत्तीर्ण गरिसकेको भन्ने इजलाससमक्ष प्रस्तुत गरेको निजको प्रमाणपत्रको प्रतिलिपिबाट देखिन आएको छ । तसर्थ निज प्रतिवादीले कसुर गर्दा १८ वर्षको कलिलो उमेरको रहेको, अन्य व्यक्तिको भनाइमा लागि कार्य गर्दा अपराधको परिस्थिति सिर्जना हुन गएको, पहिलो पटक अन्जानवश कसुर गरेको अवस्था देखिएकोसमेतलाई विचार गर्दा मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको ११क नं. अनुसार कैदबापत रकम तोकी प्रतिवादीबाट सो रकम दाखेला गरेमा ऐ. ११क नं. को देहाय (३) बमोजिमको प्रक्रिया पूरा गरी कैदको लगत कट्टा गरिदिने सुविधा निज प्रतिवादी दीपक खनाललाई प्रदान गरिदिन उपयुक्त हुने देखिने ।

अतः प्रतिवादी दीपक खनाललाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी भएको सुरु भक्तपुर जिल्ला अदालतको फैसला उल्टी गरी निज प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महलको १, ९ र १२ नं. विपरीतको कसुरमा सोही महलको ९ नं. बमोजिम रु.५०।- जरिवाना र सोही महलको १२ नं. बमोजिम

थप १(एक) वर्ष कैदसमेत हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६८।१।३० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्‍छ, साथै निज प्रतिवादीलाई १(एक) वर्ष कैदसमेत हुने ठहर भए तापनि मुलुकी ऐन, दण्डसजायको ११क नं. अनुसार कैदबापत रकम तोकी निज प्रतिवादीबाट सो रकम दाखेला गरेमा ऐ. दण्ड सजायको ११क नं. को देहाय (३) बमोजिमको प्रक्रिया पुर्‍याई कैदको लगत कट्टा गरिदिने सुविधा प्रदान गरिदिने ।

इजलास अधिकृत: दिपेन्द्र थापा मगर

कम्प्युटर: संजय जैसवाल

इति संवत् २०७५ साल फाल्गुण ६ गते रोज २ शुभम् ।

**इजलास नं.७**

१

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७१-WO-०४३८, उत्प्रेषण, डा. हरिशचन्द्र न्यौपाने वि. नेपाल मेडिकल काउन्सिल बाँसबारी, काठमाडौँसमेत**

मेडिकल काउन्सिल नियमावली, २०२४ को नियम २०(ग) बमोजिम मेडिकल कलेजले भर्ना लिन सक्ने अधिकतम विद्यार्थी संख्या निर्धारण गर्न मेडिकल काउन्सिलले सक्ने नै देखिन्छ । यसरी विद्यार्थी भर्ना सिट संख्या निर्धारण गर्नुभन्दा अगाडि ऐ. नियमावलीको नियम २०(ख) बमोजिम स्वीकृत प्राप्त कलेजहरूको पूर्वाधार विकास, शिक्षाको गुणस्तरसमेतका विविध पक्षमा मूल्याङ्कनको लागि काउन्सिलले गठन गरेको टोलीले Accreditation standards मा उल्लिखित Criteria अनुसार कलेजको जग्गाको क्षेत्रफल, कलेजको शैक्षिक, प्रशासनिक भवन र आवासीय भवन, प्रयोगशाला, औजार उपकरण सेवासम्बन्धी तथ्याङ्क, शिक्षक, चिकित्सक, नर्स, प्रशासन तथा अन्य जनशक्ति विवरण, विगतको विद्यार्थी संख्या, वार्षिक परीक्षामा

विद्यार्थीको उत्तीर्ण प्रतिशत, अस्पतालको बेड संख्या, अधिको निरीक्षण, मूल्याङ्कन एवं विश्लेषण गरी सिफारिस गरेको देखिन्छ । कानूनको परिधि नाघी सिट संख्या घटाइदिएको भन्ने कुनै कारण र आधार देखिएन । यसका अतिरिक्त प्रस्तुत विवाद २०७१/०७२ शैक्षिकसत्र अवधिको भर्नासम्बन्धी देखिएकोमा अब अहिले आएर यसको सान्दर्भिकता र प्रयोजनसमेत नदेखिएको हुँदा निवेदन मागबमोजिम आदेश जारी गर्नु मनासिब नदेखिने ।

अतः निवेदन दाबीबमोजिम त्रिभुवन विश्वविद्यालय, चिकित्साशास्त्र अध्ययन संस्थानको मिति २०७१।५।२४ को निर्णय तथा नेपाल मेडिकल काउन्सिलको मिति २०७१।५।२७ को निर्णयसमेतका काम कारबाहीहरू कानून प्रतिकूल भएको नदेखिँदा उत्प्रेषणको आदेश जारी गरी सो निर्णय बदर गर्न नमिल्ने ।

स्वास्थ्य शिक्षामा गुणस्तर कायम राखी जनस्वास्थ्य सुनिश्चित गर्नुपर्ने कुरामा विमति हुन सक्दैन । शैक्षिक गुणस्तर कायम राख्ने अभिप्रायले यसको मापदण्ड निर्धारण गरी कार्यान्वयनमा ल्याइनु आवश्यक हुन्छ । त्यसैले मापदण्ड निर्माण गरी प्रयोगमा ल्याउने गरिएको पाइन्छ । यसरी जारी गरिने मापदण्ड भने तर्कसङ्गत, व्यावहारिक र अनुमानयोग्य (predictable) परिणाम दिने किसिमको हुनुपर्दछ । अर्कोतर्फ उही मापदण्ड कायम छँदाछँदै कहिले एउटा परिमाण र कहिले अर्कै परिणाम आउने गरी व्याख्या र प्रयोग गरिनु पनि उचित हुँदैन । प्रयोगमा एकरूपता देखिनु वाञ्छनीय छ । त्यसैले स्तरीय शैक्षिक विकास हुने अवस्था सुनिश्चित गर्ने, शैक्षिक संस्थाका सञ्चालकहरूले गरेको लगानीको सुरक्षा हुने, गुणात्मक शिक्षाको सुनिश्चितता कायम गर्ने र विद्यार्थीहरूलाई समेत अनुकूल शैक्षिक वातावरण प्राप्त हुने गरी भर्ना र अध्यापनसम्बन्धी मापदण्ड तयार गरी कार्यान्वयनमा ल्याउनु तथा यसको प्रयोगमा नियमितता र एकरूपता

कायम गर्नु गराउनु भनी विपक्षीहरूका नाममा निर्देशनात्मक आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: शिवप्रसाद आचार्य

कम्प्युटर: हर्क माया राई

इति संवत् २०७५ साल आषाढ १४ गते रोज ५ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७२-CR-२१२६, जबरजस्ती करणी तथा हाडनाता करणी, बिमलकुमार राई वि. नेपाल सरकार**

मिति २०७१/२/१४ गते मेरो आमा र म घरको बरण्डामा सुती म निदाएको बेलामा मेरो पिसाब फेर्ने ठाउँमा घोचेको जस्तो गरी दुखेकोले म बिउँझिँदा मलाई धेरै दुखेकोले म रोई कराई गरेको बेला आमा ट्वाइलेट जानु भएको रहेछ । मेरो सहोदर बाबु बिमलकुमार राईले मलाई जबरजस्ती करणी गरेको हो भनी पीडित जेनिसाले मौकामा कागज गरेको देखियो । यी पीडितको मौकामा कागज हुँदा जाहेरवाली करुणासमेत रोहवरमा बसेको देखिन्छ । जाहेरवाली र पीडित जेनिसाले अदालतसमक्ष बकपत्र गर्दा मौकामा दिएको जाहेरी र मौकाको कागजको विपरीत प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी गरेको होइन भनी बकपत्र गरेको पाइन्छ । पीडितको शरीरमा लडेर घाउ चोट लागेको हो भनी जाहेरवालीले अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरे पनि सो चोटपटक के कसरी लागेको हो भन्ने विश्वसनीय आधार कारण निजले देखाउन सकेको पाइएन । मिसिल संलग्न पीडितको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदनबाट पीडिताको शरीरमा घाउ चोट लागेको, पीडिताको योनि र गुद्धारको बिचमा रातो भएको देखिएको, दायाँ काखी र पाखुरामा चिथोरेको दाग देखिएको, पीडिताको कपडा च्यातिएको, पीडिताको हाइमन झिल्ली च्यातिएको भन्ने देखिन्छ । पीडिताको मिसिल संलग्न रहेको भेजिनल स्वाव परीक्षण प्रतिवेदनमा A-P Test for screening of semen 'Weak Positive' भन्ने बेहोरा उल्लेख भएको पाइने ।

मौकाको जाहेरी दरखास्त, पीडितको मौकाको कागज र निज पीडितको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदनबाट पीडितसँग करणी भएको अवस्था देखिएको छ । प्रतिवादीले अदालतसमक्ष इन्कारी बयान गरे तापनि मौकाको जाहेरी, पीडितको मौकाको कागज र पीडितको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदन जस्ता भौतिक एवं परिस्थितिजन्य प्रमाणको आधारमा प्रतिवादीको मौकाको साबिती बयानलाई प्रमाणमा ग्रहण गर्न मिल्ने नै देखियो । वारदात नै नभएको अवस्थामा श्रीमान् श्रीमतीबिचको सामान्य झै-झगडा, वादविवादका कारण आफ्नै श्रीमती र नाबालिका छोरीले आफ्नै श्रीमान् र बाबु नाताका यी प्रतिवादी विरुद्ध जबरजस्ती करणीजस्तो गम्भीर आरोप लगाउनुपर्ने अवस्था हुँदैन । पीडित र जाहेरवालाले आफ्नै सहोदर बाबु र पतिलाई जीवनभर सामाजिक लाञ्छना बेहोर्नुपर्ने गरी करणी जस्तो गम्भीर प्रकृतिको आरोप लगाउनुपर्ने कुनै कारण रहे भएको मिसिलबाट देखिँदैन । समयको अन्तरालपछि अदालतमा भएको बकपत्रमा पीडित र जाहेरवालाले प्रतिवादीलाई सजायबाट उन्मुक्ति दिने परिबन्दमा परी वा माफ गर्ने सोच बनाई वा पारिवारिक सम्बन्धका कारण आफ्नै मौकाको भनाइलाई खण्डन गरे पनि पीडितको स्वास्थ्य परीक्षणले वारदात स्थापित भइरहेको अवस्थामा पीडितको मौकाको भनाइलाई प्रमाणमा ग्रहण गर्न मिल्ने नै देखिने ।

यस सम्बन्धमा ने.का.प. २०७४ भाद्र, भाग ५९, अङ्क ५, नि.नं. ९८१२, पृष्ठ ८५९ मा प्रकाशित पुनरावेदक प्रतिवादी कुमार गुरुङ विरुद्ध प्रत्यर्थी प्रतिवादी नेपाल सरकार भएको जबरजस्ती करणी मुद्दामा यस अदालतबाट **"समयको अन्तरालपछि अदालतमा भएको बकपत्रमा पीडित र जाहेरवालाले प्रतिवादीलाई फाइदा पुग्ने गरी वा सजायबाट उन्मुक्ति दिने कुनै लोभ लालच वा प्रभाव वा दबाबसमेतमा परी वा माफी दिने सोच बनाई आफ्नै मौकाको भनाइलाई खण्डन गरे पनि पीडितको स्वास्थ्य परीक्षणले वारदात स्थापित भइरहेको अवस्थामा**

पीडितको मौकाको भनाइलाई प्रमाणमा लिन मिल्ने, मिसिल संलग्न रहेका प्राप्त प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीले कसुर गरेको स्थापित हुन आएको स्थितिमा पीडित जाहेरवालाले प्रतिवादीले कसुर गरेको होइन भनी बकपत्र गरी दिँदा मिसिलबाट स्थापित तथ्यलाई अन्यथा गर्न नमिल्ने, अदालतसमक्ष बकपत्र गर्दा इन्कारी बयान गरेकै आधारमा अन्य प्रमाण नहेरी कसुरबाट उन्मुक्ति दिनु न्यायसङ्गत पनि नहुने, जबरजस्ती करणी अपराधमा चशमदिद गवाह पीडित नै हुन्छन् । पीडितले मौकामा व्यक्त गरेको कुरा नै सत्य हुन्छ किनकि त्यसबेला आफूलाई परेको पीडा मानसपटलबाट हटेको नहुने" भन्ने सिद्धान्त प्रतिपादन भएको देखिने ।

तसर्थ, पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन, पीडितको मौकाको कागज एवं जाहेरवालाको किटानी जाहेरी बेहोराबाट वारदात स्थापित भइरहेको अवस्था हुँदा यी प्रतिवादी, पीडित र जाहेरवालाले अदालतसमक्ष गरेको बकपत्रमा करणीको घटना नै नभएको भनी आफ्नो मौकाको भनाइलाई खण्डन गरेकै कारणले यी प्रतिवादीले सजायबाट उन्मुक्ति पाउन सक्ने अवस्था विद्यमान रहेको नदेखिँदा आरोपित कसुरबाट सफाई पाउँ भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने ।

अतः माथि विवेचित आधार, कारणबाट यी पुनरावेदक प्रतिवादीले आफ्नै नाबालिक छोरी परिवर्तित नाम जेनिसालाई जबरजस्ती करणी अपराध गरेको तथ्य पुष्टि हुन आएकोले निज प्रतिवादी बिमलकुमार राईलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको ३(१) नं. बमोजिम १० (दश) वर्ष कैद र मुलुकी ऐन, हाडनातामा करणी गर्नेको महलको १ नं. बमोजिम १० (दश) वर्ष कैद तथा प्रतिवादीबाट पीडितले क्षतिपूर्तिबापत रु. २५०००।- (पच्चिस हजार रुपैयाँ) भरी पाउने ठहराई सुरु इलाम जिल्ला अदालतले गरेको मिति २०७१/०५/१८ को फैसला सदर हुने गरी पुनरावेदन अदालत इलामबाट मिति २०७१/१०/२०

मा भएको फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: विकास श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल फागुन २२ गते रोज ३ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७१-CR-०९४७, ०७१-CR-१२२३, ०७३-RC-००७४, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. लोकबहादुर कार्कीसमेत, लोकबहादुर कार्की वि नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. दुरे काइला भन्ने पटनबहादुर राई

जिल्ला ओखलढुङ्गा उँबु गा.वि.स. वार्ड नं.१ चिउरीबोटे भन्ने ठाउँमा समसेरबहादुर कार्कीको नाममा रहेको खेत जग्गासमेत भाडामा लिई खाजा तथा अन्य सामानसमेत राखी पसल सञ्चालन गर्दै आएको जाहेरवालाको काकी खम्बसरी राई र निजकी नातिनी पृतिका राईसमेत उपर मिति २०६७/१/१५ गते राति साङ्घातिक प्रहार भएको देखियो । सो वारदातमा प्रतिवादीमध्येकी विष्णुमाया कार्कीसमेत घाइते भएको देखिन्छ । पटनबहादुर राई र लोकबहादुर कार्कीसमेतका व्यक्तिहरूले धारिलो हतियारसमेत लिई आई प्रहार गरेको भनी शंका गरी जाहेरी दरखास्त परेको पाइयो । घाइते खम्बसरी राईको उपचारको क्रममा मिति २०६७/३/२२ गते रातको ११:०० बजे काठमाडौँमा मृत्यु भएको कुरामा विवाद नदेखिने ।

मिति २०६७/१/१५ गते राति हामी आफ्नै घरमा थियौं । अर्को दिन बिहान ८, ९ बजे तल पसलमा सबै व्यक्तिहरू बेहोस भइरहेका छन् भनी हल्ला थाहा पाई हामीलगायतका गाउँका १२, १५ जना व्यक्ति खम्बसरीको पसलमा गई हेर्दा खम्बसरी, प्रितिका र विष्णुमाया कार्कीसमेत ३ जना रगतपछे भई बेहोस अवस्थामा थिए । त्यसपछि तीनै जनालाई उपचारको लागि काठमाडौँ पठाएको हो । विष्णुमाया कार्कीले सो घटना भएको रातमा ऐंसेलुखर्क घर बताउने एकजना परदेशी होटलमा बास बस्न आएका थिए भनेर भनेकी थिइन् । सो घटना को कसले घटाएको

हो हामीलाई थाहा छैन । सो घटनामा हाम्रो संलग्नता छैन, हामी निर्दोष हुँदा अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुनुपर्ने होइन, सफाइ पाउँ भनी एकै मिलान हुने गरी प्रतिवादीहरू बाटुलीमाया राई, लोकबहादुर कार्की, रामबहादुर कार्की, दुरे काइला भन्ने पटनबहादुर राई, हर्कराज राईले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गरेको देखियो । अदालतमा बयान गर्दासमेत आफूहरू उक्त कसुरमा संलग्न नरहेको भनी कसुरमा पूर्ण इन्कार रही बयान गरेको पाइयो । घटनास्थलमा रहेकी घाइते विष्णुमाया कार्कीले वारदात भएको रात मिति २०६७/१/१५ मा मेरो खेती खम्बसरी राईको होटल पसलनजिक भएको हुँदा मकै खेतीमा पानी लगाउन उक्त स्थान गएको थिएँ । खम्बसरी राईले आज यतै होटलमा बसौं न, एकजना परदेशी पाहुना पनि छन् भनी मलाई भनेकी हुन् । म घर नआई सोही होटलमा बसेकी हुँ । राति हामी ३ जना होटलभित्र एउटै खाटमा खम्बसरी, प्रितिका र म सुतेका हौं । परदेशी बाहिर सुतेको थियो । रातिको समयमा को कसले कसरी हामीहरूलाई कुटपिट गरी गरगहनासमेत लुटी घाइते बनाए, निद्रामा भएकोले थाहा भएन । सोही वारदात चोट पीडाका कारण खम्बसरी राईको मिति २०६७/३/२२ मा उपचारको क्रममा कलंकी मेमोरियल अस्पताल काठमाडौँमा मृत्यु भएको हो । म र निजकी नातिनी प्रितिका राईको उपचारपछि निको भएको हो । घटना घटाउन लोकबहादुर कार्की र पटनबहादुर राईसमेतको संलग्नता छैन भनी अनुसन्धानको क्रममा बयान गरेको पाइयो । अदालतमा समेत निजले सोही बेहोराको कागज गरिदिएको देखिने ।

यही वारदातको विषयलाई लिएर ज्यान मार्ने उद्योग मुद्दा चलेको देखिन्छ । सो मुद्दाका साक्षीहरू राजेन्द्र कार्की, भेषराज राई, कुलबहादुर कार्की र नैनबहादुर साँकीसमेतले प्रतिवादीहरूको घटना घटाउनमा संलग्नता छैन, प्रतिवादीहरू निर्दोष छन् भनी प्रतिवादीहरूको इन्कारी बयान समर्थित हुने गरी अदालतमा बकपत्र गरिदिएको देखिन्छ । घटनाबाट

पीडितमध्येकी विष्णुमाया कार्कीले सो घटना को-कसले गरायो थाहा छैन भनी कागज गरेको पाइयो । अर्को घटनाकी पीडित प्रितिका राईले घटना भएको समयमा होसमा नरहेको, काठमाडौँमा उपचारपछि होसमा आएको भनी कागज गरेको देखिन्छ । निज पीडित कलिलो उमेरकी रहेकी, दिउँसो दुरे र लोकेलाई देखेको कारण त्यसै शंका गरेको हो, को-कसले हामीहरूलाई हिराए चिनिन भनी ज्यान मार्ने उद्योग मुद्दामा बकपत्र गरेको देखियो । अन्य कुनै भरपर्दो वा विश्वसनीय प्रमाण प्रस्तुत हुन आएको देखिएन । केवल शंका र अनुमानको आधारमा अभियोग लगाइएको र पुनरावेदन अदालतबाट फैसला भएको पाइने ।

शंकाको सुविधा अभियुक्तले पाउँछ भन्ने फौजदारी न्यायको सिद्धान्त रहेको छ । शंकाको भरमा प्रतिवादीहरूलाई दोषी ठहर गर्नु मनासिब हुने देखिँदैन । प्रत्यक्षदर्शी कोही देखिँदैनन् । मिसिल संलग्न परिस्थितिजन्य प्रमाणहरूसमेतबाट कसुर कसले गरेको हो भन्ने कुरा पुष्टि हुन सकेको पाइएन । कसुर पुष्टि हुने प्रमाण अभियोजन पक्षबाट पेस हुनुपर्ने हो । तर वादी पक्षबाट त्यस प्रकारको प्रमाण पेस हुन सकेकोसमेत पाइएन । यस अवस्थामा प्रतिवादीहरूलाई केवल शंका र अनुमानको आधारमा कसुरदार ठहर गर्नु न्यायोचित नहुने ।

अतः प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरमा इन्कार रही अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष र अदालतमा समेत बयान गरेको, सो इन्कारी बयानलाई समर्थन हुने गरी साक्षीहरूको बकपत्र भएको, प्रत्यक्ष वा विश्वसनीय परिस्थितिजन्य प्रमाणको सर्वथा अभाव रहेको देखिएको तथा शंकाको सुविधा अभियुक्तले पाउने भएको हुँदा प्रतिवादीहरूलाई कसुरदार ठहर गरी सजाय गर्नु मनासिब देखिएन । तसर्थ, पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७०/१०/२० को फैसला केही उल्टी भई दुरे काइला भन्ने पटनबहादुर राई र प्रतिवादी लोकबहादुर कार्कीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर्छ । अन्य प्रतिवादीहरू

हर्कराज राई, रामजी भन्ने रामबहादुर कार्की र बाटुली भन्ने बाटुलीमाया राईसमेतको हकमा पुनरावेदन अदालत राजविराजवाट सफाई दिने गरी भएको फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद बस्याल

इति संवत् २०७६ साल पौष १४ गते रोज २ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०६७-८१-०४४८, काम कारबाही बदर, ध्रुवरुद्र कर्माचार्य वि. रत्नमान श्रेष्ठसमेत**

पुनरावेदक ध्रुवरुद्र कर्माचार्यले विपक्षीहरूले बदनियतपूर्वक गैरकानूनी काम गरेको भनी जिकिर लिएका विवादका विषयहरू हेर्दा कम्पनी दर्ता भएको मिति २०५४।१।२० ले एक वर्षभित्र गर्नुपर्ने वार्षिक साधारणसभा कुनै पनि वर्ष नगरेको सञ्चालक समितिको बैठक नियमित रूपमा नबसेको कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा ८०(२) अनुसार वार्षिक आर्थिक विवरण समयमा कम्पनीको रजिस्ट्रारको कार्यालयमा नपठाएको, विपक्षी संजोजमान श्रेष्ठ यस नेसनल आल्मुनियम वकर्स प्रा.लि.को प्रबन्ध पत्रमा उल्लिखित उद्देश्यअनुरूपकै अर्को कान्तिपुर आल्मुनियम एसोसिएसन प्रा.लि.को सञ्चालक भएको र विपक्षी रत्नमान श्रेष्ठले पनि सोहीअनुरूप प्रिमियर आल्मुनियम वकर्स प्रा.लि.नामको कम्पनी एकलै दर्ता गराई कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा ८९ (छ) को विपरीत सञ्चालक भएको भन्नेसमेत रहेको पाइयो। उजुरी कर्ताले दाबी लिएअनुरूपको एउटा कम्पनीको सञ्चालक समान उद्देश्य रहेको अर्को कम्पनीको सञ्चालक हुन कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा ८९ (छ) ले निषेध गरेको छ छैन भन्नेतर्फ उक्त दफामा भएको कानूनी प्रावधान हेर्दा दफा ८९ मा सञ्चालकको पदमा नियुक्ति हुन वा बहाल रहन नसक्ने अवस्था शीर्षकको उपदफा (१) मा देहायका कुनै व्यक्ति सञ्चालकको पदमा नियुक्ति हुन सक्ने छैन भनी उल्लेख गर्दै देहाय (छ) मा **"समान उद्देश्य भएको अर्को कुनै कम्पनीको सञ्चालक, आधारभूत**

**शेयरधनी कर्मचारी, लेखा परीक्षण वा सल्लाहकार पदमा बहाल रहेका वा त्यस्तो कम्पनीमा कुनै पनि प्रकारको निजी स्वार्थ भएको"** भनी त्यसको प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशको रूपमा **तर एउटा प्राइभेट कम्पनीको त्यस्तो व्यक्ति समान उद्देश्य भएको अर्को प्राइभेट कम्पनीमा सञ्चालक हुन सक्ने छ** भनी प्राइभेट कम्पनीको हकमा छुट्टै व्यवस्था गरेको पाइयो। यसरी कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा ८९ (१)(छ) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशले प्राइभेट कम्पनीको हकमा कुनै एक कम्पनीको सञ्चालक भएको व्यक्ति समान उद्देश्य भएको अर्को कम्पनीको सञ्चालक हुन सक्ने स्पष्ट व्यवस्था गरेबाट उजुरीकर्ताले विपक्षी संजोसमान श्रेष्ठ र रत्नमान श्रेष्ठ समान उद्देश्य भएका अर्को कम्पनीको सञ्चालक भएकोले निजहरूले कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा ८९(१)(६) को विपरीत काम गरेको भनी लिएको पुनरावेदन जिकिर मिलेको देखिन नआउने।

पुनरावेदकले कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा ९९(४)(५) र (६) अनुसार सञ्चालकले निर्वाह गर्नुपर्ने दायित्व निर्वाह नगरेकोले कम्पनीलाई हानि नोक्सानी पुग्न गएको छ भनी दाबी लिएको पाइयो। कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा ९९ को उपदफा (४) मा **"कम्पनीका प्रत्येक सञ्चालक तथा पदाधिकारीले आफ्नो पदीय दायित्व निर्वाह गर्दा कम्पनीको स्वार्थ र हितलाई ध्यानमा राखी इमान्दारीपूर्वक असल नियतले काम गर्नुपर्ने छ र सामान्य विवेक र ज्ञान भएको व्यक्तिसरह हिफाजती, सावधानी, बुद्धिमत्ता, कुशलता तथा दक्षताको प्रयोग गर्नुपर्ने छ"** भनी कम्पनीको सञ्चालक तथा पदाधिकारीले आफ्नो पदीय दायित्व निर्वाह गर्दा अपनाउनुपर्ने व्यवहारको बारेमा उल्लेख गरेको छ भने उपदफा (५) मा उपदफा ४ बमोजिम प्रतिकूल हुने गरी कम्पनीलाई हानि नोक्सानी हुन गएमा हानि नोक्सानीको क्षतिपूर्ति कम्पनीले असुलउपर गरी लिन पाउने कानूनी प्रावधान रहेबाट उक्त उपदफा (५) ने हानि नोक्सानी असुलउपर

गरी पाउने हकदैया यी उजुरी कर्तालाई नभई कम्पनी लाई भएको र हानि नोक्सानीबापतको क्षतिपूर्तिर्तर्फको दाबीसमेत नभएकोले यस सम्बन्धमा विशेष विवेचना गरिरहनुपर्ने देखिन नआउने।

अब जहाँसम्म कम्पनी दर्ता भएको मिति २०५४।१।२० ले एक वर्षभित्र वार्षिक साधारणसभा गर्नुपर्नेमा नगरेको नेसनल आल्मुनियम वक्स प्रा. लि.को नियमावलीको नियम १२(ख) ले प्रवन्ध सञ्चालकले पारिश्रमिकबापत मासिक रु.३,०००।- लिन पाउनेमा २०२६०५७, २०५७१५८ को मासिक तलब रु.८,०००।- को दरले र बैठक भत्ता रु.३००।- लिनुपर्ने ठाउँमा रु.८,०००।- विपक्षी संजोजमान श्रेष्ठले लिएको भन्ने उजुरी दाबी छ तत् सम्बन्धमा विचार गर्दा कम्पनी ऐन, २०६३ ले कम्पनी अध्यादेश, २०६२ लाई खारेज गरेको र कम्पनी ऐन, २०६३ मिति २०६३।६।२० गतेबाट मात्र प्रारम्भ भएको देखिन्छ। सो अध्यादेश र कम्पनी ऐन, २०६३ लागु हुनुअघि भएको काम कारबाहीको सम्बन्धमा उपचार प्राप्त गर्नको लागि कम्पनी ऐन, २०५३ अन्तर्गत नै दाबी लिई सक्षम निकायसमक्ष सम्बन्धित पक्षले माग दाबी लिई उजुरी गर्नुपर्ने हुन्छ। कम्पनी ऐन, २०५३ र कम्पनी अध्यादेश, २०६२ र तत्पश्चात्को कम्पनी ऐन, २०६३ मा रहेका मूलभूत विषयहरूमा पृथक-पृथक कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ। कम्पनी ऐन अन्तर्गतको मुद्दा मामिलाको कारबाही र दण्ड सजाय जस्ता विषयमा कम्पनी ऐन, २०५३ मा रहेको कानूनी प्रावधान र कम्पनी ऐन, २०६३ मा रहेको प्रावधान नै मूलभूत रूपमा संशोधन मात्र नभई नयाँ ऐनको रूपमा कम्पनी ऐन, २०६३ लागु भएको अवस्थामा उक्त ऐन, प्रारम्भ हुनुभन्दा अघिको कामहरूको सम्बन्धमा तत्काल बहाल रहेको कम्पनी ऐन, २०५३ अनुरूप उपचारको बाटो अवलम्बन गर्नुपर्नेमा सो नगरी २०५५/२०५६ सालको विवादको विषयलाई लिएर कम्पनी ऐन, २०६३ बमोजिम दाबी लिई उजुर दायरसमेत भएको देखियो। यस स्थितिमा पुनरावेदकको जिकिरबमोजिम कामकारबाही बदर

गर्नुपर्ने देखिन आएन। तसर्थ, उजुरीकर्ताको उजुर दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्‍याई भएको पुनरावेदन अदालत पाटन, वाणिज्य इजलासाको मिति २०६६।१०।२० को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: शिवप्रसाद आचार्य

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७६ साल असोज ८ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं.८

१

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७४-CR-१६५१, भ्रष्टाचार, नेपाल सरकार वि. गीता महतसमेत**

विशेष अदालत, काठमाडौंको फैसलाउपर प्रतिवादी गीता महत र प्रेमलाल जैसवालको हकमा मात्र वादी नेपाल सरकारको यस अदालतमा पुनरावेदन परेको देखिँदा अन्य प्रतिवादीहरूको हकमा प्रस्तुत मुद्दाबाट केही बोलिरहन परेन। प्रतिवादी गीता महत र प्रेमलाल जैसवालको हकमा परेको नेपाल सरकारको पुनरावेदन सम्बन्धमा विचार गर्दा, प्रतिवादी गीता महतले बाजुरा जिल्लाको महिला तथा बालबालिका कार्यालयमा महिला विकास अधिकृतको रूपमा २०६६ देखि २०६९ सम्म कार्य गरेकी हुन्। बाजुरा जिल्लाको साप्पाटा गा.वि.स. वडा नं.६ मा सिर्जनशील महिला सहकारी भवन निर्माण गर्नको लागि म जानुभन्दा पहिला नै कार्यक्रम सम्झौता भइसकेको थियो, मेरो कार्यकालमा ३ किस्ता गरी उपभोक्ता समितिको खातामा रु.११,४०,०००/- रकम निकास गरी दिएको हो। भवन निर्माणस्थल सदरमुकामबाट विकटमा रहेको र मेरो खुट्टाको हड्डी मक्किएको कारण म भवनस्थलमा निरीक्षण गर्न जान सकिन, प्राविधिक कर्मचारीले तयार गरेको प्रतिवेदनको आधारमा आफूले रकम निकास गरी दिएको हो भनी बयान गरेको पाइन्छ भने अर्का प्रतिवादी यज्ञप्रसाद ढुंगानाले भवन निर्माण सम्पन्न भई



बिल मैले तयार गरेको हुँ भनी अनुसन्धानको क्रममा उल्लेख गरेको देखिन्छ । त्यसैगरी निजले कार्यालय सहयोगी नैना जोशीमार्फत रु.४०,०००/- लिई खाएको भन्ने अभियोगका सम्बन्धमा विचार गर्दा नैना जोशीले अनुसन्धानको क्रममा कागज गर्दा सब-इन्जिनियर यज्ञप्रसाद ढुंगानाले उपभोक्ता समितिका अध्यक्षसँग रकम मागेको भनी आफूले सुनेको हो तर मैले कार्यालय प्रमुखलाई उपभोक्ता समितिका अध्यक्षबाट मागी रु.४०,०००/- दिएको भन्ने कुरा झुठ्ठा हो भन्ने उल्लेख गरेको र निज विशेष अदालतमा समेत उपस्थित भई आफ्नो भनाइलाई पुष्टि हुने गरी बकपत्रसमेत गरेको देखिएबाट प्रतिवादी गीता महतले आफ्नो पदीय कर्तव्य पालना नगरी उपभोक्ता समितिसँग मिलोमतो गरी भवन निर्माण कार्य सम्पन्न नहुँदै रकम निकास गरेको र कार्यालय सहयोगी नैना जोशीमार्फत रु.४०,०००/- रिसवत लिएको भन्नेसमेत बेहोराको आरोप वस्तुनिष्ठ प्रमाणको अभावमा पुष्टि हुन सकेको देखिन आएन । जहाँसम्म रकम भुक्तानी गरेको प्रश्न छ, उल्लिखित भवन महिला तथा बालबालिका कार्यालयको प्रत्यक्ष संलग्नता वा निगरानीमा निर्माण गरिने भवन नभई उपभोक्ता समितिमार्फत निर्माण हुने भवन देखिन्छ । भवन निर्माणको लागि निकास भएको रकम पनि उपभोक्ता समितिकै खातामा गएको देखिन्छ । वास्तविक उपभोक्ताका प्रतिनिधिहरू र फिल्डमा खटिने कर्मचारीले प्रतिवेदन दिएकोमा निर्माण कार्यमा संलग्न रही भ्रष्टाचार गर्नेहरूलाई सजाय भएको अवस्था छँदैछ । जिल्लाको विकट गाउँमा बनेको भवन भौतिक रूपमा निरीक्षण गर्न सधैं सम्भव पनि हुँदैन र निरीक्षण गर्नुपर्नेमा नगरेको भन्ने अभियोग दाबी पनि देखिँदैन । प्रतिवादी गीता महत निजले प्रत्यक्ष रूपमा रकम मागेको लिए खाएको वा भ्रष्टाचारमा संलग्न रहेको भन्ने कुरा कतैबाट स्थापित नभएको अवस्थामा कार्यालय प्रमुख रहेको भन्नेसम्म आधारमा सजाय गर्न प्रस्तुत मुद्दाको रोहमा न्यायपूर्ण हुने नदेखिँदा अभियोग

दाबीबाट सफाइ दिने ठहर्‍याएको विशेष अदालतको फैसलालाई अन्यथा भन्नुपर्ने नदेखिने ।

अर्का प्रतिवादी प्रेमलाल जैसवाल उक्त भवन निर्माणको कार्यको फरफारक गर्ने सम्बन्धमा उपभोक्ता समितिका अध्यक्षबाट रकम लिई खाएको भन्ने आरोपको सम्बन्धमा विचार गर्दा, निज प्रतिवादी बाजुराको महिला तथा बालबालिका कार्यालय बाजुरामा मिति २०६८/०९/०९ देखि २०६९/३/१६ सम्म मात्र सो कार्यालयमा सब इन्जिनियरको रूपमा कार्यरत रहेको देखिन्छ । तर बाजुरा जिल्लाको साम्पाटा गा.वि.स. वडा नं.६ मा निर्माण भएको सिर्जनशील महिला सहकारी भवन आ.व.२०६७/२०६८ को योजना भई मिति २०६८/०३/३० मा नै अन्तिम किस्ता रकम भुक्तानी भइसकेको भन्ने कुरा मिसिल संलग्न कागजातबाट देखिन्छ । यसरी निज प्रतिवादी प्रस्तुत वारदातको समयमा सो कार्यालयमा सेवामा नै नभएको अवस्थाको कार्यको लागि दोषी हो भन्न मिल्ने देखिएन । प्रतिवादी प्रेमलाल जैसवाललाई निज सेवामा नै नभएको अवधिमा भएको कसुरका लागि निजलाई जिम्मेवार ठहर्‍याई अभियोग लगाउनु प्राकृतिक न्याय तथा फौजदारी न्यायको सिद्धान्तसमेतको विरुद्ध देखिँदा निजलाई लगाएको आरोप पुष्टि हुन सक्ने नदेखिने ।

तसर्थ, माथि उल्लिखित आधार र कारणबाट प्रतिवादी गीता महत र प्रेमलाल जैसवालको हकमा निजहरूले अभियोग दाबीअनुसारको कसुर गरेको भन्ने आरोपका सम्बन्धमा वस्तुनिष्ठ प्रमाणको अभावमा आरोपित कसुर पुष्टि हुन सकेको नहुँदा निजहरूलाई दोषी कायम गर्न मिल्ने । यी प्रतिवादीको हकमा आरोपित दाबीबाट निज प्रतिवादीहरूले सफाइ पाउने गरी विशेष अदालत काठमाडौँबाट मिति २०७४/०९/१९ भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- तेजप्रसाद पौडेल

इति संवत् २०७७ साल असार २ गते रोज ३ शुभम् ।

२

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या. श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७०-WO-०६०८, उत्प्रेषण / परमादेश, राजु चुहान वि. मध्यक्षेत्रीय प्रहरी कार्यालय, हेटौँडा, मकवानपुरसमेत

प्रहरी जवानको कामकारबाहीउपर स्पष्टीकरण सोध्ने र विभागीय कारबाही गर्ने अधिकार प्रहरी निरीक्षकलाई नभई प्रहरी उपरीक्षकलाई रहे, भएको देखिन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा पनि यी निवेदक राजु चुहानउपरको स्पष्टीकरण “प्रहरी उपरीक्षक” बाट नभई “प्रहरी निरीक्षक केशवकुमार शाह” बाट भएको देखिन्छ । विभागीय कारबाही गर्ने अधिकार “प्रहरी उपरीक्षक” मा भएकोमा सोपूर्व स्पष्टीकरण सोध्ने कार्य पनि निजले नै गर्नुपर्ने हुन्छ । यस आधारमा पनि सो अधिकार निज प्रहरी निरीक्षकमा भएको कानूनतः देखिँदैन । यसरी अधिकारविहीन व्यक्ति तथा अधिकारीबाट माग भएको स्पष्टीकरणका आधारमा भएको निर्णय स्वतः गैरकानूनी देखियो । यी निवेदक राजु चुहानलाई मिति २०६९।५।२५ मा प्रहरी निरीक्षक केशवकुमार शाहले स्पष्टीकरण सोधी प्रहरी नियमावली, २०४९ को नियम ८८ को देहाय (ग), (च) र (ज) बमोजिमको कसुरमा ऐ. नियमावलीको नियम ८४ को देहाय (छ) बमोजिम नोकरीबाट हटाउने गरी मिति २०६९।६।१२ मा अञ्चल प्रहरी कार्यालय, जनकपुरले गरेको निर्णय पर्चा तथा सोलाई सदर गरेको मिति २०६९।९।१४ को मध्यक्षेत्रीय प्रहरी कार्यालय, हेटौँडाको पुनरावेदकीय निर्णयसमेत कानूनी त्रुटिपूर्ण देखिई बदर हुने नै देखिन आयो ।

अतः माथि विवेचित आधार कारणसमेतबाट यी निवेदक राजु चुहानलाई प्रहरी निरीक्षक केशवकुमार शाहले स्पष्टीकरण सोधी प्रहरी नियमावली, २०४९ को नियम ९३(२)(ख) अनुसार नोकरीबाट हटाउने गरी मिति २०६९।६।१२ मा गरेको अञ्चल प्रहरी कार्यालय, जनकपुरको निर्णय पर्चा तथा सोलाई सदर गरेको मिति २०६९।९।१४ को मध्यक्षेत्रीय प्रहरी

कार्यालय, हेटौँडाको पुनरावेदकीय निर्णयसमेत कानूनी त्रुटिपूर्ण देखिएकोले उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । अब, निवेदक राजु चुहानलाई पूर्ववत् सेवामा पुनर्बहाली गरी कानूनबमोजिमको सुविधासमेत दिनु भनी विपक्षी मध्यक्षेत्रीय प्रहरी कार्यालय, हेटौँडासमेतका विपक्षीहरूका नाउँमा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृतः करुणा श्रेष्ठ

कम्प्युटर : पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७७ साल असार २९ गते रोज २ शुभम् ।

३

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या. श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७२-WO-१०७३, उत्प्रेषण / परमादेश, विष्णुबहादुर थापा वि. प्रहरी प्रधान कार्यालय नक्साल काठमाडौँसमेत

रिट निवेदक विष्णुबहादुर थापालाई गैरकानूनी ढङ्गबाट सेवाबाट मुक्त गरिएको हो वा होइन भन्नेतर्फ विचार गर्दा, मिति २०७१।११।१७ गतेका दिन प्रहरी नायव निरीक्षक राजन पौडेलले सम्बन्धित ठाउँमा खटिएको सुरक्षा कमान्डरको अनुमतिले आफ्ना आफन्तलाई कफी खुवाउन अन्तर्राष्ट्रिय डिपार्चर भवनभित्र प्रवेश गराउने क्रममा ड्युटीमा खटिएका प्रहरी जवान विष्णुबहादुर थापासँग सुरुमा आफन्तलाई प्रवेश गराउने विषयमा भनाभन भएको र केहीबेरपछि निज प्रहरी नायब निरीक्षकले आफ्नो काम सकेपश्चात् निज प्रहरी जवान विष्णुबहादुर थापालाई पुनः सम्झाउन / सर्तक गराउन आउँदाको अवस्थामा निज प्रहरी जवान विष्णुबहादुर थापा तत्काल आवेगमा आई प्रहरी नायव निरीक्षक राजन पौडेलमाथि हातपात गरी चोटपटक लाग्ने गरी हमला गरी अवाञ्छनीय र अनुशासनहीन कार्य गरेको भन्ने अभियोगमा मिति २०७१।११।२८ मा प्रहरी वरिष्ठ उपरीक्षकबाट पहिलो स्पष्टीकरण सोधिएको र त्यसपछि मिति २०७२।३।२५ मा पुनः प्रहरी वरिष्ठ उपरीक्षकबाट स्पष्टीकरण सोधेको मिसिल संलग्न रेकर्ड फाइलबाट देखिन्छ । निज प्रहरी

जवान विष्णुबहादुर थापाले आफूभन्दा माथिल्लो कमान्डरलाई हातपात गरी एक प्रहरी कर्मचारीले पालना गर्नुपर्ने अनुशासन, नीति र आचरण विरुद्धको कार्य गरेको देखिन आएकोले निजलाई स्पष्टीकरण माग गरी प्रहरी नियमावली, २०७१ (संशोधनसमेत) परिच्छेद १० को नियम ११३(१) खण्ड (ख) र (घ) को कसुरमा ऐ. नियमावलीको नियम १०९ (ख) को (१) अनुसार भविष्यमा सरकारी सेवाको लागि अयोग्य नठहरिने गरी सेवाबाट हटाउने भनी प्रहरी वरिष्ठ उपरीक्षक भुपालकुमार भण्डारीले गरेको निर्णयउपर निवेदकले पुनरावेदन गर्दा पुनरावेदन तहबाट समेत सुरु निर्णयलाई नै सदर गरेको देखियो । प्रहरी ऐन, २०१२ को दफा १४ अनुसार तल्लो दर्जाको प्रहरी अधिकारीले गर्ने कार्य माथिल्लो दर्जाको प्रहरी अधिकृतले गर्न सक्ने नै देखिँदा स्पष्टीकरण सोधिएको विषयलाई अख्तियारप्राप्त अधिकारीबाट सोधिएन भन्न मिल्ने नदेखिने ।

जहाँसम्म यी निवेदक विष्णुबहादुर थापालाई भविष्यमा सरकारी सेवाको लागि अयोग्य नठहरिने गरी सेवाबाट हटाइएको प्रश्न छ, प्रहरी नियमावली, २०७१ को नियम ११३(१) खण्ड (ख) र (घ) को कसुरमा ऐ. नियमावलीको नियम ११९ को उपनियम १ को खण्ड (२)(ख) ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी नियम १०९ (ख) को (१) अनुसार भविष्यमा सरकारी सेवाको लागि अयोग्य नठहरिने गरी सेवाबाट हटाउने भनी विभागीय कारबाही भएको देखियो । सो कार्य मिले वा नमिलेको के रहेछ भनी सो सम्बद्ध **प्रहरी नियमावली, २०७१ को परिच्छेद ९** मा भएको **आचरणसम्बन्धी व्यवस्था** हेर्दा, **नियम १०८** को **“हातपात वा जोरजुलुम गर्न नहुने”** भन्ने शीर्षकअन्तर्गत **“कुनै प्रहरी कर्मचारीले आफूभन्दा माथिल्लो वा मातहत प्रहरी कर्मचारीउपर हातपात वा कुनै प्रकारको आक्रमण वा जोरजुलुम गर्न वा गराउन हुँदैन”** भन्ने व्यवस्था गरी यदि कुनै प्रहरी कर्मचारीले उक्त आचरण उल्लङ्घन गरेमा **नियम १११** बमोजिम **बढीमा पाँच वर्षसम्म बढुवा रोक्का गर्ने वा बढीमा**

**पाँच तलब वृद्धिसम्म रोक्का गर्ने** सजाय उल्लेख भएको देखिन्छ । रिट निवेदक विष्णुबहादुर थापाले आचरण वा अनुशासनसम्बन्धी कार्य बारम्बार वा बराबर उल्लङ्घन गरेको र सोबापत विभिन्न समयमा सजाय पाएको भनी अभिलेख रहेको भन्ने ठोस सबुद तथा प्रमाण विपक्षीहरूबाट पेस हुनसकेको पाइँदैन । विपक्षी महानगरीय प्रहरी विमानस्थल सुरक्षा कार्यालय, गौचर, काठमाडौंसमेतको निर्णय पर्चा र लिखित जवाफमा जुन थप कुराहरू उल्लेख भएका छन् ती विवादित कारबाहीको सिलसिलामा अन्य प्रहरी कर्मचारीहरूलाई बुझ्दा उनीहरूले लेखाएको कुरासम्म देखिन्छन् । विवादित कारबाहीपूर्व रिट निवेदकउपर कुनै कारबाही उठेको भन्ने निजको व्यक्तिगत अभिलेखबाट देखिँदैन । यस स्थितिमा रिट निवेदक विष्णुबहादुर थापाबाट मिति २०७१।११।१७ मा प्रहरी नायब निरीक्षक राजन पौडेलमाथि हातपात गरी आचरणविपरीतको कार्य पहिलो पटक भएको मान्नुपर्ने देखिन आयो । निवेदकलाई पहिलो पटक सजाय गर्दा उपर्युक्तानुसार बढुवा रोक्का वा तलब वृद्धि रोक्काको सजाय गर्न सकिने कानूनी व्यवस्था नियमावलीमा हुँदाहुँदै विपक्षी महानगरीय प्रहरी विमानस्थल सुरक्षा कार्यालय, गौचर, काठमाडौंले नियमावलीको कानूनी व्यवस्थाविपरीत एकैपटक सेवाबाट हटाउने भनी निर्णय गरेको देखिन्छ । **“सजाय दिनु भनेको बदला लिनु होइन । त्यसैले सजायको निर्धारणमा न्यायिक मनको प्रयोग हुनैपर्दछ । यो न्यायिक मनको परिधि कानूनले नै निर्धारित गरिदिएको अवस्थामा सो परिधिबाहिर गरिने निर्णय त्रुटिपूर्ण नै हुन्छ । बारम्बार वा बराबर वा पटकपटक कसुर गर्दा मात्र हुने सजाय एकभन्दा बढी पटक गरेको स्थापित नभई गर्न सकिँदैन”** भनी **ने.का.प. २०७० अङ्क ११ नि.नं. ९०७२** को निवेदक **रामकुमार रणपहेली विपक्षी नेपाल सरकार गृह मन्त्रालय, काठमाडौंसमेत** भएको **उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसम्बन्धी रिट निवेदनमा** सिद्धान्त प्रतिपादित भएको पाइन्छ । प्रस्तुत विवादमा

रिट निवेदक विष्णुबहादुर थापालाई दिइएको सजाय उक्त सिद्धान्तको रोहमा त्रुटिपूर्ण देखिन आउने ।

रिट निवेदकउपर गरिएको कारबाही के-कति स्वच्छ र पूर्वाग्रहविहीन छ; सो पनि हेर्नुपर्ने हुन आएको छ । यहाँ जुन प्रहरी नायब निरीक्षक राजन पौडेलको प्रतिवेदनबाट कारबाही उठाइएको र जागिरबाट हटाउनेसम्मको कार्य गरिएको छ; सो कति उचित र न्यायपूर्ण छ; सो पनि सोचनीय छ । यी प्रहरी नायब निरीक्षक राजन पौडेल उक्त मितिमा त्रिभुवन विमानस्थलमा ड्युटी तोकिएका वा खटिएका व्यक्ति देखिँदैनन् । त्यसैले विमानस्थलको सुरक्षा सन्दर्भमा निजलाई अन्य सर्वसाधारण व्यक्तिसरह मान्नुपर्ने हुन्छ । विमानस्थलको सुरक्षा संवेदनशील एवम् निषेधित क्षेत्रमा जान निज आफैँले भिजिटर पास बनाएकोबाट पनि सो कुरा पुष्टि हुन्छ । यस्तो स्थितिका निजले पास तथा टिकट बेगरका दुईजना व्यक्तिहरूलाई निषेधित क्षेत्रमा लगी चिया-कफी किन खुवाउनु प्यो ? कानून तोडी भित्र किन जानुप्यो ? सो अधिकार निजलाई कहाँबाट आयो ? यसतर्फ कसैको ध्यान गएको देखिँदैन । ड्युटीमा रहेका प्रहरी कर्मचारीले रोक्दा-रोक्दै निजभन्दा माथिका प्रहरी कर्मचारीको हस्तक्षेपमा विमानस्थलभित्र गई आफ्नो साथी र निजका भाइ-बहिनीसँग कफी खाई बाहिर निस्केको भन्ने निजकै प्रतिवेदन लेखाइबाट देखिन्छ । त्यतिले मात्र नपुगी माथिल्लो पदको रवाफ देखाउँदै ड्युटीको कर्मचारीलाई पाठ सिकाउन भन्दै वादविवाद गर्न गएको र सोही क्रममा विवादित घटना घटेको देखिन्छ । प्रहरी नायब निरीक्षक राजन पौडेलको सो कार्य के-कति कानूनसम्मत र उचित थियो ? प्रहरी जवानउपर कुनै वास्तविक गुनासो भए सम्बन्धित माथिल्लो दर्जाको अधिकृत वा निकायमा उजुर गर्ने कर्तव्य निजमा रहँदैन र ? भन्नेतर्फ कारबाही गर्ने अधिकारीहरूको ध्यान गएको देखिँदैन । विभागीय कारबाही न्यायिक कारबाही हो; यो स्वच्छ र विवेकसम्मत हुनुपर्छ भन्ने कुरा माथि उल्लेख भइसकेको छ । मिति २०७१।१।२८ मा

महानगरीय प्रहरी विमानस्थल सुरक्षा कार्यालय, गौचर, काठमाडौँले गरेको निर्णय पर्चा तथा सोलाई सदर गरेको मिति २०७२।३।२५ को सोही कार्यालयको पुनरावेदकीय निर्णयसमेतले माथिल्लो अधिकारी सधैं ठीक, तल्लो अधिकारी सधैं बेठीक भन्ने उक्ति चरिचार्थ हुने अवस्था बन्न पुगेको देखिन्छ । निवेदकले गरेको कार्यबापत कानूनले हुने बढुवा वा तलब वृद्धि रोक्का गर्नसक्ने कुरालाई बिर्सेर भविष्यमा सरकारी नोकरीका लागि अयोग्य नठहरिने गरी सेवाबाट हटाउने कार्य विपक्षीहरूबाट भए, गरेको देखिँदा सो सन्दर्भमा गरिएका उक्त निर्णयहरू पूर्वाग्रही, अनुचित र प्रहरी नियमावली, २०७१ को नियम १०८, १०९, १११, ११३ र ११९ समेतको विपरीत देखिन आउने ।

अतः माथि विवेचित आधार कारणसमेतबाट यी निवेदक विष्णुबहादुर थापालाई प्रहरी वरिष्ठ उपरीक्षक भूपालकुमार भण्डारीले स्पष्टीकरण सोधी प्रहरी नियमावली, २०७१ को नियम १०९ (ख) (१) अनुसार नोकरीबाट हटाउने गरी मिति २०७१।१।२८ मा महानगरीय प्रहरी विमानस्थल सुरक्षा कार्यालय, गौचर, काठमाडौँले गरेको निर्णय पर्चा तथा सोलाई सदर गरेको मिति २०७२।३।२५ को सोही कार्यालयको पुनरावेदकीय निर्णयसमेत कानूनी त्रुटिपूर्ण देखिएकोले उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । अब, निवेदक विष्णुबहादुर थापालाई पूर्ववत् सेवामा पुनर्बहाली गरी कानूनबमोजिमको सुविधासमेत दिनु भनी विपक्षी महानगरीय प्रहरी विमानस्थल सुरक्षा कार्यालय, गौचर, काठमाडौँसमेतका विपक्षीहरूका नाउँमा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: करुणा श्रेष्ठ

कम्प्युटर : पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७७ साल असार २९ गते रोज २ शुभम् ।

४

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७६-WO-०६२८, उत्प्रेषण / परमादेश, जैचन्द्र राय वि. नेपाल सरकार सङ्घीय

मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौं

चिकित्सक तथा मेडिकल बोर्डसमेतबाट अशक्तता प्रमाणित भएको अवस्थामा र निज निवेदक जैचन्द्र रायले आफूले रोजेको प्राथमिकताको क्रमभन्दा फरक गरी निजलाई रोजेको स्थानीय तहमा समायोजन गर्न नसक्नुको कारण तथा समायोजन ऐनले तय गरेका आधारहरूको अनुशरण गरी रिट निवेदकलाई पर्सा जिल्लाअन्तर्गतको स्थानीय तहमा समायोजन गरिएको हो भन्ने विपक्षीहरूको लिखित जवाफबाट खुल्न सकेको देखिँदैन । यस स्थितिमा निवेदकको हकमा कर्मचारी समायोजन ऐन, २०७५ को दफा ८ को उपदफा (४) र नेपाल स्वास्थ्य सेवा नियमावली, २०५५ को नियम ३१ख को (ग) को आधार हेरेर मात्र समायोजनबारे निर्णयमा पुग्नुपर्नेमा विपक्षीहरूबाट सो भए, गरेको भन्ने नदेखिँदा विपक्षी सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको मिति २०७६।३।१ को पत्रानुसार स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालयको मिति २०७६।५।१३ को निर्णय र सोबमोजिमको मिति २०७६।५।१३ को पत्र कानूनविपरीतको त्रुटिपूर्ण देखिँदै बदरयोग्य देखिन आउने ।

निवेदकलाई समायोजन गर्दा असमान व्यवहार गरिएको भन्ने पाइएको, नेपालको संविधानको धारा १८ द्वारा प्रदत्त समानताको हक, धारा ४३ ले प्रदान गरेको सामाजिक सुरक्षाको हक, धारा ४२ (३) ले प्रदत्त सामाजिक न्यायको हक, नेपाल स्वास्थ्य सेवा नियमावली, २०५५ को नियम ३१ख को (ग) तथा कर्मचारी समायोजन ऐन, २०७५ को दफा ८(४) समेतको विपरीत हुँदा उक्त सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको मिति २०७६।३।१ को पत्रानुसार स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालयको मिति २०७६।५।१३ को निर्णय र सोबमोजिमको मिति २०७६।५।१३ को पत्र उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने ठहर्छ । नेपाल स्वास्थ्य सेवा नियमावली, २०५५

को नियम ३१ख को (ग) तथा कर्मचारी समायोजन ऐन, २०७५ को दफा ८(४) बमोजिम समायोजनका आधारहरू विचार गरी निवेदकले भरेको समायोजन फाराममा उल्लेख गरेका प्राथमिकता क्रमअनुसार गर्न मिल्ने वा नमिल्ने आधार र कारण खोली साथै मेडिकल बोर्डको मिति २०७६।१।२३ को सिफारिससमेत हेरी कानूनबमोजिम गरी समायोजन तथा पदस्थापनतर्फ उचित निर्णय गर्नु, गराउनु भनी विपक्षीहरूको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: करुणा श्रेष्ठ

कम्प्युटर : पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७६ साल फागुन १९ गते रोज ३ शुभम् ।

- यसै लगाउको, ०७६-WO-०४६०, उत्प्रेषण / परमादेश, रूपा वि.सी. वि. नेपाल सरकार, स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौं

५

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७६-WO-०४८९, उत्प्रेषण, श्यामकुमार चौधरी वि. नेपाल सरकार स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालय, रामशाहपथ, काठमाडौंसमेत

नेपाल स्वास्थ्य सेवामा कार्यरत कतिपय कर्मचारीहरूको पद र तहको सम्बन्धमा समस्या रहेको र सोको निकासको लागि नीतिगत रूपमा निर्णय हुनुपर्ने देखिएको हुँदा सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय र प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसँग आवश्यक परामर्श र पहल भइरहेको साथै रिट निवेदकको छैठौं तह स्तरवृद्धि भई तहअनुसार निजको समायोजन सि.अ.हे.व. अधिकृत छैठौं तहमा नै मिति २०७६।५।१३ को निर्णयानुसार भएको छ । कर्मचारी समायोजनका क्रममा प्राविधिक त्रुटि सच्याउन र चित्त नबुझेका कर्मचारीहरूको हकमा समायोजनको पत्र प्राप्त भएपश्चात् आफूलाई परेको मर्का उल्लेख गरी मन्त्रालयमा गुनासो गर्ने व्यवस्था

गरिएको र मन्त्रालयस्तरबाट गुनासो व्यवस्थापन एवम् सहजीकरण समितिद्वारा व्यवस्थापन गर्ने कार्य भइरहेकोमा सोको वैकल्पिक उपचारको प्रक्रिया समाप्त नहुँदै रिट निवेदक अदालतको क्षेत्राधिकारमा प्रवेश गरेको भन्ने नेपाल सरकार स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालयको लिखित जवाफ रहेको देखिँदा विपक्षी सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको मिति २०७६।३।१ को पत्रानुसार स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालयको मिति २०७६।५।१३ को निर्णय र सोबमोजिमको मिति २०७६।५।१३ को पत्र कानूनसम्मत नै भएको देखिन्छ। यसबाट निवेदकलाई सारभूत रूपमा मर्का परेको र विपक्षी मन्त्रालयको निर्णय र सोबमोजिमको कार्यमा कानूनी त्रुटिसमेत देखिन नआउने।

कर्मचारी समायोजनमा भएका प्राविधिक त्रुटि सच्याउन र चित्त नबुझेका कर्मचारीहरूले आफूलाई परेको मर्का उल्लेख गरी मन्त्रालयमा गुनासो निवेदन दिई मन्त्रालयस्तरबाट गुनासो व्यवस्थापन एवम् सहजीकरण समितिद्वारा व्यवस्थापन गर्ने कार्य भइरहेकोमा सोको वैकल्पिक उपचारको प्रक्रिया समाप्त नहुँदै रिट निवेदक अदालतको क्षेत्राधिकारभित्र प्रवेश गरी निवेदकलाई समायोजन गर्दा सि.अ.हे.व. अधिकृत पदमा समायोजन हुनुपर्नेमा अ.हे.व. (पदनाम सि.अ.हे.व. अधिकृत) भनी समायोजन गरी घटुवा हुने गरी समायोजन गरिएको हुँदा सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको मिति २०७६।३।१ को पत्रानुसार स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालयको मिति २०७६।५।१३ को निर्णय र सोबमोजिमको मिति २०७६।५।१३ को पत्र उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिपाउँ भन्ने रिट निवेदक श्यामकुमार चौधरीको निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न उचित र आवश्यक देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: करुणा श्रेष्ठ

कम्प्युटर : पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७६ साल फागुन १३ गते रोज ३ शुभम्।

इजलास नं.९

१

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७४-WO-००७६, उत्प्रेषण, सुबिर राई वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग टंगाल, काठमाडौंसमेत

भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ५५ बमोजिम अनुसन्धानको काम कारबाहीमा सहयोग गर्ने अभियुक्तलाई अनुसन्धान अधिकृतले साक्षीको रूपमा प्रस्तुत गरी निजलाई सजायको मागदाबीमा पूर्ण वा आंशिक छुट दिएकोमा निजले अदालतमा प्रतिकूल बकपत्र गरेमा सो व्यक्तिलाई सोही दफाको प्रतिबन्धात्मक वाक्यांश उल्लेख भएबमोजिम मुद्दा चलाउन सक्ने नसक्ने कानूनी व्यवस्था के हो सो विषयमा नै सर्वप्रथम हेर्नुपर्ने अवस्था छ। उक्त ऐनको दफा ५५ मा “यस ऐनबमोजिमको अनुसन्धानको काम कारबाहीमा सहयोग गर्ने अभियुक्तलाई अनुसन्धान अधिकृतले आफ्नो साक्षीको रूपमा प्रस्तुत गरी निजलाई सजायको मागदाबीमा पूर्ण वा आंशिक छुट दिन सक्ने छ” भनी उल्लेख गरेको र सोही दफाको प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशमा “तर निजले गरेको सहयोग अन्य सबुद वा प्रमाणबाट प्रमाणित नभएमा वा निजले मुद्दा हेर्ने अधिकारीसमक्ष अनुसन्धान अधिकारीलाई गरेको सहयोग प्रतिकूल हुने गरी बयान दिएमा यस ऐन वा प्रचलित कानूनमा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि निजउपर पुनः मुद्दा दायर गर्न सकिने छ” भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ। उक्त ऐनको दफा ५५ बमोजिम अनुसन्धानको काम कारबाहीमा सहयोग गर्ने अभियुक्तलाई अनुसन्धान अधिकृतले साक्षीको रूपमा प्रस्तुत गरी निजलाई सजायको मागदाबीमा पूर्ण वा आंशिक छुट दिएको व्यक्तिलाई निजले अदालतमा प्रतिकूल हुने गरी बकपत्र गरेमा सोही दफाको प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशबमोजिम पुनः मुद्दा

चलाउन सक्ने भन्ने कानूनी व्यवस्थालाई समग्रमा हेर्नु आवश्यक हुन्छ । विधायिकाले भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ५५ को व्यवस्था राख्नुको पछाडि अनुसन्धानलाई सदैव छिटोछरितो, स्वतन्त्र र प्रभावकारी रूपमा सम्पन्न गर्न आवश्यक भएको भन्ने विधिशास्त्रीय मान्यतालाई अवलम्बन गरी त्यसरी गरिने अनुसन्धानमा कुनै कारणीले सहयोग पुऱ्याई न्याय सम्पादनमा सहयोग पुऱ्याउँछ भन्ने त्यस्तो व्यक्ति अभियुक्त नै हो भन्ने पनि निजलाई पूर्ण वा आंशिक छुट दिई ऐनको मनसायबमोजिम अनुसन्धान सम्पन्न गरी मुद्दा अगाडि बढाउने उद्देश्य राखेको छ । कुनै व्यक्ति अभियुक्त नै हो भन्ने पनि निजले आफू साबित भई प्रमाण सङ्कलनमा सहयोग गरी छिटोछरितो कारबाहीलाई सहयोग पुऱ्याएबापत सरकारको साक्षीको रूपमा प्रस्तुत गर्नु विभिन्न मुलुकहरूमा अपनाई आएको पद्धति हो । तर यस्ता अभियुक्तले आफूलाई लागेको आरोपमा अनुसन्धानमा दिएको बयानमा अडिग रहनु उक्त दफाको मनसाय रहेको छ । मुद्दा चल्दा फरक बयान दिई मुद्दाको कारबाहीलाई असहयोग गर्ने व्यक्तिले आफूले गरेको गैरकानूनी कार्यबाट उन्मुक्ति पाउन नसक्ने । प्रस्तुत मुद्दामा रिट निवेदकले मुद्दा हेर्ने अधिकारीसमक्ष अनुसन्धान अधिकारीलाई गरेको सहयोग प्रतिकूल हुने गरी बकपत्र गरे नगरेको के रहेछ मिसिल संलग्न कागजात हेर्नुपर्ने देखियो । सेवाग्राही रमेश भण्डारीबाट इन्जिनियर लालसिंह ऐरीले अन्तिम बिल भुक्तानी गरिदिएबापत रु.१,२०,०००।- घुस / रिसवत लिने कार्यमा इन्जिनियर सुबिर राईको समेत उपस्थिति रही निजले सहयोगी र मतियारको भूमिका निर्वाह गरी भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा २२ बमोजिम सजाय हुनुपर्ने देखिए तापनि निज इन्जिनियर सुबिर राईले तत्कालीन अनुसन्धान अधिकृतलाई घुस लेनदेनको यथार्थ विवरण खुलाई दिई अनुसन्धान कार्यमा सहयोग गरेको आधारमा भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ५५ बमोजिम आयोगको मिति २०७२।३।७ गतेको निर्णयअनुसार

सजायको मागदाबीमा पूर्ण छुट दिई निज सुबिर राईलाई सरकारी साक्षीको रूपमा प्रस्तुत गरी प्रतिवादी लालसिंह ऐरीका विरुद्ध विशेष अदालत, काठमाडौँमा मिति २०७२।३।८ मा आरोपपत्र दायर गरिएको देखिन्छ । विशेष अदालतमा यी सुबिर राईले बकपत्र गर्दा अनुसन्धानको क्रममा गरेको बयान बेहोरा र सहयोगको प्रतिकूल हुने गरी बकपत्र गरेको भनी बकपत्रको प्रतिलिपिसहित विशेष सरकारी वकिल कार्यालयको च.नं.८२२ मिति २०७३।८।७ को पत्रबाट लेखी आएअनुसार निजलाई आयोगमा झिकाई बयान गराइएको र विशेष अदालतमा बकपत्र गर्दा आयोगमा गरेको बयान प्रतिकूल हुन गएको हो भनी सनाखतसमेत गरिदिएकोले भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ५५ को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशको प्रावधानबमोजिम मुख्य अभियुक्त लालसिंह ऐरीलाई अपराध गर्नको लागि सहयोगीको भूमिका खेलेको पुष्टि हुन आएकोले प्रतिवादी सुबिर राईलाई भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ३(१) र ३(१)(घ) ले हुने सजायमा सोही ऐनको दफा २२ बमोजिम सजाय हुन मागदाबी लिई आयोगको मिति २०७४।३।२२ को निर्णयअनुसार आरोपपत्र दायर गरिएको देखिन्छ । निजको अपराधमा कुनै भूमिका थियो थिएन, भए निजको कुन तहको संलग्नता हो भन्ने विषयमा अदालतबाट मुद्दाको रोहमा प्रमाण बुझी फैसला हुनेमा सो भ्रष्टाचार (घुस / रिसवत) मुद्दा मिति २०७५।२।२३ मा विशेष अदालतबाट फैसला भई सो फैसलाउपर पुनरावेदन परी हाल यस अदालतमा कारबाहीयुक्त अवस्थामा रहेको देखिने ।

जहाँसम्म निवेदकलाई भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ५५ बमोजिम सजाय माग दाबीमा पूर्ण छुट दिई निजलाई सरकारी साक्षीको रूपमा प्रस्तुत गरिएको व्यक्तिलाई विशेष अदालतमा प्रतिकूल बकपत्र गरेकै आधारमा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ४७ को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशमा उल्लेख भएबमोजिम मुद्दा चलाउन मिल्ने होइन भन्ने निवेदकको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् कानून व्यवसायीको बहस जिकिर

छ सो सम्बन्धमा विचार गर्दा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ४७ को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशमा “तर झुठा बकेबापत कुनै कारबाहीबाहेक जवाफ दिन कर लगाइएको यस्तो कुनै जवाफको आधारमा निजलाई पक्राउ गर्न वा निजउपर कुनै फौजदारी कारबाही चलाउन हुँदैन र त्यस्तो जवाफ अरु कुनै फौजदारी मुद्दामा प्रमाणमा लाग्ने छैन” भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ । भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ५५ मा “यस ऐनबमोजिमको अनुसन्धानको काम कारबाहीमा सहयोग गर्ने अभियुक्तलाई अनुसन्धान अधिकृतले आफ्नो साक्षीको रूपमा प्रस्तुत गरी निजलाई सजायको मागदाबीमा पूर्ण वा आंशिक छुट दिन सक्ने छ” भनी उल्लेख गरेको र सोही दफाको प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशमा “तर निजले गरेको सहयोग अन्य सबुद वा प्रमाणबाट प्रमाणित नभएमा वा निजले मुद्दा हेर्ने अधिकारीसमक्ष अनुसन्धान अधिकारीलाई गरेको सहयोग प्रतिकूल हुने गरी बयान दिएमा यस ऐन वा प्रचलित कानूनमा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि निजउपर पुनः मुद्दा दायर गर्न सकिनेछ” भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ । यसरी उक्त भ्रष्टाचार निवारण ऐनको दफा ५५ को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशमा “...यस ऐन वा प्रचलित कानूनमा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि निजउपर पुनः मुद्दा दायर गर्न सकिने छ” भनी उल्लेख गरेको देखिएकोले यी निवेदकले उक्त भ्रष्टाचार मुद्दाको अनुसन्धानमा सहयोग गरेबापत सरकारी साक्षीको रूपमा प्रस्तुत गरी निजलाई सजायको मागदाबीमा पूर्ण छुट दिएको र पछि विशेष अदालतमा बकपत्र गर्दा अनुसन्धानमा गरेको सहयोगको प्रतिकूल हुने गरी निज प्रतिवादी लालसिंह ऐरीलाई नै फाइदा पुग्ने गरी बकपत्र गरेको मिसिल संलग्न कागजात तथा विपक्षीहरूको लिखित जवाफबाट देखिएकोले निज निवेदक सुबिर राई विरुद्ध सजायको मागदाबी लिई विशेष अदालतमा मुद्दा दायर गर्न सक्ने नै देखिँदा निज निवेदकको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् कानून व्यवसायीको बहस जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन ।

निज विरुद्ध मुद्दा चलाएकै कारणबाट निज निवेदकको संवैधानिक तथा कानूनी हकमा आघात पुगेको रहेछ भन्ने अवस्था देखिन नआउने ।

यसरी मुद्दाको अनुसन्धान र अभियोजन गर्न पाउने कानूनबमोजिम स्थापित निकायको क्षेत्राधिकार र नियमित अदालतमा कानूनबमोजिम चलिरहेको मुद्दालाई असाधारण अधिकार क्षेत्रको माध्यमद्वारा हस्तक्षेप गर्नु कानूनसम्मत देखिँदैन । संवैधानिक अङ्गको रूपमा रहेको अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगलाई संविधान तथा सम्बन्धित कानूनले मुद्दाको अनुसन्धान र अभियोजन गर्न दिएको अधिकार र कानूनबमोजिम नियमित अदालतमा दर्ता भई कारबाहीयुक्त अवस्थामा रहेको मुद्दालाई प्रभावित गर्दै जाने हो भने कानूनले निर्धारण गरेको न्यायिक प्रक्रिया नै अवरुद्ध हुन गई कानूनको शासनमा नै आघात पुग्न जाने ।

तसर्थ, माथि उल्लिखित विवेचित आधार र कारणहरूबाट भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ५५ बमोजिम मुद्दाको अनुसन्धानको काम कारबाहीमा सहयोग गर्ने अभियुक्तलाई सजाय मागदाबीमा पूर्ण वा आंशिक छुट दिई मुद्दा नचलाउने निर्णय गरिसकेपछि निजले मुद्दा हेर्ने अधिकारीसमक्ष अनुसन्धान अधिकारीलाई गरेको सहयोग प्रतिकूल हुने गरी बकपत्र गरिदिएमा उक्त ऐनको दफा ५५ को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशबमोजिम पुनः मुद्दा दायर गर्न सक्ने नै देखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : लालसिंह थापा

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७६ साल कार्तिक २९ गते रोज ६ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७३-WO-१३५४, उत्प्रेषण / परमादेश / प्रतिषेध, गणेशबहादुर अधिकारीसमेत वि. टोखा नगरपालिका कार्यालय, धापासी हाइट, काठमाडौंसमेत असल नियतले कुनै काम कुरा गर्दा पनि



छरछिमेक वा स्थानीय व्यक्तिहरूलाई स्पष्ट जानकारी नहुने गरी अपारदर्शी रूपमा गरिएमा केही अविश्वास र शंका उब्जनु अस्वाभाविक हुँदैन । जुनसुकै निकाय वा संस्थाले कुनै काम गर्दा सर्वसाधारणका लागि पनि सुशासनको अवधारणाअनुरूप पारदर्शीरूपमा काम गर्नु आवश्यक हुन्छ । प्रस्तुत विवादमा पनि विपक्षीहरूले छरछिमेक र स्थानीय व्यक्तिहरूसमेतलाई उल्लिखित स्थानमा गर्न लागेको विषयमा प्रस्ट जानकारी दिएको देखिँदैन । आधिकारिक नक्सामा मन्दिर नै हराएको र सार्वजनिक जग्गाहरूको संरक्षण गर्न प्रयत्नशील रहेको भन्ने टोखा नगरपालिका र ऐ.को १० नं. वडा कार्यालयका तर्फबाट कानून व्यवसायीहरूले यस इजलाससमक्ष बहस प्रस्तुत गर्नु भएको हुँदासमेत यस्तो अवस्थामा सार्वजनिक जग्गा तथा मन्दिर आदिको संरक्षण प्रयोजनार्थ दर्ता हुन आएको प्रस्तुत निवेदनको मनसाय उचित नै देखिन्छ । यस प्रकारको सचेतना भएमा नै धार्मिक, सार्वजनिकलगायतका संरचना र जग्गाहरूको संरक्षण हुने विषयमा विवाद हुन सक्दैन । उक्त सार्वजनिक जग्गामा निर्मित मन्दिर संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालय, पुरातत्त्व विभागले २०६१ सालमा प्रकाशित गरेको “काठमाडौँ जिल्लाका गा.वि.स.हरूका सांस्कृतिक सम्पदाहरूको विवरण” भाग २ को पृष्ठ १२ सूचीकरण संख्या १७-१-२ मा यो मन्दिर उल्लेख भएको र त्यसमा उक्त मन्दिरलाई प्राचीन मन्दिर भनी उल्लेख गरिएको अवस्थासमेत देखिन्छ । सो मन्दिर जीर्ण रहेको भन्ने मिसिल संलग्न मन्दिरका तस्बिरबाट पनि देखिन आएको छ । यस्तो राष्ट्रिय सम्पदामा सूचीकृत गरिएको जीर्ण मन्दिरको संरक्षण गर्नु सरोकारवाला सबै पक्षको दायित्व हो । सार्वजनिक जग्गामा रहेको मन्दिर संरक्षणको लागि सार्वजनिक जग्गाको संरक्षण गर्ने अधिकारप्राप्त निकायहरूबाट नै मन्दिर तथा जग्गाको संरक्षण गर्नको लागि आवश्यक निर्माण कार्य गर्न सम्झौता गर्नुलाई अन्यथा भन्न सकिने अवस्था देखिएन । त्यसरी मन्दिरकै संरक्षणका लागि स्थापित

समितिबाट मन्दिर रहेकै सार्वजनिक जग्गामा मन्दिर संरक्षणकै लागि गरिने कार्यबाट कुनै व्यक्तिको व्यक्तिगत हक अधिकारमा असर परेको छ भनी मान्न सकिने अवस्था देखिँदैन । मन्दिरकै संरक्षणको लागि स्थापित श्री महेन्द्रेश्वर शिवालय संरक्षण समितिमा सोही स्थानका स्थानीयबासीहरूको संलग्नता रहने तथा रहनुसमेत पर्ने र सो स्थानलाई कसरी संरक्षण र उपयोग गर्ने भन्ने वडा समिति तथा मन्दिर संरक्षण समितिले आवश्यक छलफल गर्ने र निर्णय गरी सार्वजनिक हितको कार्य गर्ने उद्देश्य राखेको हुँदा सार्वजनिक जग्गालाई संरक्षण गरी व्यवस्थित बनाउने प्रयोजनको लागि गरिने कार्यबाट कुनै व्यक्तिको व्यक्तिगत हक अधिकारमा असर परेको छ भनी मान्न सकिने अवस्था नदेखिने ।

Public trust doctrine का अनुसार पनि सम्पदाहरूको संरक्षण र सम्बर्द्धन वर्तमानका साथै भावी पिँढीहरूका हितको लागि गर्नुपर्छ । आफू बसोबास गर्दै आएको स्थानमा स्वच्छ वातावरण कायम गरी वातावरण संरक्षण गर्ने, सो स्थानको उचित संरक्षण र सम्बर्द्धन गर्ने, सार्वजनिक स्थानको प्रयोग गर्ने र त्यसबाट प्राकृतिक रूपमा लाभ प्राप्त गर्ने हक अधिकार त्यहीँका स्थानीय जनसमुदायको हुन्छ । प्राकृतिक सम्पदाहरूलाई व्यापारिक तथा व्यावसायिक प्रयोजनका लागि हस्तान्तरण र प्रयोग गर्न दिनु अपेक्षित हुँदैन । सम्पदाहरूको संरक्षणका लागि सरकारी तवरबाट हुने कार्यहरू पनि स्थानीय जनताको हित प्रवर्द्धन हुने तवरबाट गरिनु पर्दछ । प्राकृतिक सम्पदाहरूको संरक्षण र प्रयोग प्राकृतिक रूपमै स्थानीय व्यक्तिहरूको हित हुने गरी गरिएको अवस्थालाई अनुचित मानिँदैन । सो हुँदा सार्वजनिक जग्गाको संरक्षण गर्ने मन्दिर वरिपरि खुला र स्वच्छ वातावरण कायम गर्ने र मन्दिरको उचित व्यवस्थापनको लागि श्री महेन्द्रेश्वर शिवालय संरक्षण समितिले पहल गरी सार्वजनिक हितका लागि आवश्यक संरक्षणात्मक कार्य गरेकोलाई प्रस्तुत सन्दर्भमा अन्यथा मान्नुपर्ने अवस्था देखिएन ।

मन्दिरमा दर्शनार्थीहरूको भिड बढ्ने क्रम जारी रहेको अवस्थामा त्यसलाई सरसफाई गरी व्यवस्थित र सुरक्षित गर्ने कार्य पारदर्शी रूपमा सञ्चालनमा रहेको मन्दिर व्यवस्थापन समितिको दायित्व नै हुन पुग्छ । यसरी कानूनबमोजिम जिल्ला प्रशासनमा दर्ता भई जनसहभागिता रहने सामाजिक संस्थाले स्थानीय तह टोखा नगरपालिकासमेतको आर्थिक सहयोगमा मन्दिरको संरक्षण गर्ने शौचालय तथा अनावश्यक रूपमा खुला जग्गा नमासी निर्माण गरिने सामुदायिक भवन र त्यसको मर्मत, सम्भार, सुधार, सरसफाई आदि कुनै व्यक्तिको निजी स्वार्थको लागि गरिएको मान्न मिल्दैन । सो निर्माण कार्यबाट लाभ लिन सक्ने व्यक्तिहरू भनेको सोही स्थानका स्थानीय व्यक्ति तथा समुदायले नै हो । सार्वजनिक हितको लागि जग्गा तथा मन्दिरको संरक्षणका लागि गरिएका कार्यहरूबाट निवेदकका हक अधिकारमा असर पर्न सक्ने अवस्था नदेखिने ।

शौचालयसमेतको निर्माण कार्य हाल कुन अवस्थामा छ, हालको भौतिक अवस्थासमेत देखिने गरी विपक्षी टोखा नगरपालिका कार्यालय तथा श्री महेन्द्रेश्वर शिवालय संरक्षण समितिबाट मगाई नियमानुसार पेस गर्नु भन्ने यस अदालतबाट मिति २०७५।९।४ मा भएको आदेशबमोजिम प्रस्तुत हुन आएको उक्त सार्वजनिक जग्गा तथा मन्दिरको तस्विरसमेतबाट निवेदकहरूले निवेदनमा खुलाएबमोजिमको व्यापारिक कम्प्लेक्स बनाएको अवस्था देखिँदैन । साथै सो सार्वजनिक जग्गामा पहिरो जान थालेको हुँदा त्यसलाई क्षति हुनबाट जोगाउन सामुदायिक भवन निर्माण गरिएको हो भन्नेसमेत देखिन आयो । साथै सो स्थानमा रहेको सार्वजनिक जग्गाको संरक्षणको लागि रिटेनिङ्ग वाल निर्माण गरेको अवस्था पनि देखियो । यसरी निवेदकहरूले रिट निवेदनमा दाबी लिएबमोजिम सार्वजनिक जग्गाको दुरुपयोग गरेको र व्यापारिक कम्प्लेक्स बनाएको अवस्थासमेत नदेखिँदा निवेदकहरूको मागबमोजिमको आदेश जारी हुनुपर्ने

नदेखिने ।

अतः भवन निर्माण भइसकेको अवस्था देखिएको र निर्माण कार्यहरू कुनै व्यक्तिगत लाभको लागि नभई सार्वजनिक प्रयोजन तीर्थालु, श्रद्धालु र भक्तजनहरूको सुविधाको लागि भएको र निवेदकले दाबी गरेजस्तो व्यापारिक कम्प्लेक्स निर्माण गर्न लागेको भन्ने अवस्थासमेत नदेखिँदा सार्वजनिक सम्पत्तिको व्यवस्थापनले यी रिट निवेदकको हक अधिकारमा असर परेको भनी मान्न सकिने प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्छ । प्रस्तुत निवेदन खारेज भए पनि सार्वजनिक सम्पत्तिको संरक्षणार्थ निम्नबमोजिम निर्देशनात्मक आदेश जारी गरिएको छ ।

- टोखा नगरपालिकाबाट साबिक गोंगबु गा.वि.स. वडा नं. ७ साबिक कि.नं. १९१ को जग्गा हाल के कुन अवस्थामा छ सोको भौतिक अवस्था यकिन गरी महेन्द्रेश्वर शिवालय मन्दिर र सो परिसरको जग्गा संरक्षण गर्ने पूर्ण प्रबन्ध मिलाउनु ।
- श्री महेन्द्रेश्वर शिवालय मन्दिर र उक्त कि.नं. १५ र १०८ साबिक कि.नं. १९१ को क्षेत्र संरक्षण गर्नु नगरपालिकासमेतको कर्तव्यको विषय हुँदा कुनै गुरुर्योजना नै नबनाएको उपभोक्ता समितिको नाममा हठात निर्णय गरी छरछिमेकीलाई पारदर्शी रूपमा जानकारी नदिई गरेको कार्यले सुशासनको अनुभूति नदिने हुँदा आगामी दिनमा मन्दिर तथा मन्दिर वरिपरिका सार्वजनिक जग्गाको संरक्षण, मर्मत सम्भार सुरक्षाको लागि गरिने कार्यहरूबाहेक अन्य निर्माण गर्दा कानूनबमोजिमका मापदण्डको पालना नगरी नगरपालिकाभित्रको सार्वजनिक जग्गामा समेत निर्माण कार्य नगर्नु नगराउनु ।
- श्री महेन्द्रेश्वर शिवालय मन्दिर भएको जग्गा यकिन गरी कसैबाट मिचिएको भए सो हटाई साबिक कि.नं. १९१ को क्षेत्रफल

११-८-०-० कायम गराउन नापी विभाग र नगरपालिकालाई लेखी पठाउनु ।

- अनावश्यक संरचना बनाई मन्दिर क्षेत्रको स्वच्छ वातावरणमा प्रतिकूल असर नपार्नु ।
- मन्दिरको खुल्ला क्षेत्र पूर्ववत् कायम गराई त्यस क्षेत्रका बासिन्दाहरूले समेत स्वच्छ स्थानमा घुम्ने, मन्दिरमा पूजाआजा गर्न सक्ने अवस्था कायम गराउनु ।

इजलास अधिकृत:- गेहेन्द्रराज रेग्मी

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७६ साल माघ २२ गते रोज ४ शुभम् ।

- यसमा यसै लगाउको ०७३-WO-१३०८, उत्प्रेषण / परमादेश, रामबहादुर अधिकारी वि. टोखा नगरपालिका कार्यालय, टोखा काठमाडौं भएको मुद्दामा यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

इजलास नं. १०

१

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७२-CR-०१७७, लागु औषध (हेरोइन), नेपाल सरकार वि. मोहनकुमार दर्लामीसमेत**

निज प्रतिवादी मोहनकुमार दर्लामीले बनाएको २० पुरियाको परिमाण १ ग्राम ३३० मि.ग्रा. रहेको छ भने सोको करिब दोब्बर परिमाणमा प्रतिवादी मोहनकुमार दर्लामीको अर्को २ कोठे घरबाट ३ पुरियामा २ ग्राम ५० मि.ग्रा. लागु औषध हेरोइन बरामद भएको अर्थात् घरमा सञ्चय गरी राखेको देखिन आएको छ । यसबाट प्रतिवादीबाट बरामद भएको लागु औषध निज प्रतिवादीले सेवन गर्ने प्रयोजनको लागि मात्र खरिद गरी ल्याएको, सञ्चय गरी राखेको कुरा पत्थारलायकको देखिन आउँदैन । लागु औषध सेवनको आधिकारिकता पनि प्रतिवादीबाट पुष्टि हुन सकेको छैन । बिक्री गर्ने उद्देश्यबाट धेरै पुरियामा डोज बनाएको, केही घरमै

सञ्चय गरी राखेको अवस्था देखिन आयो । यस अवस्थामा सेवनको उद्देश्यले ल्याएको भन्ने प्रतिवादी जिकिरमाथि विवेचित आधार प्रमाणबाट स्वीकारयोग्य देखिएन । यसबाट प्रतिवादीहरूबाट अभियोग मागदाबीबमोजिम लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४ को देहाय (ड) (च) को निषेधित कार्य कसुर प्रतिवादीहरूबाट भएको देखिन आएकोले सुर्खेत जिल्ला अदालतबाट निज प्रतिवादीहरूलाई उल्लिखित निषेधित कार्य कसुर गरेकोमा उक्त ऐनको दफा १४(१)(छ) को (१) बमोजिम सजाय गर्नुपर्नेमा उक्त कार्य कसुर सेवन प्रयोजनको लागि हो भनी दफा १४(१)(ड) बमोजिम सेवनतर्फ सजाय गरेको मिति २०७१/०१/२२ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई प्रतिवादीहरू मोहनकुमार दर्लामी र विक्रान्त गिरीलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४ को (ड)(च) को कसुरमा दफा १४(१)(छ)(१) बमोजिम जनही ५(पाँच) वर्ष कैद र जनही रु.५,०००/- (पाँच हजार) जरिवाना हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७२/०१/०६ मा भएको फैसला मनासिब नै देखिँदा अन्यथा गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिने ।

बरामद मोटरसाइकलमा राखी उक्त लागु औषध ओसार पसार गरेको देखिन आउँदैन । मोटरसाइकल आफ्नो सवारीको रूपमा प्रयोग गरेकोसम्म देखिएको, लागु औषध उक्त सवारी साधनबाट ओसार पसार भएको अवस्था नदेखिँदा र बरामद नगदसमेतका अन्य सामान सामान्य र नगन्य रूपमा रहेको देखिँदा उक्त नगद तथा सामान कारोबारबाट आर्जन गरेको नदेखिएको तथा कारोबारमा प्रयोग भएको पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा मोटरसाइकललगायतका बरामद नगद जफत गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिने ।

माथि विवेचित आधार, प्रमाण र कारणहरूसमेतबाट प्रतिवादी मोहनकुमार दर्लामी तथा विक्रान्त गिरीले लागु औषध (हेरोइन) भारतको रूपैडियामा खरिद गरी नेपालमा भित्र्याई सो स्थानबाट

सुर्खेतसम्म बोकी ल्याई बिक्री गर्ने उद्देश्यले साना साना डोजमा पुरिया बनाई, केही लागु औषध घरमै सञ्चय गरी राखी लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(ड) (च) बमोजिमको निषेधित कार्य कसुर गरेको देखिँदा सुर्खेत जिल्ला अदालतले निजहरूलाई उल्लिखित निषेधित कार्य कसुर गरेकोमा उक्त ऐनको दफा १४(१)(छ) को (१) बमोजिम सजाय गर्नुपर्नेमा उक्त कार्य कसुर सेवन प्रयोजनको लागि हो भनी दफा १४(१)(ड) बमोजिम सेवनतर्फ सजाय गरेको मिति २०७१/०१/२२ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई प्रतिवादी मोहनकुमार दर्लामी तथा विक्रान्त गिरीलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४ को (ड)(च) को कसुरमा दफा १४(१)(छ)(१) बमोजिम जनही ५(पाँच) वर्ष कैद र जनही रु.५,०००/- (पाँच हजार) जरिवाना हुने तथा बरामद भएका मोटरसाइकल तथा मालवस्तुसमेत जफत नहुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७२/०१/०६ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: विपिनकुमार महासेठ

इति संवत् २०७५ साल आषाढ ६ गते रोज ४ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या. श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७२-CR-०९५१, लागु औषध (ब्राउनसुगर), नेपाल सरकार वि. चिरणजिवी शाहीसमेत**

बरामदी मुचुल्काअनुसार प्रतिवादी चिरणजिवी शाहीबाट ३ पोका र अर्का प्रतिवादी निरक रोका मगरबाट २२ पुरिया गरी जम्मा १ ग्रा.९४० मि.ग्रा. ब्राउन सुगर बरामद भएकोमा विवाद देखिँदैन् । उक्त तथ्यलाई दुवैजना प्रतिवादीहरूले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्षको बयानमा समेत स्वीकारेको पाइन्छ । दुवै प्रतिवादीहरूले उक्त ब्राउन सुगर लागु औषध आफूबाट बरामद भएको होइन भनी अदालतमा इन्कारी बयान गरे पनि सोको तथ्ययुक्त

प्रमाण दिन सकेका छैनन् । लागु औषध ब्राउन सुगर मौकामा निजहरूकै साथबाटै बरामद भएपछि अदालतको बयानमा निजहरू कसुरप्रति इन्कार हुँदा प्रतिवादीहरूले कसुरबाट उन्मुक्ति पाउने अवस्था र आधार हुन सक्दैन । मौकामा निजहरूको साथबाट लागु औषध ब्राउन सुगर बरामद भएको अवस्था हुँदा प्रतिवादी चिरण शाहीले मौकाको बयानमा बरामदी भएको तथ्यलाई स्वीकारेको र अदालतको बयानमा समेत आफूले कहिलेकाहीँ सेवन गर्ने गरेको भनी गरेको बयानलाई अर्का प्रतिवादी निरक रोका मगरले समर्थन गर्दै बयान गरेको पाइन्छ । प्रतिवादी चिरणजिवी शाहीले अदालतको बयानमा समेत आफूले पहिला लागु औषध सेवन गर्ने गरेको भनी लेखाएबाट दुवै प्रतिवादीहरू लागु औषध ब्राउन सुगरका सेवनकर्तासमेत भएको तथ्य स्पष्ट हुन्छ । प्रतिवादीहरूबाट बरामदी लागु औषध कुनै तेस्रो व्यक्तिलाई बिक्री गर्न लाग्दा लाग्दै बरामद भएको अवस्था छैन । नापतौल गर्ने कुनै साधनसमेत बरामद भएको अवस्था पनि छैन । प्रतिवादी चिरणजिवी शाहीबाट २ पुरिया र अर्का प्रतिवादी निरक रोका मगरबाट २२ पुरिया गरी जम्मा १ ग्रा.९४० मिलीग्राम लागु औषध ब्राउन सुगर बरामद भएको हुँदा बरामदी परिमाणको आधारमा पनि उक्त लागु औषध बेचबिखनको लागि ओसार पसार गरेको भन्न मिल्ने अवस्था नदेखिने ।

प्रतिवादीहरूबाट बरामद भएको लागु औषध ब्राउन सुगरको परिमाणले प्रतिवादीहरूले मौकामा आफूहरूले उक्त लागु औषध ब्राउन सुगर सेवन गर्ने गरेको भनी गरेको बयानलाई नै समर्थन र सम्पुष्टि गरेको पाइन्छ । प्रतिवादीहरूबाट बरामदी लागु औषध ब्राउन सुगरको परिमाण, निजहरूको मौकाको बयान र वादी पक्षले नै प्रतिवादीहरूको विरुद्धमा लिइएको अभियोग दाबीअनुसार पनि प्रतिवादीहरूलाई लागु औषध सेवनको कसुरमा बाहेक अन्य कसुरमा सजाय गर्ने गरेको सुरुको फैसला उल्टी हुने ठहरी बरामद लागु औषध ब्राउन सुगरको मात्रा र परिमाण र सोको प्रयोग

गर्ने उद्देश्यको आधारमा प्रतिवादीद्वय चिरणजिवी शाही र निरक रोका मगरलाई ऐ. ऐनको दफा ४(छ) को कसुरमा ऐ.को दफा १४(१)(ड) बमोजिम जनही १(एक) वर्ष कैद हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७२/०३/३० मा भएको फैसला मनासिब नै देखिँदा अन्यथा गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिने।

अतः माथि विवेचित आधार, प्रमाण र कारणहरूसमेतबाट प्रतिवादीहरू चिरण भन्ने चिरणजिवी शाही र निरक रोका मगरबाट एक ग्राम नौ सय चालिस मिली ग्रामको कम मात्रामा लागु औषध ब्राउन सुगर बरामद भएको र प्रतिवादीहरूको सेवन गर्ने गरेको तथ्य पुष्टि भएको हुँदा निज प्रतिवादीहरूलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(घ) (च) र (छ) को कसुरमा ऐ. ऐनको दफा १४(१)(ड)(छ) (१) बमोजिम जनही ५ (पाँच) वर्ष कैद र रु. ५,०००।- (पाँच हजार) जरिवाना गर्ने गरेको सुरु सुर्खेत जिल्ला अदालतको मिति २०७१/१२/१६ को फैसला उल्टी भई बरामदी लागु औषध ब्राउन सुगरको मात्रा र परिमाण र सोको प्रयोग गर्ने उद्देश्यको आधारमा प्रतिवादीद्वय चिरण भन्ने चिरणजिवी शाही र निरक रोका मगरलाई ऐ. ऐनको दफा ४(छ) को कसुरमा ऐ.को दफा १४(१) (ड) बमोजिम जनही १(एक) वर्ष कैद हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७२/०३/३० मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७५ साल आषाढ ६ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं. ११

१

मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७१-CI-०४२३, हक कायम जग्गा खिचोला चलन, अजयकुमार साहसमेत वि. मिश्री पण्डित कुम्हार पुनरावेदन अदालत जनकपुरले सुरु

धनुषा जिल्ला अदालतले गरेको फैसला उल्टी गरी फिराद मागदाबीअनुसार प्रतिवादीहरूले वादीको जग्गा खिचोला गरेको ठहर्‍याई गरेको फैसला बदर गरिपाउँ भनी यस अदालतमा दायर गरेको पुनरावेदन जिकिरतर्फ विचार गर्दा फिरादीले १९८३ सालको नापीमा वुधन पण्डित कुम्हारका नाउँमा दर्ता भएको निजी हक स्वामित्वको जग्गा २०२२ सालमा ७ नं. फाँटवारी भर्दा म मिश्री पण्डित तथा हजुरआमा सुती कुम्हैनको छुट्टाछुट्टै नामबाट फाराम भरी २ वटा कित्ता जग्गाहरू गाउँबकलमा राखी अरु जग्गाहरू २०२६ सालको नापीमा दर्ता गराएको भनी उल्लेख गरेको अवस्था रहेको देखिने।

प्रत्यर्थी प्रतिवादी झगरू साहसमेतले धनुषा जिल्ला अदालतमा पेस गरेको प्रतिउत्तरपत्रमा विवादित जग्गाहरू के कसरी कहाँबाट आएको हो भन्ने सम्बन्धमा स्रोत उल्लेख गर्न नसकी प्रतिउत्तरपत्रको प्रकरण नं. (घ) मा हाफ्रो बन्डापत्रभित्रको जग्गा भनी उल्लेख गरेको, प्रकरण नं. (छ) मा उक्त कि.नं. १३ र ३३ अन्तर्गतको जग्गा हो उक्त गाउँ बलक महलमा श्री ५ को सरकारको नाउँमा दर्ता छ भनी र प्रकरण नं. (ज) मा उक्त जग्गा वादीकी हजुरआमा स्वयंले घरसारमा बिक्री गरिसकेको जग्गा हो भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ। यसरी प्रतिउत्तरमा सो जग्गा सम्बन्धमा प्रतिवादीहरूले एकरूपता पूर्णरूपले आफ्नो भनाइ राख्न सकेको अवस्था देखिँदैन। सुरु धनुषा जिल्ला अदालतको आदेशबमोजिम भएको स्थलगत नक्सा मुचुल्कामा नक्सा नं. ९ को जग्गा सर्वे कि.नं. ३३ को आफ्नो जग्गा हो भनी उल्लेख गरेको भए तापनि कि.नं. ३३ को जग्गा श्री ५ को सरकारको नाममा दर्ता भएको जग्गा हो भनी स्वयं यी प्रतिवादीहरूले आफूले फिराएको प्रतिउत्तरमा उल्लेख गरेको अवस्था रहे भएकोबाट प्रतिवादीहरूको भनाइ आफैँमा विरोधाभाषपूर्ण रहेको देखिन्छ। वादीले वा प्रतिवादीहरूले जग्गा जस्तो अचल सम्पत्तिमा आफ्नो हक हुन आउँदा के कुन स्रोतबाट के कसरी प्राप्त हुन आएको हो भन्ने कुरा प्रस्ट रूपमा प्रमाण

पुर्णानुपुर्ण हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीहरूले सो विवादित जग्गामा आफ्नो हक स्थापित हुने त्यस्तो कुनै तथ्ययुक्त कागज प्रमाणहरू पेस गर्न सकेको अवस्था नदेखिने ।

विवादित नक्सा नं.९ को जग्गामा पक्की घर तथा अन्य फुसका घरहरू भई कम्पाउन्ड वालसमेत लगाई फिरादीले नै भोग गरी आएको भन्ने अदालतबाट भई आएको नक्साबाट देखिन्छ । उक्त घर जग्गाको वरिपरि प्रतिवादीहरूको कुनै किसिमको घर जग्गासमेत रहे भएको भन्ने देखिँदैन । नक्सा नं.४ को जग्गा फिरादीले आफ्नो कि.नं.१४५९ भित्रको जग्गा हो भनी उल्लेख गरेका छन् भने प्रतिवादीले सिफारिसअनुसारको मेरो जग्गा हो भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ । नक्सा नं.४ तथा नक्सा नं.९ का दुवै कित्ता जग्गाहरूको साबिकको चारैतर्फको सिमाना तथा हालको सिमानासमेत मिल्न भिड्न आएको र नक्सा मुचुल्कामा कागज गर्ने व्यक्तिहरूले समेत विवादित घर जग्गामा धेरै पहिलेदेखि वादी मिश्री पण्डितले भोग चलन गर्दै आएको घर जग्गा हो भनी लेखाई दिएको देखिन्छ । प्रतिवादीहरूले आफ्नो भनी जिकिर लिएको विवादित जग्गामा वादी पक्षले घरहरू बनाई कम्पाउन्ड वालसमेत लगाई अविच्छिन्न रूपमा भोग चलनसमेत गर्दै आएको भन्ने कुरा सर्जमिनको कागजबाट समेत पुष्टि भएको देखिने ।

उक्त विवादित जग्गा प्रतिवादीकै थियो भने प्रतिवादीहरूबिच भएको २०४७।९।८ गतेको बन्डापत्रमा उक्त घरजग्गाहरू उल्लेख हुनुपर्ने थियो सो बन्डापत्रमा विवादित जग्गा उल्लेख भएको अवस्था देखिँदैन । पछि प्रतिवादीका छोराहरूका बिचमा मिति २०६४।७।२९ मा लेखेको बन्डापत्रमा समेत उक्त जग्गा किन उल्लेख भएन भन्ने सम्बन्धमा प्रतिवादी कथन मौन रहेको देखिन्छ । वादीको भोगचलनभित्रको घर जग्गाको सन्दर्भमा २०६४।७।२९ मा लेखेको बन्डापत्रभन्दा पछि २०६४।८।५ मा गाउँ विकास समितिबाट सिफारिस बनाई मिति २०६४।०७।२९

मा लेखेको बन्डापत्रमा सो जग्गासमेत उल्लेख गरी २०६४।८।९ मा बन्डापत्र पास गर्दैमा वादीको हकभोगमा रहेको जग्गामा प्रतिवादीको हक कायम हुन सक्ने अवस्था हुन सक्दैन । गा.वि.स.ले दिएको सिफारिस यथार्थमा विश्वासलायक र यथार्थपरक हुनु पर्दछ । विवादित घर जग्गामा फिरादीको एकलौटी रूपमा भोग र चलन छ भनी सर्जमिनका सम्पूर्ण मानिसहरूले लेखाई दिएको यथार्थ विपरीत भएको गाउँ विकास समितिको सिफारिसलाई प्रमाण ग्राह्य मान्न सक्ने अवस्था नरहने ।

अतः १९८३ सालको नापीमा वुधन पण्डित कुम्हारका नाउँमा दर्ता भएको निजी हक स्वामित्वको जग्गा २०२२ सालमा ७ नं. फाँटवारी भर्दा मिश्री पण्डित तथा निजकी हजुरआमा सुती कुम्हैनको छुट्टाछुट्टै नामबाट फाराम भरेको तथा सर्जमिनको कागजसमेतबाट सो जग्गाहरू वादी मिश्री पण्डित कुम्हारको देखिएको अवस्थामा वादी दाबीबमोजिम खिचोला ठहर गर्नुपर्नेमा वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्छ भनी सुरु धनुषा जिल्ला अदालतले मिति २०६८।२।८ मा गरेको फैसला उल्टी गरी फिराद मागदाबीबमोजिम प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेको ठहर्छ भनी पुनरावेदन अदालत जनकपुरले मिति २०७०।९।२८ मा गरेको फैसला मिलेकै देखिँदा सो फैसला सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- जनक सिंह बोहरा

इति संवत् २०७६ साल कार्तिक २० गते रोज ४ शुभम् । यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०७१-CI-०४२४, जग्गा खिचोला चलन, झगरु साह तेली वि. मिश्री पण्डितसमेत
- ०७१-CI-०४२९, जग्गा खिचोला चलन, झगरु साह तेली वि. मिश्री पण्डितसमेत
- ०७१-CI-०४२२, घर जग्गा खिचोला चलन, झगरु साह तेली वि. मिश्री पण्डितसमेत
- ०७१-CR-०४२८, जालसाजी, संजयप्रसाद साहसमेत वि. मिश्री पण्डित कुम्हार

मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७३-CR-१३७५, ०७४-CR-१०४०, ठगी, नेपाल सरकार वि. टेकराज श्रेष्ठसमेत, टेकराज श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठ Crest Adventure Pvt. Ltd. कम्पनी सञ्चालन गरी ट्रेकिङ व्यवसाय सञ्चालन गर्दै आएको पाइन्छ । प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठले जाहेरवाला किरणमयी नायकसँग सल्लाह गरी निजलगायत ३९ जना भारतीय तिर्थयात्रीहरूलाई कैलाश मानसरोवर तिर्थयात्रा गराई फर्काउने सहमतिबमोजिम निजहरूको राहदानीसमेत लिई प्रति व्यक्ति भा.रु.७५,०००/- का दरले रकम लिएको देखिन्छ । कैलाश मानसरोवर तिर्थयात्रा गराई ल्याउने भनी जाहेरवाला किरणमयी नायकसमेत ३९ जना तिर्थयात्रीहरूबाट ने.रु.४५,५५,२००/- लिएको स्वयम् प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठले अदालतमा आई बयान गर्दा स्वीकारेको पाइन्छ । निजले अदालतमा बयान गर्दा ३९ जना भारतीय तिर्थयात्रीहरूलाई मानसरोवर लैजानको लागि सहप्रतिवादी वाडपेन थोन्दुप लामासमेतले सञ्चालन गरेको Exotic Vacation Pvt. Ltd. मार्फत भिषा लिँदा ढिलो भएको र सो अवधिसम्म निज तिर्थयात्रीहरूलाई निजहरूकै सहमतिमा पोखरा, म्याग्दीको तातोपानी, मुस्ताङको जोमसोम भ्रमण गराएको र उक्त भ्रमण गर्दा लागेको खर्च रु.१९,८०,७८८/- निज जाहेरवालाहरूले नदिँदा विवाद भएको हुनाले मानसरोवर लान नसकिएको हो । निजहरूले जाहेरीमा उल्लेख गरेको रकम मैले लिएको होइन भनी बयान गरेको पाइन्छ । प्रतिवादीकै भनाइअनुसार पनि जाहेरवालालगायतका ३९ जना भारतीय तिर्थयात्रीहरूलाई कैलाश मानसरोवरको यात्रा गराउनको लागि निजहरूका राहदानीलगायतका अत्यावश्यक कागजातहरू लिई प्रक्रिया अगाडि बढाएको पाइन्छ । तर निजले आफूले जिम्मा लिएअनुरूप कैलाश मानसरोवर घुमाउन लान सकेको

नदेखिने ।

प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठले जाहेरवालासहितका ३९ जना भारतीय तिर्थयात्रीहरूलाई कैलाश मानसरोवर लैजान सहमति गरेपछि भारतमा बसोबास गर्ने जाहेरवालाहरूलाई भिषासहितका आवश्यक कागजातहरू तयार भई प्राप्त भएपछि मात्र बोलाई निर्धारित स्थानतर्फ लैजानुपर्नेमा सो नगरी भिषा मितिभन्दा अगाडि नै काठमाडौं बोलाई बढी भएको समयमा पोखरा म्याग्दीको तातोपानी, मुस्ताङको जोमसोम घुमाउनको लागि लगेको र उक्त स्थानमा घुम्न जाँदा बस भाडा, खाना, होटल खर्चसमेत रु.१९,८०,७८८/- खर्च भएको भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ । यसरी हेर्दा निजले जाहेरवालाहरूबाट निजहरूलाई कैलाश मानसरोवर घुमाउनको लागि भनेर भा.रु.२८,४७,०००/- (ने.रु.४५,५५,२००/-) लिएको भनी स्वीकार गरेकोमा पोखरा जोमसोम घुमाउँदा खर्च भएको रकम रु.१९,८०,७८८/- खर्च लागेको भनी बाँकी रकम जाहेरवालाहरूलाई फिर्ता दिएकोसमेत नपाइने ।

मुलुकी ऐन ठगीको महलको १ नं. मा “कसैले आफ्नो हक नपुग्ने अर्काको हकको चल-अचल धनमाल हक पुग्नेलाई वा जसका जिम्मामा रहेको छ उसलाई ललाई-फर्काई वा जाल परिपपञ्च गरी वा आफ्नो हक नभएको सम्पत्तिमा आफ्नो हक पुग्ने कित्ते कागज बनाई दिई वा पेस गरी वा आफूसँग नभएको कुरा आफूसँग छ भनी झुक्याई वा झुटो कुरालाई सद्दे हो भनी झुक्याई वा अरु जुनसुकै बेहोरासँग धोका दिई गफलतमा पारी आफ्नो हक नपुग्ने अर्काको हकको चल-अचल धनमाल लिए दिए दिलाएमा वा अर्काको माल मेरो हो भनी वा मेरो भएको छ भनी लिखत गरी वा नगरी सोही माल लिएदिए बिक्री व्यवहार गरेमा वा सट्टापट्टा गरी लिएमा ठगी गरेको ठहर्छ” । त्यस्तैगरी ठगीको २ नं. मा “कसैले आफ्नो नाउँ ढाँटी सो नाउँ मेरो होइन, अर्कोको हो भनी वा सो मानिस म होइन अर्को हो भनी र अर्को

मानिसको नाउँलाई मेरो हो सो मानिस मै हुँ भनी भन्नु वा त्यस्तो कुरा अर्काबाट जानी बुझी भनाउनु भनी दिनु इत्यादि जुनसुकै कुरा गरी होस् कसुर सजायबाट बच्नका लागि वा बेइमानीको नियतसँग अरु कसैलाई धोका, गफलत वा झुक्यानमा पारी अर्काको नोक्सान वा आफ्नो फाइदा हुने काम गरेमा ठगी गरेको ठहर्छ” भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । यसरी हेर्दा यी प्रतिवादीले विदेशी भारतीय नागरिकलाई कैलाश मानसरोवर लैजाने भनी वचन दिई विभिन्न किस्तामा रकम बुझी भिषा समयमा नै नआएको र भिषा आउनुभन्दा अगाडि नै जाहेरवालाहरू काठमाडौं आएको हुनाले बाँकी रहेको समयमा पोखरा म्याग्दीको तातोपानी र मुस्ताङको जोमसोम लगी निज पर्यटकहरूलाई घुमाई मुख्य लैजानुपर्ने ठाउँ कैलाश मानसरोवरमा रकम अभाव भई लैजान नसकेको भनी निज प्रतिवादीले स्वीकार गरेको अवस्थामा यी प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठले ट्रेकिङ व्यवसाय सञ्चालन गर्ने उद्देश्यले कम्पनी दर्ता गरी सोही कम्पनीमार्फत कैलाश मानसरोवरको तिर्थ यात्रा गराउने भनी तुलो संख्याका भारतीय पर्यटकहरूलाई विश्वासमा पारी धोका दिई, गफलतमा पारी आफूले गरेको सम्झौताबमोजिमको कार्य नगरेको हुनाले मुलुकी ऐन ठगीको महलको १ र २ नं. बमोजिम कसुर गरेको कुरामा विवाद नदेखिने ।

प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठले भिषा आउन ढिला भएको र निज तिर्थयात्रीहरू चाँडो काठमाडौं आउनुभएको हुनाले निजहरूको इच्छानुरूप नै निजहरूकै सहमतिमा पोखरा, म्याग्दीको तातोपानी र मुस्ताङको जोमसोम घुमाउन लगिएको र उक्त ठाउँमा घुमाउँदा खान, बस्न र भाडा गर्दा रु.१९,८०,७८८।- खर्च भएको भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ । निज तिर्थयात्रीहरूले पनि उक्त ठाउँमा घुम्न गएको कुरामा विवाद गरेको देखिँदैन । सम्झौता भएको ठाउँभन्दा अन्य बढी ठाउँमा घुम्न जाँदा पहिला भएको सहमतिअनुरूपको रकमभन्दा बढी रकम खर्च हुने कुरा स्वाभाविक नै हुन

आउँछ । पहिला तिरेकै रकमबाट अन्य नयाँ ठाउँमा कम्पनीले घुमाएको हो भनी जाहेरवालाहरूले पनि अनुमान गर्न मिल्ने अवस्था देखिँदैन । नयाँ ठाउँमा घुम्न जाँदा लागेको खर्च तिर्थयात्रीहरूले थप गर्नुपर्ने कुरामा विवाद देखिएन । यसरी उच्च अदालत पाटनले बिगो कायम गर्दा निज प्रतिवादीले स्वीकार गरेकै रकमलाई मानेको भए तापनि पोखरा, म्याग्दीको तातोपानी र मुस्ताङको जोमसोम घुम्न जाँदा भएको खर्च जाहेरवालाहरूले नदिएको अवस्थामा समेत कटाएको पाइएन । तसर्थ, प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठले जाहेरवालाबाट लिएको रकम रु.४५,५५,२००।- मानी त्यसमा पोखरा, म्याग्दीको तातोपानी र मुस्ताङको जोमसोम घुम्न जाँदाको खर्च रु.१९,८०,७८८।- कट्टा गरी रु.३५,७४,५८०।- बिगो कायम गर्नुपर्नेमा सो नगरेको हदसम्म उच्च अदालत पाटनको फैसला केही उल्टी भई रु.३५,७४,५८०।- बिगो कायम हुने ठहर्छ । यसरी निज प्रतिवादीले जाहेरवालाहरूलाई पोखरा, म्याग्दी, जोमसोममा घुमाउँदा खाना बस्न र भाडासमेत भएको खर्च रु.१९,८०,७८८ कट्टा गरी जम्मा रु.३५,७४,५८०।- ठगी गरेको बिगो कायम हुने ठहरेको हुनाले वादी नेपाल सरकारले रु.५७,७६,०००।- बिगो कायम गरिपाउँ भनी लिएको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

यसरी ठगीको कसुर गरेको ठहर भइसकेपछि निज प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठलाई हुने सजायतर्फ विचार गर्दा, अपराधको मात्राअनुसार सजायको मात्रा निर्धारण गर्नु पर्दछ । तुलो अपराध गर्ने र तुलनात्मक रूपमा सानु अपराध गर्ने अपराधीलाई एउटै सजाय गर्नु न्यायसङ्गत हुँदैन । त्यसकारण सजाय निर्धारण गर्दा अपराधको गाम्भीर्य अपराध गर्दा परिस्थिति र प्रचलित कानूनी व्यवस्था हेर्नुपर्ने हुन्छ । प्रचलित कानूनी व्यवस्था हेर्दा फौजदारी कसुर (निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ मा "कुनै कसुरका सम्बन्धमा कसुर गर्दाका बखतभन्दा सजाय निर्धारण गर्दाका बखत कानूनबमोजिम घटी सजाय हुने रहेछ भने



घटी सजाय हुने गरी निर्धारण गर्नुपर्ने छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । त्यस्तैगरी मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २४९(३)(ग) मा खण्ड (क) वा (ख) मा लेखिएदेखि बाहेक अन्य कुनै किसिमले ठगी गरेमा ७ वर्षसम्म कैद र सत्तरी हजार रुपैयाँसम्म जरिवाना हुने छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । यसरी हेर्दा उक्त दफा २४९ (३)(ग) अनुसार ठगी गर्नेलाई ७ वर्षसम्म कैद र सत्तरी हजार रुपैयाँसम्म जरिवाना हुने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २४९ मा ठगीको कसुरमा बिगोअनुसार जरिवाना गर्ने व्यवस्था नभएको हुँदा बिगोबमोजिम जरिवाना गर्नुपरेन । बिगोबमोजिम जरिवाना नहुने र मुलुकी अपराध संहिताको दफा २४९(३)(ग) नं. बमोजिमको ठगीमा सत्तरी हजार रुपैयाँसम्म जरिवाना हुने भएको हुनाले निज प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठले ठगी गरेको बिगो रु.३५,७४,५८०/- कायम भएको हुँदा रु.२५,०००/- (पच्चिस हजार मात्र) जरिवाना हुने ठहर्छ । कैदको हकमा विचार गर्दा पुनरावेदन अदालत पाटनबाट फैसला हुँदा निज पुनरावेदक प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठलाई १ वर्ष कैद सजाय भएको पाइन्छ । प्रचलित मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २४९(३)(ग) बमोजिम ७ वर्षसम्म कैद सजाय गर्न सकिने देखिए तापनि फौजदारी कसुर (निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ मा भएको व्यवस्थाबमोजिम निजले कसुर गर्दा प्रचलित मुलुकी ऐन, ठगीको महलको सजाय नै कम देखिएको हुँदा मुलुकी ऐन, ठगीको महलअनुसार नै सजाय गर्नुपर्ने देखिन्छ । निजलाई अपराधको मात्रा हेर्दा ६ महिना कैद गर्दा न्यायको मक्सद पूरा हुने नै देखिँदा पुनरावेदन अदालत पाटनबाट भएको १ वर्ष कैदको सजाय केही उल्टी भई ६ महिना कैद हुने ।

अर्का प्रतिवादी वाडपेन थोन्दुप लामाको हकमा विचार गर्दा, निजले जाहेरवालासँग रकम लिए खाएको देखिँदैन । निजले जाहेरवाला भारतीय तिर्थयात्रीहरूलाई कैलाश मानसरोवर घुमाई फिर्ता

ल्याउने वचन दिएको पनि देखिँदैन । मुख्य प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठले भनेबमोजिम निज तिर्थयात्रीहरूको मानसरोवर जानको लागि भिषासम्म उपलब्ध गराएको पाइन्छ । प्रतिवादी वाडपेन थोन्दुप लामा अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष र अदालतमा समेत बयान गर्दा कसुरमा पूर्णइन्कार रही बयान गरेको पाइन्छ । निजउपर किटानी जाहेरी परेको पनि देखिँदैन । भिषा बनाउनुभन्दा अगाडि निजको जाहेरवालाहरूसँग सम्पर्क भएको पाइँदैन । मुख्य प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठले जिम्मा दिएबमोजिम निजले जाहेरवालाहरूको भिषा उपलब्ध गराइदिएको पाइन्छ । अभियोजन पक्षले कसैउपर अभियोग लगाएर मात्र हुँदैन । यसलाई वस्तुनिष्ठ प्रमाणले पुष्टि गर्न सक्नुपर्दछ । फौजदारी कसुरमा कसैलाई पनि अनुमानको भरमा सजाय गर्न हुँदैन । निजले आफ्नो जिम्मेवारीअनुरूप भिषा उपलब्ध गराएकोमा भिषा प्राप्त भएपछि मात्र तिर्थयात्रीहरूलाई काठमाडौं बोलाई कैलाश मानसरोवर लैजाने दायित्व प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठको नै रहेको देखिँदा ठगी कार्यमा निजको संलग्नता देखिन आएन । निजले आफ्नो जिम्मेवारीअनुरूप भिषा उपलब्ध गराउने कार्य गरेको र भिषाप्राप्त हुनुभन्दा अगाडि नै तिर्थयात्रीहरू काठमाडौं आई बाँकी रहेको समयमा पोखरा, तातोपानी र जोमसोम घुम्न गएको र घुम्दा भएको खर्चको विषयमा विवाद भई कैलाश मानसरोवर जान नसकेको र बाँकी रकम निज टेकराज श्रेष्ठले फिर्ता पनि नगरेको देखिँदा उक्त कार्यमा निज प्रतिवादी वाडपेन थोन्दुप लामाको संलग्नता नदेखिँदा निजको मिलेमतोमा ठगी भएको हो निजलाई पनि ठगीमा सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः माथि उल्लिखित आधार, कारण एवं प्रमाणहरूबाट पुनरावेदन अदालतबाट मिति २०७३।५।२६ मा फैसला हुँदा प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठलाई रु.४६,८०,०००/- जरिवाना र १(एक) वर्ष कैद हुने ठहरी भएको फैसला केही उल्टी भई प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठलाई रु.२५,०००/- (पच्चिस हजार

मात्र) जरिवाना र ६ महिना कैद र प्रतिवादी टेकराज श्रेष्ठबाट जाहेरवालाहरूले बिगो रु.३५,७४,५८०-भरी पाउने।

इजलास अधिकृत: सूर्यप्रसाद भण्डारी

इति संवत् २०७६ साल माघ ८ गते रोज ४ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०७२-CR-१२८७, ०७२-CR-१४५०, ठगी, अरुणकुमार कोइराला वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. अरुणकुमार कोइराला**

प्रथमतः पुनरावेदन अदालत हेटौँडाबाट यस विवादमा दिइएको निर्णय मिले नमिलेकोतर्फ विचार गर्दा, सुरु एवम् पुनरावेदन अदालतले गरेको फैसलामा प्रतिवादीले मुलुकी ऐनबमोजिमको कित्ते र ठगीको कसुर गरेको ठहर्‍याई निजले कित्ते बिल पेस गरी झुक्याई विश्वास गफलतमा पारी आफ्नो हक नपुग्ने रोजगारदाता कम्पनीको सम्पत्ति गैरकानूनी तरिकाले लिनुखानु गरेको कुरालाई निर्णयाधारको रूपमा अवलम्बन गरेको पाइएकोले सुरुमा त्यसैतर्फ विवेचना गरी निर्णयमा पुग्नु सान्दर्भिक हुने देखियो। यस सम्बन्धमा, प्रतिवादी अरुणले टक इन्फ्राका कर्मचारीको हैसियतमा दुरसञ्चार सेवा प्रदायक कम्पनी एनसेल प्रा.लि.को तोकिएका कार्यक्षेत्रका बि.टी.एस. टावरहरूमा उठेको विद्युत् महसुल आफ्नो रोजगारदाताबाट माग गरी नेपाल विद्युत् प्राधिकरणमा भुक्तानी गर्ने गरेको र रोजगारदाता कम्पनीले पनि निजले बिल पेस गरी सोधभर्ना मागेको बिलबमोजिमको रकम प्रतिवादीको बैंक खातामा जम्मा गरिदिने गरेको तथ्यसम्ममा विवाद देखिएन। यी प्रतिवादीले वास्तविक बिलबमोजिम विद्युत् प्राधिकरणमा बुझाएभन्दा बढी रु.५३,०७,०१०।३७ फर्जी बिलको आधारमा रोजगारदाता कम्पनीबाट भुक्तानी लिई आफूले लिई खाएको दाबी गरिएको छ। प्रतिवादीले आफूले सो रकम लिए खाएको छैन भनी इन्कार गरे पनि परीक्षणका लागि पठाइएका नमुना बिलहरू कार्यालयबाट जारी नगरिएको

भन्ने बेहोरा सम्बन्धित कार्यालयको पत्रमा उल्लेख भएको (नेपाल विद्युत् प्राधिकरण, भरतपुर वितरण केन्द्रको च.नं. ५९४ मिति २०७०/०९/३० को पत्र), प्रतिवादीको एभरेष्ट बैंकको उल्लिखित खातामा जम्मा भएको रकमको स्रोत निज प्रतिवादीको रोजगारदाता कम्पनी रहेको, निजको खातामा रोजगारदाताले जम्मा गरिदिएको रकम सम्बन्धित विद्युत् कार्यालयबाट प्राप्त लेजर स्टेटमेन्ट र रि-प्रिन्ट बिलभन्दा बढी हुन आएको तथ्यलाई प्रतिवादीले स-प्रमाण खण्डन गर्न सकेको देखिएन। तत् तत् बि.टी.एस. टावरका सुरक्षा गार्डहरूले पेस गरेको बिलको आधारमा आफूले भुक्तानी दिई तिनै बिलको सोधभर्ना रोजगारदातासँग माग गरेको भन्ने यी प्रतिवादीको बयानलाई पुष्टि गर्ने वस्तुनिष्ठ प्रमाण निजले पेस गर्न नसकेको अवस्थामा समेत आरोपित कसुरको सन्दर्भमा बिल कित्ते गरी ठगी गरेको होइन भन्ने निज प्रतिवादी अरुणको कसुर इन्कारी बयानलाई अदालतले प्रमाणको रूपमा लिन मिल्ने देखिएन। अतः निज प्रतिवादी अरुणकुमार कोइरालाले नेपाल विद्युत् प्राधिकरणलाई वास्तविक बिलबमोजिम तिरे बुझाएभन्दा बढी रकम माग गर्ने गरी रोजगारदाता कम्पनीमा पेस गरेका बिल कागजातलाई फर्जी एवम् कित्ते नै मान्नुपर्ने भई निजले बिल कित्ते गरी ठगीको कसुर गरेको ठहर्‍याउने सम्बन्धमा सुरु तथा पुनरावेदन अदालतबाट भएको प्रमाणको विवेचनालाई अन्यथा भनिरहनुपर्ने नदेखिने।

पुनरावेदक प्रतिवादीले प्रस्तुत विवाद कम्पनी र कामदारबिचको आर्थिक मामिला भएकोले कम्पनी ऐन, २०६३ को कानूनी व्यवस्थाअनुसार कानूनी उपचार खोजिनुपर्नेमा प्रचलित फौजदारी कानून आकर्षित हुन नसक्ने भनी जिकिर लिएको भए तापनि कम्पनी ऐनमा भएको के कुन कानूनी व्यवस्थाले निज प्रतिवादीलाई ठगीको कसुरमा कारबाही चलाउन बन्देज गरेको छ भनी जिकिर लिएको देखिएन। अभियोजनको मुलुकी ऐन, ठगीको महलमा समेत निजलाई उक्त कानूनी व्यवस्थाअन्तर्गत कानूनी कारबाही गर्न नमिल्ने

भनी कुनै प्रतिबन्ध लगाएको नदेखिँदा पुनरावेदन प्रतिवादीको उक्त पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रतिवादीले आरोपित कसुरमा रु.६१,८२,९६६।४० ठगी गरेको भनी बिगोको मागदाबी लिएकोमा पुनरावेदन अदालतबाट सोही रकमलाई नै बिगो ठहर गरिदिएको देखियो। बिगो कायम गरेको पुनरावेदन अदालतको सो ठहर मिले नमिलेको सम्बन्धमा विचार गर्दा, प्रतिवादीका रोजगारदाता कम्पनी टक इन्फ्राका प्रबन्ध निर्देशक अशोक न्यौपानेले दिएको जाहेरीमा कर्मचारी एवम् यी प्रतिवादी अरुणकुमार कोइरालाले कम्पनीबाट बिलबमोजिम दाबी गरेको रु.१,९३,४८,३२९।५९ भुक्तानी लिई नेपाल विद्युत् प्राधिकरणमा जम्मा रु.१,४०,४१,३१९।२२ मात्र बुझाई बिलबमोजिम फरकपरेको रु.५३,०७,०१०।३७ रकम कम्पनीबाट अग्रिम भुक्तानी लिई फरफारक नगरेको रु.८,७५,९५६।०३ समेत गरी जम्मा रु.६१,८२,९६६।४० ठगी गरेको भनी उल्लेख भएको पाइन्छ भने अभियोजनमा पनि बिगो सोहीअनुसार नै खुलाइएको देखिने।

मुलुकी ऐन, ठगीको महलको १ र २ नं. ले ठगीको परिभाषा गरेको पाइन्छ। उक्त कानूनी व्यवस्थाअनुसार ठगीको कसुर हुनलाई कसैले आफ्नो हक नपुग्ने सम्पत्ति लिने खाने नियतले त्यस्तो सम्पत्तिको हकभोगवालालाई कुनै तरिका प्रपञ्चले झुक्याई विश्वास गफलतमा पारी अर्काको नोक्सान वा आफ्नो फाइदा हुने काम भए गरेको हुनुपर्दछ। अर्थात्, ठगीमा धोखाको गुन्जायस रहन्छ। यी प्रतिवादीले नेपाल विद्युत् प्राधिकरणको वास्तविक बिलभन्दा बढी नक्कली बिलबमोजिम माग गरेको रकम रु.५३,०७,०१०।३७ भएको भन्ने देखिए पनि ठगीमा दाबी लिइएको अर्को परिमाणको रकम रु.८,७५,९५६।०३ प्रतिवादीले रोजगारदातालाई झुक्याई विश्वास गफलतमा पारी धोखाधडीको मनसाययुक्त कारणबाट प्राप्त गरेको नदेखिई कम्पनीले

पेस्कीको रूपमा अग्रिम भुक्तानी गरेको देखिन आयो। यसरी रोजगारदाता कम्पनीले आफ्नो कामदार कर्मचारीको खातामा कानूनबमोजिम हिसाब मिलान गर्ने गरी अग्रिम भुक्तानी दिएको रकमलाई प्रतिवादीले गलत मनसायले रोजगारदातालाई झुक्याई विश्वासमा पारी लिएको भन्न मिल्ने देखिँदैन। कसैलाई झुक्याई विश्वासमा पारी लिने खाने आपराधिक मनसायले आफ्नो हक नलाग्ने अरुको सम्पत्ति भोग नियन्त्रण गर्नुलाई ठगी भन्न मिल्ने पनि कानूनबमोजिम लिए पाएको पेस्की फरफारकमा नक्कली बिल पेस गरेको भन्ने कुरालाई लिएर ठगी गरेको भनी मान्न मिल्ने देखिँदैन। पेस्की फछ्यौँटको क्रममा पेस भएका कागजात जाँचको विषय व्यवस्थापकीय परीक्षणको सरोकारभित्र पर्ने भई यस्तो विषयलाई सम्बद्ध कानूनको कसीमा नै हेरिनुपर्ने हुन्छ। कुनै कामदार कर्मचारीले अग्रिम पेस्कीको रूपमा लिए पाएको रकम फरफारकको विषय कानूनबमोजिम निर्धारित दायित्वसम्म हुनसक्छ तर ठगीको फौजदारी दायित्वमा गणना गर्न मिल्ने देखिँदैन। तसर्थ, प्रतिवादी अरुणकुमार कोइरालाले कम्पनीबाट पेस्की स्वरूप पाएको रकम रु.८,७५,९५६।०३ लाई आरोपित कसुरमा बिगो कायम गर्न मिल्ने नदेखिँदा पुनरावेदन अदालतले फैसला गर्दा ठहर गरेको बिगोको हकमा सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा प्रतिवादीले कित्ते बिल पेस गरी कम्पनीबाट भुक्तानी लिएको रु.५३,०७,०१०।३७ नै प्रस्तुत कसुरको बिगो कायम हुन आउने देखिने।

प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको १२ नं. बमोजिम सजाय हुनुपर्छ भन्ने पुनरावेदन जिकिरतर्फ विचार गर्दा, कित्ते कागजको १२ नं. मा “सरकारी अड्डाको छाप वा सरकारी काममा सरकारी कर्मचारीको छाप दस्तखत वा सो छाप दस्तखत भएको सरकारी कागज कित्ते गर्नेलाई यसै महलको अरु नम्बरले हुने सजायमा एक वर्ष र उसै अड्डाको कर्मचारीले कित्ते गरेमा दुई वर्ष थप कैद हुन्छ” भनी

उल्लेख भएको पाइन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा सरकारी कागज किर्ते दाबी गरिएको कागजात सरकारी अड्डाको छाप दस्तखत वा सो छाप दस्तखत भएको सरकारी कागज नभई बढी रकम लिने उद्देश्यले प्रतिवादी अरुणकुमार कोइरालाले बिलबमोजिम आफूले बुझाएको वास्तविक रकमभन्दा बढी रकमसम्म माग गरी रोजगारदाता कम्पनीमा पेस गरेको कागजात रहेको देखिँदा किर्ते कागजको १२ नं. बमोजिम थप कैद सजाय नगर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत हेटौँडाको फैसला सो हदसम्म अन्यथा मान्नुपर्ने देखिन नआउने।

अतः माथि विवेचित आधार, कारणसमेतबाट यी प्रतिवादी अरुणकुमार कोइरालालाई मुलुकी ऐन, ठगीको महलको ४ नं. बमोजिमको कसुरमा २ (दुई) वर्ष कैद सजाय र रु.६१,८२,९६६।९६ (एकसठ्ठी लाख बयासी हजार नौसय छैसठ्ठी रूपैयाँ सोह्र पैसा) बिगो ठहर गरी बिगो बराबर जरिवानासमेत हुने तथा बिगो रकम जाहेरवालाहरूलाई भराइदिने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत हेटौँडाको मिति २०७२/०७/२२ को फैसला, प्रतिवादी अरुणकुमार कोइरालाले भुक्तानी गर्न भनी रोजगारदाता कम्पनीबाट लिएको अन्य नगद रु.८,७५,९५६।०३ (आठ लाख पचहत्तर हजार नौ सय छपन्न रूपैयाँ पैसा तीन) कम्पनीले आफ्नो कम्पनीमा कार्यरत रहेको कर्मचारीलाई अग्रिम भुक्तानी गरेको रकम फिर्ता नआएको अवस्थामा उक्त विषय फौजदारी कानूनको दायित्वभित्र नपरी देवानी दायित्वको विषय हुने भएकोले सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ठगीको महलको ४ नं. बमोजिमको कसुरमा बिगोबमोजिम रु.५३,०७,०१०।३७ (त्रिपन्न लाख सात हजार दश रूपैयाँ पैसा सैंतिस) जरिवाना र २ (दुई) वर्ष कैद सजाय हुने, तथा बिगो रु.५३,०७,०१०।३७ (त्रिपन्न लाख सात हजार दश रूपैयाँ पैसा सैंतिस) प्रतिवादीबाट जाहेरवालाहरूले भराई पाउने ठहर्छ। सरकारी कागजात किर्तेतर्फ सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको तथा अभियोग दाबीबाट

पूरै सफाई पाउँ भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत: ताराप्रसाद डाँगी

इति संवत् २०७६ साल फाल्गुन १४ गते रोज ४ शुभम्।

**इजलास नं. १२**

१

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७०-CR-०२९७, सरकारी छाप दस्तखत किर्ते, नेपाल सरकार वि. कर्णबहादुर डाँगी**

प्रतिवादीलाई अभियोग मागदाबीबमोजिमको कसुर गरेको ठहर्‍याई लगाउको ठगी मुद्दामा यी प्रतिवादीलाई सजाय हुने ठहर भएको देखिएकोले प्रस्तुत मुद्दामा सजाय गर्नु नपर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरको फैसला बदर गरी प्रतिवादीलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्नेसमेत वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरतर्फ हेर्दा प्रतिवादीले जाहेरवालाबाट मैले पछि फिर्ता गर्ने सर्तमा सापटी स्वरूप दुई लाख रूपैयाँ लिएको हुँ, सरकारी छाप दस्तखत किर्ते गरेको होइन भनी आरोपित कसुरमा इन्कार रही अदालतमा बयान गरेको देखिए तापनि अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा निज प्रतिवादी कर्णबहादुर डाँगीले मैले जाहेरवालाबाट मिति २०६७/१०/०७ गते नगद रु.३०,०००।- र मिति २०६७/१०/०९ गते मेरो बैंक अफ काठमाडौँमा रहेको खाता नं.०३२५००००००००६ मा रु.१७०,०००।- जम्मा गर्न लगाई जम्मा दुई लाख रूपैयाँ लिई निज जाहेरवालालाई राष्ट्रिय अनुसन्धान विभागको अ.स.ई. पदमा जागिर मिलाइदिन्छु भनी राष्ट्रिय अनुसन्धान विभागको नियुक्तिपत्र तयार गरी सोमा छाप लगाई दर्जा उल्लेख गरी दस्तखतसमेत मैले गरेको हुँ भनी आरोपित कसुरमा साबित भई बयान गरेको देखिन्छ। मिति २०६७।१०।९ गते जाहेरवाला मनोजकुमार पुनले

प्रतिवादी कर्णबहादुर डाँगीको नाममा रहेका बैंक अफ काठमाडौं लिमिटेडको खातानं.०३२५०००००००६ मा रु.१,७०,०००।- रकम जम्मा गरेको भन्ने सुरु मिसिल संलग्न बैङ्क अफ काठमाडौं लिमिटेडको बैङ्क स्टेटमेन्ट (BANK STATEMENT) बाट देखिन आएको निजको अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष भएको बयान तथ्यतः पुष्टि भएको छ र यी प्रतिवादी कर्णबहादुर डाँगीले जाहेरवाला मनोज पुन मगरलाई राष्ट्रिय अनुसन्धान विभागको सहायक अनुसन्धान पदको नक्कली नियुक्तिपत्र, कार्यक्षेत्रमा खटाइएको पत्र तयार गरी त्यसमा सहीछापसमेत गरी निज जाहेरवालालाई रु.२,००,०००।- (दुई लाख) ठगी गरी लिएको ठहर्‍याई यी प्रतिवादीलाई रु.दुई लाख जरिवाना र ६ महिना कैद सजायसमेत भएको लगाउको स.फौ.पु.नं.०६९-CS-२०११ बाट देखिन आएको छ। एउटै व्यक्ति यी प्रतिवादीबाट ठगी र कित्ते गर्ने कार्य भए गरेको भन्ने प्रस्तुत मुद्दामा एकै मिसिलबाट दुवै कसुरमा प्रतिवादीउपर अभियोगपत्र दायर गर्न सकिनेमा उक्त कसुरहरूमा दुईवटा छुट्टाछुट्टै अभियोगपत्रहरू दायर भएको त्यस्तो अवस्थामा एउटै अभियोगपत्र दायर हुनुपर्ने अर्थात् छुट्टाछुट्टै अभियोगपत्र दायर गर्न नमिल्ने गरी कानूनले निषेध गरेको नहुँदा अदालतसमक्ष दायर भएका ती अभियोग दाबीहरूलाई कानूनसम्मत नभएको भन्न चाहीँ मिल्ने देखिँदैन अर्थात् छुट्टाछुट्टै अभियोग दायर हुन नसक्ने भन्न मिल्ने नदेखिने।

यसप्रकार प्रतिवादीले राष्ट्रिय अनुसन्धान विभागको नामको नक्कली लेटरप्याडमा नक्कली सरकारी छाप लगाई जाहेरवालालाई राष्ट्रिय अनुसन्धान विभागको अ.स.ई. पदको नियुक्तिपत्र दिएको भन्ने उपर्युक्त प्रमाणहरूबाट पुष्टि हुन आएको देखिन्छ। माथि उल्लेख भएअनुसार यी प्रतिवादीले सरकारी छाप लगाई नक्कली नियुक्ति पत्र बनाएको मात्र नभई जाहेरवालालाई कार्यक्षेत्रमा खटाएको पत्रसमेत बनाई मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको १ नं. विपरीत कित्ते कागज खडा गरी कानूनबमोजिमको अख्तियारी

नभएको व्यक्ति निज प्रतिवादीले जाहेरवालालाई राष्ट्रिय अनुसन्धान विभागको अ.स.ई.पदको नियुक्ति दिई कार्यक्षेत्रमा खटाएको समेत देखियो। साबिक मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको १६ नं. हेर्दा “नेपाल सरकारको स्वीकृतिले दिने पाउने व्यक्तिले दिएकोमा बाहेक आफ्ना मनासिबले कसैले कसैलाई कुनै दर्जा दिन वा म फलानो दर्जाको हुँ भन्न लेख्न हुँदैन” भन्ने व्यवस्था भएको देखिएको र ऐ.को १६(१) मा “अधिकार भएकाले दिए पाएको दर्जा बहाल टुटेपछि पनि लेख्न भन्न हुन्छ सोबाहेक अरुले नपाएको दर्जा पाएँ भन्ने वा लेखापढी गर्ने र देहायमा लेखिएबमोजिमको काम गर्नेलाई समेत देहायमा लेखिएबमोजिम सजाय हुन्छ” भनी ऐ. देहाय १ मा “नपाएको दर्जाको धाकले कामकाजसमेत गर्नेलाई केही लिए खाएको भए सो बिगो फिर्ता गराई चार वर्षसम्म कैद वा पाँच हजार रुपैयाँसम्म जरिवाना वा दुवै हुन्छ। अरु केही कसुरसमेत गरेको भए जुन कसुर गरेको छ सो कसुरमा ऐनबमोजिम हुने सजाय छुट्न सक्ने” भन्नेसमेत व्यवस्था रहे भएको पाइने।

माथि लेखिएबमोजिम कानूनले अख्तियारी नभएका व्यक्ति यी प्रतिवादीले उपर्युक्तानुसार कित्ते कागज (नियुक्ति पत्र, कार्यक्षेत्रमा खटाएको पत्र) खडा गरी जाहेरवालालाई राष्ट्रिय अनुसन्धान विभागको अ.स.ई. पदको दर्जा दिएको भन्ने देखिन आएकोले यी प्रतिवादीले मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महलको ७ नं., ९ नं. तथा १६ नं. समेतको कसुर गरेको देखिन आयो।

अब यी प्रतिवादीले उपर्युक्तानुसार कसुर गरेको ठहरेकाले निजलाई के कति सजाय गर्नुपर्ने भन्ने सम्बन्धमा विचार गर्दा मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महलको ७ नं.मा “सम्पत्तिका सम्बन्धमा कित्ते गरी लिई खाइसकेको भए बिगो भराई बिगोबमोजिम जरिवाना हुन्छ। काम भइसकेको रहेनछ भने बिगोको आधी जरिवाना हुन्छ” भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको र सोही महलको १२ नं.मा “सरकारी अड्डाको छाप वा सरकारी काममा सरकारी कर्मचारीको छाप

दस्तखत वा सो छाप दस्तखत भएको सरकारी कागज किर्ते गर्नेलाई यसै महलको अरु नम्बरले हुने सजायमा एक वर्ष र उसै अड्डाको कर्मचारीले किर्ते गरेमा दुई वर्ष थप कैद हुन्छ” भन्ने व्यवस्था रहेको पाइयो। उपरोक्तानुसार प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी कर्णबहादुर डाँगीले मिति २०६७/१०/०६ गते दाङ टरी गाउँ गा.वि.स. वडा नं.३ रङ्गेनास्थित आफ्नै घरमा राष्ट्रिय अनुसन्धान विभागको लेटरप्याड बनाई सरकारी छाप दस्तखतसमेत किर्ते गरी जाहेरवाला मनोजकुमार पुनलाई जागिर लगाइदिन्छु भनी निजबाट रु.२,००,०००।- (दुई लाख रुपैयाँ) लिई राष्ट्रिय अनुसन्धान विभागान्तर्गत दैलेखको अनुसन्धान सहायक पदको नियुक्ति पत्र बनाई कार्यक्षेत्रमा खटाएको पत्रसमेत बनाएको देखिँदा प्रतिवादी कर्णबहादुर डाँगीले सरकारी अड्डाको नक्कली लेटर प्याड बनाई छाप दस्तखतसमेत गरी किर्ते कार्य गरेको पुष्टि भएको र निजले एकै वारदातमा एकभन्दा बढी कसुर गरेको पाइएको अवस्थामा छुट्टाछुट्टै कानूनअनुसार सजायको मागदाबी भई सोअनुसार कसुर गरेको स्थितिमा तत्तत् कानूनले सजाय हुने नै देखिएको र सोअनुसार अभियोग दाबी लिने गरेको र अदालतले दाबीअनुसार कसुर कायम गरी सजाय गर्ने गरी आफैँ हुनाले लगाउको ठगी मुद्दामा सजाय हुने ठहर भएको आधारमा अभियोग दाबीबाट सफाई दिने गरी सुरु दाङ देउखुरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८/०८/२९ मा फैसला भएको र प्रतिवादीले किर्ते कागजको महलको १ नं. बमोजिमको कसुर गरेको ठहर्‍याई लगाउको ठगी मुद्दामा यिनै प्रतिवादीलाई सजाय हुने ठहर भएको आधारमा प्रस्तुत मुद्दामा सजाय गर्नु परेन भनी पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरबाट मिति २०६९/११/१६ मा भएको फैसला कानूनअनुरूप नभई मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई यी प्रतिवादी कर्णबहादुर डाँगीलाई मुलुकी ऐन, किर्ते कागजको महलको १ नं., ७ नं., ९ नं. र १६ नं.को कसुरमा सोही महलको ७ नं. बमोजिम बिगोबमोजिम रु.२,००,०००।- (दुई लाख रुपैयाँ) जरिवाना हुन्छ

र निजलाई सोही महलको १२ नं.बमोजिम १(एक) वर्ष थप कैद सजायसमेत हुने ठहर्छ। साथै निजबाट जाहेरवालालाई बिगोसमेत भराई दिने।  
इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल  
कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल  
इति संवत् २०७४ साल कार्तिक २९ गते रोज ४ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७०-CR-०५७२, ठगी, नेपाल सरकार वि. भवानीशंकर भन्ने भवानीविक्रम विश्वकर्मासमेत

प्रतिवादीहरूले ठगी गरेको प्रस्ट हुँदाहुँदै निज प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाई दिने गरी पुनरावेदन अदालत इलामबाट भएको फैसला त्रुटिपूर्ण हुँदा बदर गरी अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरतर्फ हेर्दा, प्रस्तुत मुद्दामा अभियोजन पक्षले प्रतिवादी भवानीशंकर भन्ने भवानीविक्रम विश्वकर्मासँग मौकामा बयान कागज नै गराएको देखिँदैन। निज प्रतिवादी भवानीशंकर भन्ने भवानीविक्रम विश्वकर्माले लगाउको मुद्दामा आरोपित कसुरमा इन्कार रही मौकामा र अदालतमा समेत बयान गरेको देखिन्छ। प्रतिवादी बीरबहादुर धमला भन्ने टीकाराम विश्वकर्माले पनि आरोपित कसुरमा इन्कार भई अदालतमा बयान गरेको देखिन्छ। आफूहरूले जाहेरवालाहरूसँग सही गराई खाली चेक लिएको वा रकम बुझेको कुनै कार्य गरेको छैन भन्ने प्रतिवादीहरूको इन्कारी, भुक्तानी दिने समयमा भुक्तानी पाउने व्यक्ति आफैँ भुक्तानी लिन नगर्दै अरूलाई पठाएमा चेकको पीठमा धारकको सही गराउने अनिवार्य व्यवस्थाको पृष्ठभूमिमा प्रतिवादीहरूले चेकको भुक्तानी लिएको भए चेकको पीठमा यिनीहरूको हस्ताक्षर अनिवार्य हुनुपर्नेमा सो नरहेको र चेकको पीठमा जाहेरवालाहरूको सही रहेको अवस्था, स्वयं नेपाल बैंक लिमिटेडको मिति २०६७/०४/०९ को पत्रमा निक्षेपकर्ताहरूको निवेदनबमोजिम भुक्तानी

भएका भनी उल्लेख भएको बेहोरा र सो निवेदन वादीले पेस नगरेको अवस्थाबाट प्रतिवादीहरूले दाबीको रकम लिए खाएको भन्ने कुरालाई जाहेरवालाको कोरा भनाइको आधारमा मान्न मिल्ने देखिँदैन । जसको खाता र चेक हो उसले नै चेकमा उल्लिखित रकम पाउने हो भन्ने कुराको आफूलाई ज्ञान नरहेको भनी जाहेरवालाहरूले बकपत्रमा भन्न सकेको पाइँदैन । सो कुरालाई प्रमाणको रोहमा वादीले प्रमाणित गर्न सकेको नदेखिने ।

मुलुकी ऐन, ठगीको महलको १ नं. मा धनी वा जिम्मावालालाई ललाईफकाई वा जाल परिपञ्च गरी भनी पहिलो वा आफ्नो हक नपुग्ने सम्पत्तिको हकमा कित्ते कागज बनाउने आदि काम गर्ने दोस्रो, वा आफूसँग नभएको कुरा छ भनी झुक्याई भन्ने तेस्रो वा झुठो कुरालाई सद्दे हो भनी झुक्याई भन्ने चौथो वा अरु जुनसुकै बेहोरासँग धोका दिई गफलतमा पारी भन्ने पाँचौं प्रकारले काम गरी अर्काको धनमाल लिए खाए दिए दिलाएमा वा आफ्नो भनेमा भन्नेसमेतको कुरालाई समेटेको देखिन्छ । वादीको अभियोगपत्रको अभियोगपत्र खण्डमा जाहेरवालाहरूलाई ललाई फकाई झुक्यानमा पारी भनी उल्लेख भएकोले एकछिनलाई उक्त रकम प्रतिवादीहरूले लिए खाएकै मान्ने हो भनेपनि प्रतिवादीहरूले जाहेरवालाहरूलाई ललाई फकाई झुक्यानमा पारी उक्त कार्य गरेको कुरालाई वादीले प्रमाणित नगरेसम्म त्यस्तो कारोबार सामान्य लेनदेन हुने देखिन्छ । प्रतिवादीहरूले जाहेरवालाहरूलाई के कसरी ललाए फकाए वा झुक्याएको हो सो कुरा मिसिलबाट निर्विवादरूपमा नदेखिने ।

अभियोगपत्रमा वा जाहेरवालाहरूको कागज तथा बकपत्रबाट प्रतिवादीहरूबाट के कस्तो भाषा आदिको प्रयोग गरी निजहरूलाई झुक्यानमा पारेको हो सो कुरा प्रमाणित हुन सकेको देखिँदैन । जाहेरी बेहोरासमेतबाट जाहेरवालाहरूलाई दलितसँग अन्तरजातीय विवाह गर्ने दम्पतिलाई नेपाल

सरकारबाट रु.१ लाख रकम उपलब्ध हुने कुरा थाहा रहेको देखिन्छ । जाहेरवाला दिनेश परियारले चेक लेख्ने काम प्रतिवादी भवानीशंकर भन्ने भवानीविक्रम विश्वकर्माले गरेको भनी जाहेरीमा र अभियोगपत्रमा उल्लेख नभएको कुराको बकपत्र गरेको भए पनि आफूसमेतले निजको ललाई फकाईमा परी रु.१० हजारको चेकमा सही गरेको भनी भन्न सकेको देखिँदैन । जाहेरवाला ज्ञानेन्द्रले पनि प्रतिवादीहरूले ललाई फकाई गरेको भनी बकपत्र गर्न नसकी यो रूपैयाँ निकासालिन बापत खर्च चाहिन्छ भनी मागेकोले दिएको हो भनी सबै कुरा थाहा पाई सो रकम स्वेच्छाले दिएको जस्तो कुराको बकपत्र गरेको देखिन्छ । अझ जाहेरवाली निर्मलाले त निजहरूले रु.४० हजार मागे पनि हामीले नदिई रु.२५ हजारको चेकमा सहीछाप गरिदिएका हौं, हामीले रु.१० हजार मात्र दिन्छौं भनी आग्रह गर्दासमेत निजहरूले मान्नु भएन, तपाइँहरूले सहयोग गरेबापत हामी आफ्नो विचारले दिन्छौं भनी भन्दाभन्दै निज प्रतिवादीहरूले उक्त खाली चेकमा जबरजस्ती लगेका हुन् भनी उल्लेख गरेकी बेहोराबाट प्रतिवादीहरूले सहयोग गरेबापत केही रकम दिनुपर्नेमा निजहरू सहमत रहेको र लेनदेन हुँदा निजहरूका बिचमा पर्याप्त छलफल मोलमोलाई भएको र प्रतिवादीहरू आफ्नो कुरामा अडेको देखिन आउँछ । यस्तो जबरजस्तीसमेतको कार्य र ठगी नितान्त बेमेलका कुरा देखिने ।

जाहेरवालाहरू शारीरिकरूपमा अपाङ्ग, अशक्त र कमजोर रहेका नभई निजहरूले आफूखुशी अन्तरजातीय प्रेम विवाह गरेको देखिन्छ । यो यसरी हामी अज्ञान, अबुझ भएका कारण आफूहरू झुक्यानमा परेका हौं भन्ने निजहरूको भनाइ नदेखिएको मात्र नभई जाहेरी, निजहरूले गरेका कागज, बकपत्र र चेकको पछाडि रहेको निजहरूको हस्ताक्षर हेर्दा यी जाहेरवालाहरू शिक्षितसमेत देखिन्छन् । यस किसिमका चुस्तदुरुस्त मानसिक र शारीरिक क्षमता

भएका जाहेरवालाहरू प्रतिवादीको प्रभावमा पर्न सक्ने व्यक्ति भएका भनी विश्वास गर्ने तथ्यपरक आधार निजहरूले देखाउन सकेको नदेखिने।

माथि उल्लेख भएबमोजिम प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीबमोजिमको रकम लिए खाएको कुरा शङ्काकै दायरामा रहेको र सो खाएकै भए पनि उपर्युक्त स्थिति अवस्थाको विश्लेषण गर्दा प्रस्तुत वारदात ठगीको १ नं. को कसुर गरेको मान्न सकिने अवस्था पनि नदेखिएकाले प्रतिवादी भवानीशंकर भन्ने भवानीविक्रम विश्वकर्माले रु.२५,०००।- ठगी गरेको ठहर्‍याई निजलाई रु.२५,०००।- जरिवाना र १ महिना कैद हुने ठहरी सुरु पाँचथर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८/०९/०५ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई पुनरावेदक प्रतिवादीले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहर्छ। प्रतिवादी वीरबहादुर धमला भन्ने टीकाराम विश्वकर्माले सफाई पाउने ठहर्‍याएको सुरु फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहरी पुनरावेदन अदालत इलामबाट मिति २०७०/०२/१२ मा भएको फैसला मनासिब नै देखिँदा अन्यथा गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिने।

अतः माथि विवेचित आधार, कारण र प्रमाणहरूसमेतबाट प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीअनुसारको कसुर गरेको नदेखिँदा प्रतिवादी भवानीशंकर भन्ने भवानीविक्रम विश्वकर्माले बिगो रु.२५,०००।- ठगी गरेको कसुरमा निजलाई रु.२५,०००।- जरिवाना र १ महिना कैद हुने ठहर्‍याई सुरु पाँचथर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८/०९/०५ मा भएको फैसला उल्टी हुने गरी पुनरावेदक / प्रतिवादी भवानीशंकर भन्ने भवानीविक्रम विश्वकर्माले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहर्‍याएको र प्रतिवादी वीरबहादुर धमला भन्ने टीकाराम विश्वकर्माले सफाई पाउने ठहर्‍याएको सुरु फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालतको मिति २०७०/०२/१२ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर

हुने।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ कात्तिक २९ गते रोज ४ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०६७-सी-१४७८, जग्गा कब्जा खिचोला मेटाई चलन, हुलास महतो वि. हेमनारायण चौधरी**

सर्लाही सुन्दरपुर चुहर्वा गाउँ विकास समिति वडा नं. ५ कि.नं. २३८ को ०-१-१ जग्गाको जग्गाधनी स्वामित्वसमेत वादी हेमनारायण चौधरीको भएको कुरा स्वीकार गरेकोमा विवाद देखिँदै नभने सोही जग्गाको पश्चिमतर्फबाट ०-०-४-५ क्षेत्रफल जग्गामा घर बनाई भोगचलन गर्दै आएको छु सो घर जग्गाको स्वामित्वसमेत म प्रतिवादीकै रहेको छ भनी प्रतिवादी हुलास महतोले आफ्नो प्रतिउत्तर जिकिरमा उल्लेख गरेको देखिँदा उक्त कित्ता जग्गामा प्रतिवादीले कब्जा खिचोला गरेकै मान्नुपर्ने।

सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतमा प्रमाणको रूपमा पेस गरेको २०४३ सालको सा.दे.दा.नं. १८५१ को जग्गा खिचोला चलन मुद्दामा भएको नक्सा मुचुल्काबाट वादी दाबीको भोग चलनमा भइरहेको घरहरू मर्मत गरी वादीले भोग चलन गर्न पाउने देखिएकोले सो घरहरूको भोगमा प्रतिवादीको खिचोला मेटाई वादी परमेश्वर महतो कोरीले चलन पाउने ठहर्छ भनी मिति २०४४।१।२० मा सर्लाही जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला तत्कालीन जनकपुर अञ्चल अदालतबाट सदर भई उक्त फैसलाहरूबाट दाबी गरिएको जग्गामा रहेका घरहरूमा यिनै पुनरावेदक प्रतिवादीको हकाधिकार नभई भोगाधिकार कायम रहेको देखिने।

मिसिल संलग्न रहेको मिति २०६४।२।२५ को सर्जमिन मुचुल्काको प्रतिलिपिबाट दाबीको



जग्गामा हाल यी प्रतिवादी हुलास महतोको घर नै नभएको नरहेको र आफूले चलन पाएको घर निज आफैँले उखेली लगेका हुन् भन्ने कुरा उक्त मुचुल्कामा साक्षी बसेका व्यक्तिहरूले लेखाएको बेहोराबाट देखिन्छ । भोगाधिकार कायम रहेको भनिएको वस्तु घर नै प्रतिवादीले लगी सोको अस्तित्व नै नरहेको हुँदा उक्त दाबीको जग्गा र सोमा साबिकमा रहेको घरमा निजको भोग समाप्त भएको देखिन्छ । एउटाको जग्गामा अरु कसैले बनाएको घरमा लामो समयसम्म कसैले आफ्नो भोग प्रयोग गरिरहेको हुन सक्ने हुन्छ । तर भोग कब्जाबाट निजलाई पूरा हक स्वामित्व नै प्राप्त हुन्छ भन्न सकिँदैन । कसैको जग्गामा कसैले साबिकमा नै घर बनाई सोमा लामो समयदेखि भोग गर्दै आइरहेको रहेछ भने पनि उक्त घर भोग गर्न लायक भएको अवस्थामा मात्र भोग गर्न पाउने हुन्छ, तर कुनै व्यक्तिको जग्गामा कसैले घर बनाई लामो समयदेखि भोग गर्दै आइरहेको तथ्यगत कारणले उक्त जग्गा र सोमा बनेको घर जीर्ण भए वा भत्किए सो ठाउँमा पुनः नयाँ घर बनाउन पाउने जस्तो गरी हकाधिकार प्राप्त हुन सक्दैन । सो घरको आकृति फेरबदल नहुने गरी बस्न योग्य हुने प्रयोजनको लागि सामान्य मर्मतसम्म गर्न सकिने ।

तसर्थ यस अदालतबाट मिति २०७५।१।१९ मा विवादित जग्गामा यी पुनरावेदकलाई मोही हक मात्र रहेको भनी उक्त फैसलामा उल्लेख भएको सोतर्फ सबुत प्रमाण मूल्याङ्कन नगरी भएको फैसला फरक पर्न सक्ने भनी भएको विपक्षी झिकाउने आदेशसँग सहमत हुन नसकिने ।

माथि उल्लिखित विवेचित आधार र कारणसहितका प्रमाणबाट दाबीको जग्गामा प्रतिवादीको हक स्वामित्व नरहेको र भोगाधिकार रहेको भनिएको घरसमेत सो जग्गाबाट उखेलेर लगी प्रतिवादी आफूले पाएको सुविधा परित्याग गरिसकेकोले दाबीको जग्गामा भोगाधिकारको वस्तु घर नै नरहेको अवस्थामा वादी दाबी पुग्न नसक्ने गरी सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतबाट मिति २०६५।३।११ मा भएको फैसला

मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई वादी दाबीबमोजिम प्रत्यर्थी प्रतिवादीले खिचोला गरेको ठहर्छ भनी पुनरावेदन अदालत जनकपुरबाट मिति २०६७।५।७ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः नारायण सापकोटा

कम्प्युटरः चन्द्रा तिमल्सेना

इति संवत् २०७६ साल कार्तिक २७ गते रोज ४ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७२-CI-०८६७, हक निखनाई हकसफा, ऋषिराम रेग्मी वि. किरणराज शर्मा पौडेल**

पिता तोयनाथ दिने र लिने किरणराज शर्मा पौडेल भई मिति २०६८/०७/२८ मा पारित राजीनामा लिखतबाट भएको कि.नं.३३२० बाट कित्ताकाट भई कायम हुन आएको कि.नं.३५४७ को जग्गाको दुवैतर्फ मेरो कि.नं.३३१८ र ३३१९ को जग्गा पर्ने र सन्धिसर्पन पर्ने हकवाला भएको हुँदा हक निखनाई हकसफा गरी पाउन पुनरावेदन अदालत बाग्लुङबाट भएको फैसला बदर गरी सुरु अदालतबाट भएको फैसला सदर गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक / वादीको पुनरावेदन जिकिर रहेको देखियो । सो सम्बन्धमा हेर्दा, वादीले मुलुकी ऐन, लेनदेन व्यवहारको महलको ११नं. मा भएको कानूनी व्यवस्था र हद म्यादलाई आधार बनाई सुरु बाग्लुङ जिल्ला अदालतमा प्रस्तुत मुद्दा दिएको देखिन्छ । लेनदेन व्यवहारको ११ नं.बमोजिम कि.नं.३५४७ को जग्गा सन्धिसर्पन पर्ने हो वा नपर्ने हो भन्ने सम्बन्धमा सुरु अदालतबाट भई आएको नक्सा कुण्डली हेर्दा उत्तर न.नं. ३, कि.नं. ३३१८ को र दक्षिण नक्सा नं. १ कि.नं. ३३१९ को वादी ऋषिराम रेग्मीले अंशमा पाएको जग्गा देखिन आयो । यसैगरी यी दुई कित्ता जग्गाको बिचमा न.नं. २ का कि.नं. ३५५३, ३५५२, ३५५१ र ३५४७ रहेकोमा नक्सा कुण्डलीअनुसार न.नं. २ को पूर्वको कि.नं. ३५४७ प्रतिवादी किरणराज शर्माको र पश्चिमतर्फको कि.नं. ३५५३ यी नै वादीको रहेको पाइन्छ भने अन्य दुई

कित्ता जग्गा क्रमशः लोकराज रेग्मी र एकनाथ रेग्मीको देखिन आउँछ । नक्सा कुण्डलीअनुसार वादीले कित्ता नं. ३५४७ को जग्गा सन्धिसर्पन पर्छ भने तापनि नक्सा कुण्डलीअनुसार उक्त जग्गामात्र नभई सन्धिसर्पन पर्ने भए समान हैसियतका कि.नं.३५५१ र ३५५२ को जग्गासमेत सन्धिसर्पन पर्नुपर्नेमा यी वादीले उक्त जग्गाहरूमा सन्धिसर्पन पर्ने भनी दाबी लिएको देखिन आएन भने यी वादीका कित्ता नं. ३३१८ र ३३१९ का जग्गामा आवत जावत गर्न निजकै नाउँमा रहेका कित्ता नं. ३५५३ को जग्गासमेत रहेको देखिन्छ । **प्रतिवादीले बिक्री गरेको जग्गा प्रथमतः वादीको जग्गासँग साँध जोडिनुको साथै प्रतिवादीको उक्त जग्गा वादीको घरजग्गामा आवत जावत गर्न अवरोध एवं हावा, प्रकाश र उज्यालोको स्थितिमा छेकबार र पानीको निकास एवं सिँचाइको व्यवस्थापनमा असहज हुने अवस्था भएको हुन हुँदैन ।** यसरी वादीले दाबी लिएजस्तो कि.नं.३३१८ र ३३१९ को जग्गामा आवत जावत गर्न हली खेतला लैजान प्रतिवादी किरणराज शर्मा पौडेलले राजीनामा गरी लिएको कि.नं. ३५४७ को जग्गाको अलावा उत्तरतर्फ रहेको वादीकै नाउँको कि.नं. ३५५३ को जग्गाबाट कि.नं. ३३१८ र ३३१९ मा आवत जावत गर्न हली खेताला लैजान मिल्ने नै देखिने ।

प्रतिवादीले उक्त जग्गा विपक्षी वादीलाई सन्धिसर्पन पर्दैन भन्ने कुरा नक्साबाट समेत खण्डन भएको देखिन्छ । यसरी नक्सा कुण्डलीबाट कि.नं. ३५४७ को जग्गा वादीलाई सन्धिसर्पन नपर्ने देखिएबाट वादीका साक्षीहरूले गरेको बकपत्र र सर्जमिनका मानिसहरूको भनाइलाई समेत विश्वास गर्न सकिने अवस्था सुरु अदालतबाट भई आएको नक्सा मुचुल्काबाट नदेखिएकोले वादीको कि.नं. ३३१८ र ३३१९ मा आतेजाते गर्न निजकै नाउँमा रहेको कि.नं. ३५५३ बाट हुने अवस्था देखिएकोले वादीले कि.नं. ३५४७ को जग्गा निखन्न पाउने गरी सुरु बागलुङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०/१०/०९

मा भएको फैसला उल्टी हुने ठहरी वादी दाबी नपुग्ने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत बागलुङबाट मिति २०७२/०३/१३ मा भएको फैसला मनासिब नै देखिँदा अन्यथा गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिने ।

अतः विवेचित आधार, कारण र प्रमाणहरूसमेतबाट नक्सा मुचुल्काबाट वादीको कि.नं. ३३१८ र ३३१९ मा आतेजाते गर्न निज पुनरावेदक / वादी ऋषिराम रेग्मीकै नाउँमा रहेको कि.नं. ३५५३ बाट हुने अवस्था देखिई प्रतिवादीको कि.नं. ३५४७ को जग्गा वादीलाई सन्धिसर्पन नपर्ने देखिएबाट वादीले कि.नं. ३५४७ को जग्गा निखन्न पाउने गरी सुरु बागलुङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०/१०/०९ मा भएको फैसला उल्टी हुने ठहरी वादी दाबी नपुग्ने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत बागलुङबाट मिति २०७२/०३/१३ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७६ साल वैशाख १० गते रोज ३ शुभम् ।

**इजलास नं.१४**

१

**मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७४-CR-१०९२, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. छत्रबहादुर श्रेष्ठ**

प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठले वैदेशिक रोजगारका लागि प्रतिमहिना ७५० युरो दिलाइदिने गरी होटलको वेटरको काममा साइप्रस पठाइदिन्छु भनी खुमप्रसाद गुरुङबाट रु.८,५०,०००।-, प्रतिमहिना दुइदेखि तीन लाख नेपाली रुपैयाँ तलब दिलाइदिने गरी अष्ट्रेलियाको आइसल्यान्ड शहरको रिसोर्ट होटलको वेटर काममा पठाइदिन्छु भनी रामबहादुर भुजेलबाट रु.८,००,०००।-, र हरिबाबु अछामीबाट रु.१२,६५,०००।- बुझी लिई वैदेशिक रोजगारको

कसुर गरेको भनी जाहेरवालाहरू खुमप्रसाद गुरुङ, रामबहादुर भुजेल र हरिबाबु अछामीले संयुक्त जाहेरी दरखास्त दिएको देखिन्छ । जाहेरवाला खुमप्रसाद गुरुङबाहेकका अन्य जाहेरवालाहरू वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा उपस्थित भई आफ्नो जाहेरी बेहोराको पुष्टि हुने गरी बकपत्र गर्न सकेकोसमेत देखिएको छैन । प्रतिवादीलाई रकम बुझाएको लिखत प्रमाण छैन । पचास हजार रूपैयाँ मेखबहादुरलाई दिएको हुँ, मनमैजुको पुलमा देविका राइला नाम गरेकी महिलाको हातमा रकम दिएको हुँ । प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठलाई रकम दिएको होइन भनी जाहेरवालामध्येका खुमप्रसाद गुरुङले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बकपत्र गरेको देखिएको छ । निज जाहेरवाला खुमप्रसाद गुरुङले देविका राइला र मेखबहादुर गुरुङउपर जाहेरी दिएको वा निजहरूलाई रकम दिएको कुराको पुष्टि हुने कुनै लिखत प्रमाण पेस दाखिला गरेकोसमेत नदेखिने ।

विदेश रोजगारीका लागि मानिस पठाउने मान गुरुङ र मनोज अग्रवाललाई जाहेरवालाहरूसँग सम्पर्क गराई दिएकोसम्म स्वीकार गरी जाहेरवालाहरूबाट रकम लिएको तथ्यमा इन्कार रही अनुसन्धानको क्रममा प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठले बयान गरेको देखिएको छ । वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बयान गर्दासमेत निज प्रतिवादी आरोपित कसुरमा इन्कार रहेको देखिएको छ भने निजको उक्त इन्कारी बयान निजका साक्षीहरू शिवराज खनाल र सम्झना अधिकारीले प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठले वैदेशिक रोजगारमा पठाउन जाहेरवालाहरूबाट रकम लिएको र विदेश पठाएकोसमेत होइन भनी गरेको बकपत्रबाट समर्थन भएको देखिएको छ । स्पष्ट वतन नभएको भनी मान गुरुङ र मनोज अग्रवालउपर अभियोग दाबी लिएकोसमेत नदेखिने ।

जाहेरी दरखास्तबमोजिम प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठलाई रकम दिएको देखिने कुनै लिखत वा निस्सा प्रमाण पेस गर्न सकेको नदेखिएको,

वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणसमक्ष उपस्थित भई बकपत्र गर्ने स्वयम् जाहेरवाला खुमप्रसाद गुरुङले प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठलाई रकम दिएको होइन भनी आफ्नै जाहेरी दरखास्तको बेहोरा खण्डित हुने गरी बकपत्र गरेको देखिएको, अन्य जाहेरवालाहरू वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणसमक्ष उपस्थित भई आफ्नो जाहेरी बेहोराको पुष्टि हुने गरी बकपत्र गर्न सकेको नदेखिएकोसमेतका मिसिल संलग्न कागज प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठउपर लगाएको अभियोगदाबी वस्तुनिष्ठ तवरबाट पुष्टि गर्न सकेको नदेखिँदा वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहरी भएको फैसला अन्यथा रहेको भन्ने नदेखिने ।

प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठउपरको अभियोग दाबीलाई प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ बमोजिम अभियोजन पक्षले प्रमाणित गर्न नसकेको अवस्थामा बिना आधार प्रमाण प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठले वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ विपरीतको कसुर अपराध गरेकोले सोही ऐनको दफा ४३ बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने अभियोग मागदाबी पुग्न नसक्ने हुँदा प्रतिवादी छत्रबहादुर श्रेष्ठले आरोपित कसुरबाट सफाई पाउने ठहर्‍याई भएको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको मिति २०७३।१२।०८ को फैसला मनासिब देखिएकोले सदर हुने ठहर्ने ।

इजलास अधिकृत: ऋतबहादुर पुलामी मगर  
इति संवत् २०७६ साल भदौ ४ गते रोज ४ शुभम् ।  
यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०७४-CR-११६१, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. छत्रबहादुर श्रेष्ठ
- ०७४-CR-११६२, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. छत्रबहादुर श्रेष्ठसमेत
- ०७४-CR-११६३, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. छत्रबहादुर श्रेष्ठ

२

मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७२-CI-१५९४, दल दर्ता खारेज, प्रेमबहादुर सिंह वि. निर्वाचन आयोग, नेपाल

निर्वाचन आयोगको मिति २०७२।५।२५ मा गोरखापत्रमा प्रकाशित सूचनाको सूचना नं. २ मा निर्वाचन आयोग ऐन, २०६३ को दफा २४ को उपदफा (१) को खण्ड (ख) बमोजिम लगातार तीन वर्षसम्म प्रचलित कानूनबमोजिम आयोगलाई बुझाउनुपर्ने विवरण नबुझाएका राजनीतिक दलहरूलाई सूचना प्रकाशन भएको मितिले १५ दिनभित्र लिखित रूपमा आफ्नो भनाइ आयोगमा पेस गर्न भनी सार्वजनिक सूचना प्रकाशन भएको र उक्त सूचनाको सूचना नं. २ मा राजनीतिक दलको सूचीको सि.नं. १ मा यी पुनरावेदक समाजवादी जनता पार्टीको नामसमेत उल्लेख भएको देखिन्छ। यसरी सार्वजनिक जानकारीको लागि राष्ट्रिय स्तरको पत्रिकाबाट सूचना प्रकाशित भएको देखिँदा सो तथ्यलाई नजरअन्दाज गरी सुनुवाइको मौकाबाट वञ्चित गराइयो भन्ने पुनरावेदकको भनाइ तथ्ययुक्त नदेखिई मनासिबसमेत नदेखिने।

लोकतान्त्रिक बहुदलीय शासन व्यवस्थामा पारदर्शी र कानूनको पालनकर्ताको रूपमा रहनुपर्ने राजनीतिक दलले आय व्ययको वार्षिक प्रतिवेदन निर्वाचन आयोगमा बुझाउनुपर्ने कानूनी कर्तव्य भएकोमा निर्वाचन आयोगबाट पटकपटक प्रक्रियागत र कार्य विधिगत रूपमा समेत सार्वजनिक सूचना प्रकाशन गरी आफ्नो भनाइ राख्न पर्याप्त समय दिएकोमा, वार्षिक रूपमा के कति आम्दानी खर्च भयो सोसमेतको वार्षिक प्रतिवेदन निर्वाचन आयोगमा दर्ता भएका हरेक राजनीतिक दलले पेस गर्नुपर्नेमा त्यसतर्फको दायित्व र जवाफदेहिताबाट पुनरावेदक विमुख भएको भन्ने देखिने।

पुनरावेदकराजनीतिकदलले आफूले निर्वाचन

आयोगमा बुझाएको विवरण भनी पुनरावेदन पत्रसाथ पेस गरेको कागजातहरू हेर्दा समाजवादी जनतापार्टी (स.ज.पा) को च.नं.११५ मिति २०७२।११।२७ को आय व्यय विवरण पेस गरेकोसम्बन्धी पत्र निर्वाचन आयोगमा सोही दिन दर्ता नं. ४१८० मा दर्ता भएको देखिन आयो भने निर्वाचन आयोगले यी पुनरावेदक समाजवादी जनता पार्टीसमेतका १० वटा राजनीतिक दलको दर्ता खारेज गर्ने निर्णय मिति २०७२।११।२१ मा भई नेपाल राजपत्रमा मिति २०७२।११।२१ को अतिरिक्ताङ्कमा निर्वाचन आयोगको सूचना भनी दल दर्ता खारेज सम्बन्धमा सूचना प्रकाशनसमेत भएको पाइयो। यसरी कानूनबमोजिम राजपत्रमा समेत सूचना प्रकाशित भइसकेपश्चात् मात्र पुनरावेदक राजनीतिक दलले निर्वाचन आयोगमा आफ्नो आय व्ययको विवरण विलम्ब गरी बुझाएको देखिँदा निर्वाचन आयोगद्वारा प्रतिरक्षा र सुनुवाइको मौका दिइएन भन्ने पुनरावेदकको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

पुनरावेदकले आफ्नो दलको तीन वर्षदेखि आय व्ययको वार्षिक प्रतिवेदन कानूनले तोकी दिएको निर्वाचन आयोगमा बुझाएको नदेखिएको यस्तो अवस्थामा आयोगबाट मिति २०७२।५।२५ मा गोरखापत्रमा १५ दिने सार्वजनिक सूचना प्रकाशित गरी यी पुनरावेदकलाई आफ्नो भनाइ राख्ने मनासिब समय दिएको देखिएको र सम्पूर्ण कानूनी प्रक्रिया पूरा गरी मात्र मिति २०७२।११।२१ मा निर्वाचन आयोगले यी पुनरावेदक समाजवादी जनता पार्टीसमेतका दलहरूको दर्ता खारेज गरेको देखिएकोले निर्वाचन आयोग कान्तिपथ काठमाडौँबाट मिति २०७२।११।२१ मा गरेको दल दर्ता खारेजसम्बन्धी निर्णय मिलेकै देखिँदा उक्त निर्णय सदर हुने ठहर्ने।

इजलास अधिकृत: नरेन्द्रबहादुर बुढा

कम्प्युटर: सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०७६ साल माघ ५ गते रोज १ शुभम्।